विकास-पथ

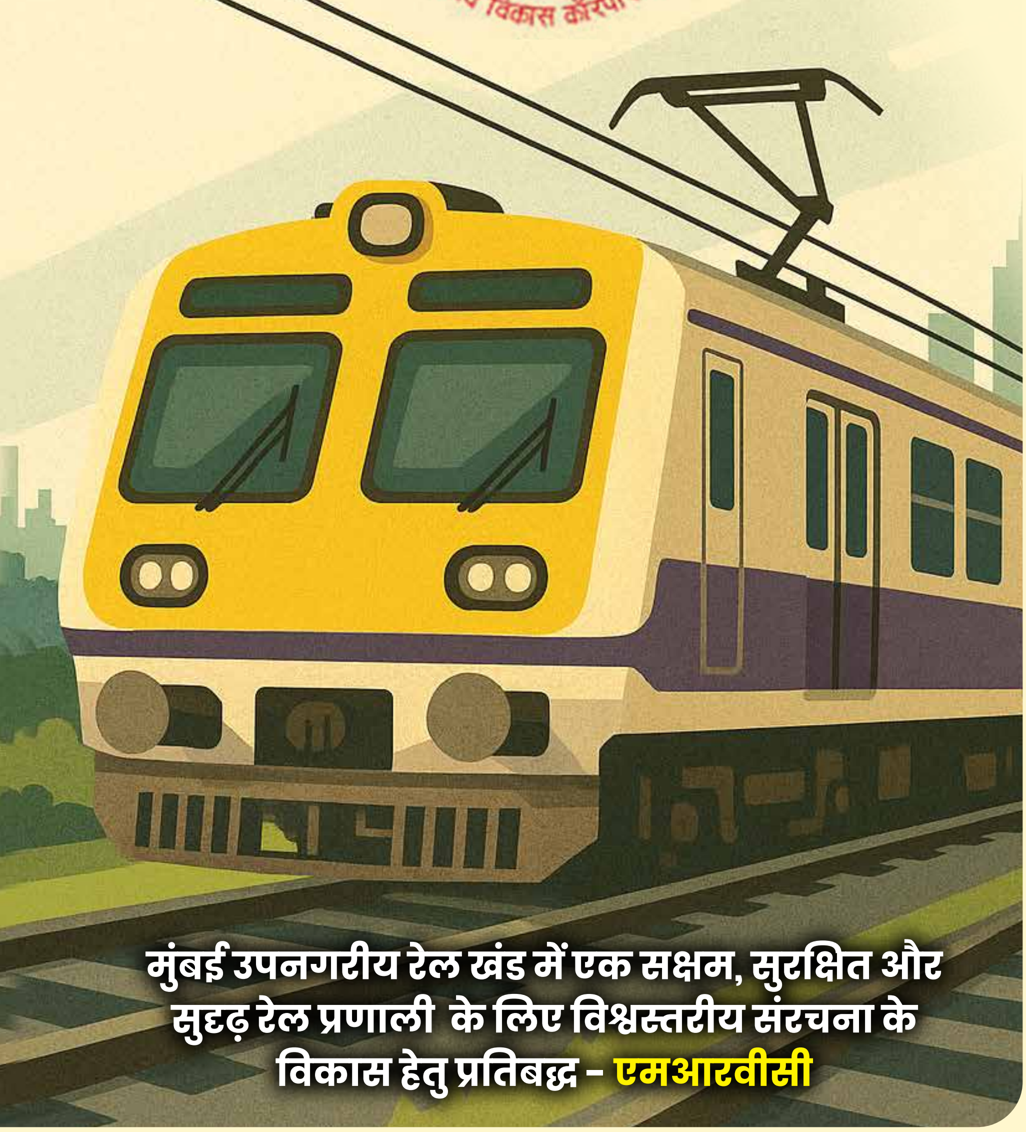

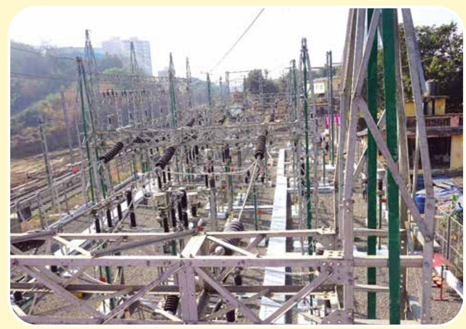

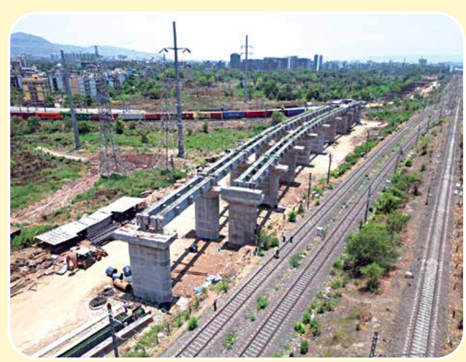

मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(रेल मंत्रालय का सार्वजनिक उपक्रम)

स्कैन करें।

अंक: 15 www.mrvc.indianrailways.gov.in वर्ष: 2025

अंक-15 वर्ष-2025

विकास-पथ

संरक्षक

श्री विलास सोपान वाडेकर
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

प्रधान संपादक

श्री दिनेश वशिष्ठ
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक

डॉ. सुशील कुमार शर्मा
राजभाषा अधिकारी

संपादन एवं विशेष सहयोग

एमआरवीसी के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी

प्रकाशक

मुंबई रेलवे विकास कॉरपोरेशन लिमिटेड
दूसरी मंजिल, चर्चगेट स्टेशन बिल्डिंग,
चर्चगेट, मुंबई - 400 020.
वेबसाईट: www.mrvc.gov.in

टिप्पणी:
पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं एवं लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण रचनाकारों के अपने हैं। जिसके लिए संपादक मंडल की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

अनुक्रमणिका

1. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश 1
2. निदेशक (परियोजना) का संबोधन 2
3. प्रधान संपादक की कलम से 3
4. संपादक के दो शब्द 4
5. हमारे नए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक 6
6. अपारदर्शिता से पारदर्शिता की ओर 7
7. शहरी क्षेत्रों में दीर्घकालिक पर्यावरण हितैषी परिवहन (ईएसटी) की अपेक्षा 10
8. इंद्रियों के माध्यम 12
9. माँ की कृपा का इंतजार 14
10. आलूबुखारे का पेड़ 15
11. नई पीढ़ी के ईएमयू रोलिंग स्टॉक के लिए उभरती प्रौद्योगिकियां 18
12. केरल के प्रमुख दर्शनीय स्थल 21
13. भारतीय विद्युत कर्षण प्रणाली के 100 वर्ष का गौरव पूर्ण इतिहास 23
14. कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी भाषा मॉडलों का भविष्य 26
15. कार्य-जीवन असंतुलन: कारण और समाधान / बसंत 29
16. स्थिरता का महत्व 31
17. सिंगरौली कोयला खदानों का भारत के विकास में योगदान 33
18. रूपकुंड- एक कंकाल झील 35
19. वह प्रेरणादायक व्यक्तित्व-मास्टर साहब 37
20. छुट्टी 38
21. आरोग्य और कल्याण शिविर के तहत इमेजिका की एक अविस्मरणीय यात्रा 39
22. राइडिंग द लद्दाख सर्किट: ए सोलो एडवेंचर ऑफ ट्रायम्फ एंड ट्रांसफॉर्मेशन 41
23. स्वास्थ्य: जीवन की कुंजी 43
24. सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति का सूत्रधार- इंटरनेट 45
25. एमआरवीसी की 2024-25 की विशिष्ट/प्रमुख उपलब्धियां 47
26. अतिथि 53
27. भारतीय कला का पारंपरिक रूप-मिथिला पेंटिंग 60
28. स्वस्थ जीवनशैली 62
29. जेम (GeM) के माध्यम से खरीदारी की प्रक्रिया 64
30. भारतीय रेल: भारत का परिवहन तंत्र 66
31. ज़िंदगी 69
32. एक डोली चली, एक अर्थी चली! / इन्कार का भाव 70
33. मोबाइल / क्षणिक व्यंग्य / पिता 71
34. वैश्विक अर्थव्यवस्था 72
35. अप्रत्याशित शत्रु 74
36. महाराष्ट्र का शनिशिंगणापुर मंदिर एक प्राचीन और चमत्कारिक पीठ 76
37. मुंबई शहर की संरक्षक-मुम्बा देवी 78
38. भारत में इंजीनियरिंग दिवस की परंपरा 80
39. आज के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा 81
40. पर्यावरण और संपोषी विकास 83
41. उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर: हमारा गोरखपुर 85
42. कोंकण की यात्रा: एक अद्भुत अनुभव 87
43. रेखाचित्र और कला 89
44. कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले कतिपय हिंदी-अंग्रेजी वाक्य 91
45. नीति-वचन 93
46. राजभाषा हिंदी के विकास के विभिन्न चरण 94
47. फ़ाइल पर लिखी जाने वाली कुछ टिप्पणियाँ 98
48. भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विभिन्न विभूतियों द्वारा व्यक्त विचार 99
49. राजभाषा के प्रयोग के लिए 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम 100

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

यह बहुत हर्ष का विषय है कि एमआरवीसी के राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक हिंदी पत्रिका "विकास-पथ" के 15वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका के प्रकाशन से एमआरवीसी के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित होने के साथ-साथ,उन्हें अपने विचार व्यक्त करने के लिए एक मंच भी मिलता है। मेरा विश्वास है कि "विकास-पथ" के इस अंक के प्रकाशन से एमआरवीसी के सभी कार्मिक अपने सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित होंगे।

भारतीय संविधान द्वारा एमआरवीसी को मुंबई उपनगरीय रेल प्रणाली को विस्तारित और सुदृढ़ बनाने के साथ-साथ राजभाषा को भी लागू करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। हिंदी, भारत के कई राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों की और भारत संघ की राजभाषा है। राजभाषा हिंदी भारत की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने में पूर्णतया समर्थ है। हिंदी का साहित्य काफी समृद्ध है और आम जनता हिंदी को अच्छी तरह समझती है तथा इसका प्रयोग भी करती है। एक भाषा के रूप में, हिंदी केवल भारत की पहचान नहीं है बल्कि भारत के जीवन मूल्यों, संस्कृति और संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में, आज राजभाषा हिंदी सभी संप्रेषण माध्यमों की महत्वपूर्ण माध्यम बन चुकी है।

मैं एमआरवीसी के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक के रूप में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील करना चाहूँगा कि राजभाषा नियमों के अनुसार आप सभी मदों में अधिक से अधिक कार्य राजभाषा में करें और राजभाषा के प्रचार- प्रसार एवं विकास में अपना विशेष योगदान दें। एमआरवीसी में राजभाषा को लागू करने के लिए गृह मंत्रालय तथा रेलवे बोर्ड की हिंदी प्रोत्साहन योजनाएं लागू हैं और इन योजनाओं में सम्मिलित होकर इन का लाभ अवश्य उठाएं।

पत्रिका "विकास-पथ" के सफल प्रकाशन के लिए इससे संबद्ध सभी कर्मियों को मैं बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका एमआरवीसी के सभी विभागों एवं अनुभागों में राजभाषा के प्रयोग का एक सकारात्मक वातावरण तैयार करेगी।

शुभकामनाओं सहित।

- विलास सोपान वाडेकर

निदेशक (परियोजना) का संबोधन

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन द्वारा हिंदी पत्रिका "विकास-पथ" का 15वाँ अंक प्रकाशित किया जा रहा है। यह पहल न केवल हमारी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का एक महत्वपूर्ण माध्यम है बल्कि यह भारतीय संस्कृति,सभ्यता और राष्ट्रीय एकता को भी सुदृढ़ करने में सहायता करती है। हिंदी,भारतीय उपमहाद्वीप की एक प्रमुख भाषा है और आज इसकी,एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और राष्ट्रीय धरोहर के रूप में पहचान है।

भारत, भाषाओं और संस्कृतियों की एक विशाल विविधता का देश है जहाँ विभिन्न भाषाएँ, बोलियाँ और संस्कृतियाँ एक साथ पनपती हैं। यद्यपि हिंदी ने अपने साहित्य, कला और संस्कृति के माध्यम से एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है परंतु भारतीय संविधान में इसे राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। राजभाषा हिंदी हमारे संविधान का एक महत्वपूर्ण भाग है जो न केवल हिंदी के महत्व को दर्शाता है बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि भारतीय नागरिक अपने कार्यकलापों में इसका प्रयोग करें,ताकि यह भाषा हमारे समाज में प्रभावी रूप से प्रचारित हो सके तथा अधिक प्रासंगिक हो सके।

वर्तमान में हिंदी का प्रयोग केवल साहित्य तक सीमित नहीं है बल्कि यह अब समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सूचना प्रौद्योगिकी और राजभाषा हिंदी के बीच एक गहरा संबंध स्थापित हो चुका है और यह दोनों एक-दूसरे पर निर्भर हो रहे हैं। जैसे-जैसे तकनीकी क्षेत्र में प्रगति हो रही है वैसे-वैसे जनसंचार के साधन और प्रशासनिक व्यवस्था में भी परिवर्तन हो रहे हैं। विशेषकर हिंदी का, तकनीकी, प्रशासनिक, वाणिज्यिक और जनसंचार के क्षेत्रों में उपयोग बढ़ रहा है जिससे विकास के नए रास्ते खुल रहे हैं। हिंदी का सही उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की प्रक्रिया को आसान और अधिक सुलभ बना रहा है जिससे समाज के प्रत्येक वर्ग को लाभ मिल रहा है।

आजकल इंटरनेट, कंप्यूटर और अन्य डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स के माध्यम से हिंदी का उपयोग बढ़ता जा रहा है। पहले जिन कार्यों को हिंदी में करने में बहुत कठिनाई होती थी, अब सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में उन कार्यों को बड़ी सरलता से हिंदी में किया जा सकता है। बाजार में उपलब्ध विभिन्न हिंदी ई-टूल्स और सॉफ़्टवेयरों ने इस प्रक्रिया को और भी सरल बना दिया है। इसके कारण अब कोई भी व्यक्ति, चाहे वह तकनीकी ज्ञान रखता हो या न रखता हो, हिंदी में अपने कार्य आसानी से कर सकता है।

"विकास-पथ" जैसी प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाएँ, राजभाषा हिंदी के प्रचार– प्रसार में महत्वपूर्ण एवं अहम योगदान दे रही हैं। यह पत्रिकाएँ न केवल हिंदी के प्रचार में सहायक हैं बल्कि यह उपक्रमों में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने विचार व्यक्त करने के लिए एक मंच भी प्रदान करती हैं। ऐसी हिंदी पत्रिकाएं समाज में सूचना और ज्ञान के आदान-प्रदान को भी प्रोत्साहित करती हैं। इस पत्रिका के माध्यम से हम हिंदी भाषा की महत्ता और उसके विभिन्न आयामों को उजागर करने में सफल हो रहे हैं।

मैं इस सफलता के लिए "विकास-पथ" से जुड़ी पूरी टीम को बधाई और शुभकानाएं देता हूँ जिन्होंने इसे संभव बनाया है। साथ ही, मैं इस पत्रिका के नए अंक की सफलता की कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में यह पत्रिका हिंदी भाषा को और अधिक सशक्त बनाएगी।

- राजीव कुमार श्रीवास्तव

प्रधान संपादक की कलम से

मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन की राजभाषा हिंदी पत्रिका "विकास-पथ" के 15वें अंक को हमारे सम्मानित और सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह पत्रिका न केवल एक प्रकाशन है बल्कि यह हमारे कॉर्पोरेशन में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसकी व्यावहारिक उपयोगिता को सशक्त बनाने का एक सशक्त माध्यम बन चुकी है। इसके नियमित प्रकाशन से कॉर्पोरेशन के अधिकारी और कर्मचारी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित हुए हैं, जिससे कार्यालयीन वातावरण में हिंदी के प्रति जागरूकता और उत्साह में वृद्धि हुई है।

कॉर्पोरेशन के सभी कर्मियों के सतत प्रयास, सक्रिय भागीदारी, आपसी सहयोग और समन्वय के कारण राजभाषा कार्य, रेलवे बोर्ड एवं भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार सुचारु रूप से संपन्न हो रहे हैं। इस के लिए मैं सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। राजभाषा में प्रशंसनीय कार्य करने के लिए, उपक्रमों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंबई ने भी मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन को राजभाषा शील्ड प्रदान की है।

कोई भी भाषा तभी सशक्त बनती है जब वह केवल व्यक्ति विशेष की अभिव्यक्ति का माध्यम न रहकर समाज और राष्ट्र की प्रगति में भी योगदान देती है। हिंदी, जो भारत में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है, इसी दिशा में एक सशक्त माध्यम है। हिंदी भाषा का व्याकरण बहुत वैज्ञानिक है, हिंदी के उच्चारण और लेखन में कोई भिन्नता नहीं है– जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। इसी कारण से यह भाषा संप्रेषण के लिए अत्यंत सरल, सहज और प्रभावशाली बन गई है।

राजभाषा हिंदी न केवल देश के करोड़ों लोगों के भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है बल्कि यह विभिन्न भाषाई समुदायों को जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी भी है। इसकी लचीली प्रकृति के कारण यह अन्य भाषाओं के शब्दों को भी आत्मसात कर लेती है जिससे यह और भी समृद्ध बनती जा रही है। हिंदी के माध्यम से हम देश की विविध संस्कृतियों के साथ-साथ वैश्विक संस्कृति से भी जुड़ सकते हैं। हिंदी, शासन और जनता के बीच सेतु बनकर कार्य कर सकती है जिससे प्रशासनिक कार्यों में पूर्ण पारदर्शिता और जनहित सुनिश्चित होगा।

संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करते हुए यह स्पष्ट किया था कि सभी सरकारी कार्य हिंदी में किए जाएं। इसी भावना के अनुरूप एमआरवीसी के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का यह दायित्व बनता है कि वे अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग करें। इससे न केवल राजभाषा नीति का प्रभावी क्रियान्वयन होगा बल्कि सरकार की जनहितकारी योजनाएं भी देश के प्रत्येक नागरिक तक पहुंच सकेंगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में उल्लिखित सभी लक्ष्यों की प्राप्ति हम सब मिलकर अवश्य कर सकेंगे।

भारत सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित है और एमआरवीसी इस दिशा में निरंतर प्रयासरत है। एमआरवीसी में समय-समय पर हिंदी सप्ताह,कार्यशालाएं,प्रशिक्षण,प्रतियोगिताएं, संगोष्ठियाँ और अन्य विभिन्न कार्यक्रमों को आयोजित करके राजभाषा का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

आज की डिजिटल दुनिया में लोग सूचनाएं मुख्यतः वेबसाइट्स के माध्यम से प्राप्त करते हैं। अतः यह आवश्यक है कि एमआरवीसी की वेबसाइट पर सभी विभागीय जानकारियाँ न केवल अंग्रेजी में बल्कि सरल एवं स्पष्ट हिंदी में भी उपलब्ध हों ताकि देश का प्रत्येक नागरिक सरकारी योजनाओं से लाभान्वित हो सके।

अंत में, मैं सभी पाठकों से अनुरोध करता हूँ कि "विकास-पथ" को और अधिक उपयोगी, रोचक और ज्ञानवर्धक बनाने हेतु अपने सुझाव और रचनात्मक विचार हमें अवश्य भेजें। आपके सुझाव हमें और बेहतर दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे।

– दिनेश वशिष्ठ

संपादक के दो शब्द

ना तीर चलाओ, ना तलवार संभालो,
जब हो मतभेद,तो कलम उठालो।

उपर्युक्त पंक्तियाँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से गूढ़ अर्थ लिए हुए हैं बल्कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। जब किसी कार्यालय, समाज, संस्था या उपक्रम को अपने विचार, गतिविधियाँ, उपलब्धियाँ और दृष्टिकोण जनमानस तक पहुँचाना होता है तब विभाग की पत्रिका, संवाद का सबसे प्रभावी माध्यम बनती है। हिंदी पत्रिकाएँ एवं हिंदी साहित्यिक मंच, उस विचारधारा के वाहक बनते हैं जो विकास, समन्वय और पारदर्शिता की दिशा में किसी भी कार्यालय या संस्था को अग्रसर करते हैं।

वार्षिक हिंदी पत्रिका “विकास-पथ” का यह 15 वाँ अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। इस अंक का संपादन करने का सौभाग्य मुझे तीसरी बार प्राप्त हुआ है। यह मेरे लिए व्यक्तिगत और व्यावसायिक रूप से एक गर्व का विषय है। यह पत्रिका न केवल मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन द्वारा निष्पादित किए जा रहे विविध प्रकार के कार्यों को प्रदर्शित करती है बल्कि यह कॉर्पोरेशन के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की रचनात्मकता, संवेदनशीलता और विचारशीलता को भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती है।

“विकास-पथ" के इस अंक में जहाँ एक ओर तकनीकी लेखों, कविताओं और लघु रचनाओं को स्थान दिया गया है वहीं दूसरी ओर वर्ष 2024-25 के दौरान एमआरवीसी द्वारा आयोजित विविध गतिविधियों को भी समाहित किया गया है। यह अंक हमारे विभागीय जीवन का एक जीवंत दस्तावेज है जिसमें न केवल निगम की कार्यशैली और प्रयासों की झलक मिलती है बल्कि यह हमारे सहयोगियों की प्रतिबद्धता और समर्पण को भी उजागर करता है। "विकास-पथ" न केवल एमआरवीसी की एक पत्रिका है बल्कि यह हमारे विकास की यात्रा का एक सशक्त दस्तावेज है जो हमें हमारे अतीत से जोड़ता है, वर्तमान की समझ देता है और भविष्य के पथ को आलोकित करता है।

हमारा देश एक बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक और लोकतांत्रिक देश है। यहाँ प्रत्येक भाषा को उसकी गरिमा के अनुसार सम्मान प्राप्त है। इसी भावना के अनुरूप भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। भारत के लोकतंत्र की यही सुंदरता है कि वह प्रत्येक भाषा-भाषी एवं प्रत्येक समुदाय को समान दृष्टि से देखता है। हिंदी को बढ़ावा देना और अपने कार्यों में इसका अधिकतम उपयोग करना केवल एक संवैधानिक दायित्व नहीं बल्कि यह हमारा सांस्कृतिक दायित्व भी है।

हिंदी भाषा की प्रकृति बहती नदी की जलधारा के समान सहज और प्रवाहशील है। यह न केवल संवाद का माध्यम है बल्कि यह भारतीयों के विचारों, संवेदनाओं और मूल्यों की भी अभिव्यक्ति है। कोई भी व्यक्ति अपनी मातृभाषा या अपनी सहज भाषा में अधिक आत्मीयता से सोच सकता है और लिख सकता है। यह तथ्य कार्यालयीन कार्यों में भी लागू होता है। जब कोई कर्मचारी हिंदी में कार्य करता है तो न केवल उसका आत्मविश्वास बढ़ता है बल्कि वह अपने विचारों को अधिक स्पष्टता और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सकता है।

मैं इस अवसर पर उन सभी रचनाकारों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने अपनी मौलिक, रोचक और सार्थक रचनाएँ भेजकर इस अंक को समृद्ध बनाया है। रचनाकारों के लेख न केवल पठनीय हैं बल्कि संग्रहणीय भी हैं जो निश्चित ही पाठकों को आकर्षित करेंगे और उन्हें साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध करेंगे।

भविष्य में "विकास-पथ" को और अधिक उपयोगी, प्रेरक और जानकारीपूर्ण बनाने की दिशा में हम सभी निरंतर प्रयासरत रहेंगे। इस उद्देश्य की प्राप्ति में पाठकों की सहभागिता और सुझाव अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। मैं सभी पाठकों से निवेदन करता हूँ कि वे इस पत्रिका को पढ़ें, विचार करें और अपने बहुमूल्य सुझाव अवश्य भेजें। आपके विचार ही हमारी दिशा को और स्पष्ट करेंगे और हमारे प्रयासों को नई ऊर्जा प्रदान करेंगे।

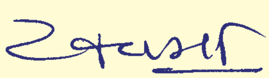

– डॉ. सुशील कुमार शर्मा

हमारे नए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

श्री विलास सोपान वाडेकर ने 01 फरवरी 2025 को मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन लिमिटेड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण किया। श्री वाडेकर भारतीय रेल इंजीनियरिंग सेवा के 1991 बैच के एक वरिष्ठ और अनुभवी अधिकारी हैं। इससे पहले हमारे वर्तमान अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक एमआरवीसी में ही निदेशक (तकनीकी) के रूप में कार्यरत थे और उनके नेतृत्व में कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं को निष्पादित किया गया।

श्री विलास सोपान वाडेकर की शैक्षणिक पृष्ठभूमि भी बहुत उत्कृष्ट रही है। उन्होंने अमरावती विश्वविद्यालय से सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की और अपनी कक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त किया। उनकी उत्कृष्टता के लिए उन्हें तीन स्वर्ण पदक भी प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने सिविल-स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग में प्रथम श्रेणी के साथ स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की है, जिससे उनकी तकनीकी दक्षता और अध्यनशीलता का प्रमाण मिलता है।

श्री वाडेकर ने लगभग 30 वर्षों से अधिक के अपने करियर में भारतीय रेलवे और इसके सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है। इस अवधि में उन्होंने परियोजना नियोजन, खरीद, संचालन और प्रशासन जैसे विविध क्षेत्रों में कई प्रशंसनीय कार्य किए। उन्होंने रेलवे की कई महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक परियोजनाओं में अपनी विशिष्ट भूमिका निभाई है, जिनमें संरचना निर्माण, विद्युतीकरण, सिग्नलिंग और संचार प्रणालियाँ हैं। उनके इस तकनीकी अनुभव और नेतृत्व कौशलता को देखते हुए, भारत सरकार ने वर्ष 2019 में उन्हें संयुक्त सचिव स्तर पर सूचीबद्ध किया था, जो उनकी क्षमता और योग्यता का जीवंत उदाहरण है।

हमारे नए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का मुंबई उपनगरीय रेलवे नेटवर्क के क्षेत्र में भी अत्यंत सराहनीय योगदान रहा है। उन्होंने 15 से अधिक वर्षों तक इस नेटवर्क की परियोजनाओं में अपनी सेवाएं दी हैं। उन्होंने विशेष रूप से सिविल, इलेक्ट्रिकल, सिग्नलिंग और दूरसंचार से संबंधित कार्यों में विशेष भूमिका निभाई है। उनकी रणनीतिक सोच और नेतृत्व ने इन परियोजनाओं को समयबद्ध और प्रभावी ढंग से पूरा करने में सहायता प्रदान की। यह अपेक्षा की जा रही है कि उनके नेतृत्व में एमआरवीसी अपने मिशन को और अधिक गति देगा, जिससे मुंबई का उपनगरीय रेलवे नेटवर्क और अधिक आधुनिक और कुशल बन सकेगा।

उनके कार्यकाल के दौरान कुछ प्रमुख परियोजनाओं का सफल निष्पादन किया गया है, जिनमें ठाणे-दिवा पांचवीं और छठी रेल लाइनों का विकास शामिल है। यह परियोजना उपनगरीय नेटवर्क में एक लंबे समय से चली आ रही कमी को दूर करती है और यात्रियों के लिए यात्रा को और अधिक सुगम तथा आरामदायक बनाती है। इसके साथ ही, उन्होंने उधना-जलगांव रेल खंड के दोहरीकरण और विद्युतीकरण का भी सफल नेतृत्व किया, जिससे इस क्षेत्र में कनेक्टिविटी और संचालन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

श्री विलास वाडेकर की छवि एक दूरदर्शी और नवाचारशील अधिकारी के रूप में है। मुंबईकरों को पूर्ण विश्वास है कि उनके नेतृत्व में एमआरवीसी, नई ऊँचाइयों के शिखर पर पहुंचेगा और मुंबई के करोड़ों रेल यात्रियों को एक बेहतर, सुरक्षित और सुविधाजनक सेवा उपलब्ध कराने की दिशा में अग्रसर होगा । यह भी आशा है कि हमारे नए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के नेतृत्व से कॉर्पोरेशन को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने और रेलवे के आधारभूत ढांचे को और सुदृढ़ करने की प्रेरणा मिलेगी।

अपारदर्शिता से पारदर्शिता की ओर

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में हमेशा की तरह आज सुबह भी रेलगाड़ियां आ- जा रही होंगी। बिसपुर और पेंड्रा रोड के बीच शायद वही स्टेशन स्टाफ, वही पॉइंट्समेन, ड्राइवर-गार्ड, गेटमेन और वही ट्रैकमैन ड्यूटी कर रहे होंगे जिनको मैंने रेलगाड़ी की खिड़की से कभी- कभार आते-जाते देखा था। हो सकता है कुछ लोग रिटायर हो गए हों, संभव है कुछ नए लोग आ गए हों। ज़ोनल रेल मुख्यालय परिसर में चहल- पहल होगी। अधिकारी और स्टाफ, मार्च के टारगेट को चिड़िया की आँख जैसे देख रहे होंगे। देखना भी चाहिए, बड़ा अहम रेलवे है, एस ई सी आर। भारतीय रेल के लिए भी, भारतवर्ष के लिए भी। कितनी मालगाड़ियां इस रेलवे के माध्यम से टनों माल इधर से उधर ले जाती हैं। कितने लोग कितनी मेहनत से इन गाड़ियों को चलाते हैं किसे मालूम? गेवरा और कोरबा में बैठे रेलवे स्टाफ के प्राचीन कालीन कंप्यूटरों पर जमी कोल डस्ट किसने देखी ? स्वयं मुझे भी कहाँ पता था कि साल और महुआ के पेड़ों पर विराजमान खनिज की पर्त, ट्रकों के बोझ से खुदी हुई सड़कें, अमरकंटक के रास्ते पर प्लास्टिक के थैलों से खेलते बन्दर, इस अव्यवस्थापूर्ण माहौल में शांत, अविरल बहती नर्मदा, और प्रमुख लेखा अधिकारी एस ई सी आर का दफ्तर मेरे मानस पटल पर इतनी गहरी छाप छोड़ेगा कि एक दिन मुझे कलम उठानी पड़ेगी।

मैं वह दिन याद करती हूँ जो मेरे बिलासपुर के कार्यकाल का अंतिम दिन था। रोज़ सुबह की तरह मैं दफ्तर आकर बैठ गई थी। मेरे सामने कंप्यूटर स्क्रीन थी। मैंने आते ही साथ अपने लेखा विभाग सहकर्मियों को अपना हैंडिंग ओवर नोट ईमेल से भेजा था। साथ ही कुछ संलग्नक भेजे थे। पिछले चार महीनों में इस रेलवे को जितना भी समझ पाई थी उसका सार थे ये संलग्नक। इनके भीतर वो मसले थे जिन्हें निगरानी की ज़रुरत थी। इन मसलों को मैं मंझधार में छोड़ कर नहीं जाना चाहती थी। मेरे अन्दर की गृहिणी और माँ इन मामलों को सुलझा देना चाहती थी, पूरे घर को झाड़ू और पोंछे से साफ़ कर देना चाहती थी, फूलों से सजा देना चाहती थी। पर इतना आसान नहीं होता इस घर को साफ़ कर देना। कैसा घर है यह? इसका उत्तर देने के लिए तो मुझे बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास 'आनन्दमठ' की सहायता लेनी पड़ेगी। उपन्यास का पात्र भवानन्द अपने साथी महेन्द्र के साथ एक निर्जन वन से गुजर रहा है। भवानन्द गाता है:-

वन्दे मातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलाम् मातरम्।
महेन्द्र पूछता है - माता कौन?
भवानन्द गाता है -
शुभ्र ज्योत्सनाम् पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम्।

महेन्द्र कहता है - यह तो देश है, मां नहीं। भवानन्द कहता है - हमारी न कोई मां है, न बाप, न भाई, न पत्नी, न घर-द्वार, केवल सुजला सुफला मलयजशीतला, शस्य श्यामला...

भवानन्द की भारत माता और मेरे जैसे लाखों रेलकर्मियों की भारतीय रेल के बीच कोई अंतर नहीं। हमारी न माँ, न बाप, न घर-द्वार, न ठौर ठिकाना, बस रेलगाड़ी रेलगाड़ी छुक छुक छुक छुक छुक छुक छुक छुक. नैनपुर अधिकारी रेस्ट हाउस के बाहर लगी शिला पर सच लिखा है- सब धर्मो का मेल, हमारी भारतीय रेल। पिछले पैंतीस सालों से मैं भारतीय रेल के लेखा विभाग में काम करती आई हूँ। भारतीय रेल की नौकरी ने मुझे न केवल एक बेहतरीन ज़िन्दगी दी है, साथ ही देश और दुनिया को देखने और समझने का नज़रिया भी दिया है। परंतु इस नज़रिये की वजह से मुझे बड़ी बेचैनी रहती है। जब मैं सुबह के अख़बार में पढ़ती हूँ कि देश में मोटरकार की बिक्री में लगातार बढ़त हो रही है तो मुझे टीस उठती है कि शायद इस बढ़त के पीछे भारतीय रेल का,यात्री गाड़ियां चलाने की क्षमता में पर्याप्त वृद्धि न कर पाना है। मर्सिडीज़ बेंज के सी ई ओ का कथन कि तीन साल में भारतवर्ष उनके तीन सबसे बड़े बाज़ारों में गिना जायेगा, मुझे आश्चर्यचकित कर देता है। कितना आत्मविश्वास है इन लोगों में जो हमारे शहरों की खचाखच भरी सड़कों पर अपनी लक्ज़री गाड़ियाँ दौड़ाने का मंसूबा रखते हैं। हम रेलकर्मियों के भीतर यह मंसूबा या ऐसा संकल्प या आत्मविश्वास क्यों नहीं है?

पाठकगण मुझे गलत न समझें। मुझे लेम्बोर्गिनी और मर्सिडीज़ गाड़ियों से कोई शिकायत नहीं है और न ही मारुति के सदाबहार प्रदर्शन के प्रति कोई दुर्भावना है। केवल इस बात की हैरानी है कि एक सौ सत्तर साल की विरासत जैसी हैसियत रखने वाला संगठन जो कि इंडियन रेलवे के नाम से जाना जाता है जो रोज़ाना ढाई करोड़ लोगों और चालीस लाख टन माल - सामान अपने गंतव्य तक पहुंचाता है और इस सारी आवा-जाही में पर्यावरण को कोई नुक्सान नहीं पहुंचाता, फैशनेबुल क्यों नहीं है? देश की जनता हवाई अड्डों की ओर क्यों उमड़ रही है? इंडिगो की बैलेंस शीट हैडलाइन न्यूज़ है लेकिन रेलवे की बैलेंस शीट दो साल पीछे क्यों चलती है और जब छपती भी है तो अख़बारों में क्यों नहीं दिखती? क्या रेलवे का घाटा - लाभ चर्चा का विषय नहीं होना चाहिए?

रेलवे के घाटे - लाभ में मेरी रुचि के आधार पर और लेखा विभाग में बिताए अपने साढ़े तीन दशकों के अनुभव के आधार पर जो समस्याएं मुझे बुनियादी लगीं और उनके विषय में अपने एम आर वी सी कार्य काल में मैंने अपनी टीम के साथ जो कुछ किया उसे सामने रखने की कोशिश करती हूँ।

1. रिपोर्ट मानकीकरण की आवश्यकता – अर्थात ऐसी रिपोर्ट जो सिस्टम के माध्यम से किसी भी समय आधिकारिक रूप से लॉगिन रखने वाले किसी भी व्यक्ति द्वारा निकाली जा सके।

मार्च 2023 तक हमारे कार्यायल में टैली अकाउंट सिस्टम का चलन था जो कि अपने आप में काफी कुशल था; कमी थी तो इतनी कि बस इससे पारदर्शी ऑडिट ट्रेल और मैनेजमेंट रिपोर्टिंग नहीं मिल पाती थी। चूँकि अभी तक कंपनी का वार्षिक खर्च हज़ार- डेढ़ हज़ार के आसपास था तो टैली से काम चल रहा था परंतु अब जब कंपनी के हाथ में एम् यू टी पी-3 और 3ए जैसे बड़े- बड़े काम थे, हमें एक उत्कृष्ट सिस्टम की ज़रुरत महसूस हो रही थी। एक अप्रैल 2023 में एम आर वी सी के लेखा विभाग ने लेखा कार्य के लिए एक आई टी सिस्टम का उपयोग आरम्भ किया। नए सिस्टम की सहायता से हम न केवल ऐसी रिपोर्टें निकालने लगे जोकि लेखा विभाग के आतंरिक कार्य में सहायक सिद्ध हुई बल्कि ऐसी रिपोर्टें भी निकालने लगे जोकि उच्च मैनेजमेंट को बजट और व्यय के बारे में नित्य आधार पर अवगत रख सकें। उदाहरण के लिए -

कैपिटल वर्क्स पर किए गए खर्चे की संक्षिप्त स्थिति

24/01/2025

मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन लिमिटेड / Mumbai Railway Vikas Corporation Limited

Project Expenditure Statement - MUTP - Summary

(Rs in Thousand)

Sr. No.	Projects	Sanctioned Cost	Exp till Mar 24	BG 2025	RE 2025	Exp till Dec 24	Exp in Jan 25	Cum Exp 2025	Total Cum Exp
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	MUTP II	8,08,71,100.00	7,11,05,461.51	14,00,000.00	22,23,400.00	15,32,827.32	0.00	15,32,827.32	7,26,38,288.83
2	MUTP IIC	78,95,500.00	77,32,975.89	200.00	61,600.00	10,462.31	0.00	10,462.31	77,43,438.20
3	MUTP III	10,94,70,000.00	3,29,30,178.56	1,45,14,640.00	1,40,73,500.00	77,74,492.12	24,218.95	77,98,711.07	4,07,28,889.63
4	MUTP IIIA	33,69,00,000.00	81,20,584.70	79,35,230.00	1,53,21,900.00	78,49,911.32	3,30,173.53	81,80,084.85	1,63,00,669.55
5	Deposit Works	87,85,998.53	39,79,104.08	200.00	0.00	7,65,962.51	118.96	7,66,081.47	47,45,185.55
6	MRVC Surplus Works	14,89,407.77	17,43,121.22	0.00	0.00	90,785.72	0.00	90,785.72	18,33,906.94
	Total Amount	54,54,12,006.30	12,56,11,425.96	2,38,50,270.00	3,16,80,400.00	1,80,24,441.30	3,54,511.44	1,83,78,952.74	14,39,90,378.70

एम यू टी पी वाइज़, प्रोजेक्ट वाइज़ स्थिति

Sr. No.	Project	Sanctioned Cost	Exp till Mar 24	BG 2025	RE 2025	Exp till Dec 24	Exp in Jan 25	Cum Exp 2025	Total Cum Exp
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	Quadrupling of the Virar-Dahanu Road	3,57,80,000.00	99,49,473.15	54,04,703.10	60,99,700.00	35,43,818.19	- 1,23,089.25	34,20,728.94	1,33,70,202.09
A	Quadrupling of the Virar-Dahanu Road	3,57,80,000.00	99,16,579.98	54,04,703.10	60,99,700.00	35,32,622.17	- 1,23,089.25	34,09,532.92	1,33,26,112.90
B	VR-ST Sect. Ext. of Subway RD-Quad. VR-DRD-WR	0.00	32,893.17	0.00	0.00	11,196.02	0.00	11,196.02	44,089.19
2	New suburban Railway corridor Panvel-Karjat (double line)	2,78,20,000.00	1,58,38,273.20	77,44,764.43	65,25,900.00	34,06,924.45	1,34,406.12	35,41,330.57	1,93,79,603.77
A	New suburban Railway corridor Panvel-Karjat (double line)	2,78,20,000.00	1,50,77,870.38	77,44,764.43	65,25,900.00	34,06,924.45	1,34,406.12	35,41,330.57	1,86,19,200.95
B	Augmentation of Wheel Shop at Matunga Workshop (CR)	0.00	7,60,402.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7,60,402.82
3	New suburban corridor link between Airoli-Kalwa (elevated)	47,60,000.00	22,21,526.68	5,16,184.21	61,600.00	1,09,906.95	1,727.86	1,11,634.81	23,33,161.49
4	Procuremnet of Rolling Stock (565 coaches)	3,49,10,000.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
5	Technical Assistance	6,90,000.00	4,56,355.25	0.00	1,21,800.00	72,978.85	6,958.40	79,937.25	5,36,292.50
6	Trespass control on mid-section	55,10,000.00	44,64,550.31	8,48,988.27	12,64,500.00	6,40,863.68	4,215.82	6,45,079.50	51,09,629.81
A	Trespass control on mid-section	55,10,000.00	36,80,346.88	8,48,988.27	12,64,500.00	5,75,643.15	4,215.82	5,79,858.97	42,60,205.85
B	Const of FOB at North End Virar Station (Km 60/4-6)-WR	0.00	25,502.07	0.00	0.00	40,563.00	0.00	40,563.00	66,065.07
C	Const of New RCC B/wall & MS Fancing of Wall-TPC-WR	0.00	1,10,159.35	0.00	0.00	1,122.13	0.00	1,122.13	1,11,281.48
D	Const of RCC B/wall for Mid Sec TPC III-CR	0.00	4,72,331.38	0.00	0.00	22,848.39	0.00	22,848.39	4,95,179.77
E	OHE Mod.Rplcemt Ohe Struc Cst-Kyn-Kjt,Cst-Pnl,Tna-V-CR	0.00	1,76,210.63	0.00	0.00	687.01	0.00	687.01	1,76,897.64
	Total MUTP III	10,94,70,000.00	3,29,30,178.59	1,45,14,640.01	1,40,73,500.00	77,74,492.12	24,218.95	77,98,711.07	4,07,28,889.66

विचाराधीन बिल रिपोर्ट

Date of Report :27/01/2025

मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन लिमिटेड / **Mumbai Railway Vikas Corporation Limited**

Bill Pending Report (Accounts)

Unit: All Units

Bill Certified From Date : 01/01/2025 To Date : 24/01/2025

Sr. No.	Party Name	Unit	Profit Center	Taxable Amount (Rs)	Net Payable (Rs)	Certify Date	Verify Date	Abstracted/ Approved Date	Status
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	FINER EDGE	MUTP IIIA	Station Improvement under MUTP-3A	4,26,195.00	4,51,766.00	22/01/2025	23/01/2025	23/01/2025	Approved
2	Shrikrishna Ramadhar Mishra - SSE Consultancy	SFW	MRVC Corporate Office	44,900.00	52,400.00	23/01/2025	-	-	Certified
3	K SREEVALSALAN NAIR - PS CONSULTANCY	SFW	MRVC Corporate Office	47,600.00	47,600.00	23/01/2025	-	-	Certified
4	Sankalp Industrial Services	MUTP III	Trespass control on mid-section	19,87,254.80	20,73,698.00	23/01/2025	23/01/2025	-	Verified
5	ARUMUGAM VENKATACHALAM - PERSONAL SECRETARY CONSULTANCY	SFW	MRVC Corporate Office	53,100.00	53,100.00	23/01/2025	-	-	Certified
6	C David Jebakumar - Chief Office Superintendent Personnel - Consultancy	SFW	MRVC Corporate Office	44,900.00	45,500.00	23/01/2025	-	-	Certified
7	DEVISHANKAR YADAV - SSE CONSULTANCY	SFW	MRVC Corporate Office	44,900.00	52,400.00	23/01/2025	-	-	Certified
8	GAVRAM TABAJEE DAREKAR - SSE CONSULTANCY	SFW	MRVC Corporate Office	44,900.00	52,400.00	23/01/2025	-	-	Certified

इन रिपोर्टों के माध्यम से पिछले एक वर्ष में एम आर वी सी के लेखा विभाग में शीघ्रता और पारदर्शिता स्वयं आ गई है। लोगों का समय अब रिपोर्ट तैयार करने में कम से कम लगता है क्योंकि अधिकतर रिपोर्टें सिस्टम से निकलती हैं।

2. आई टी प्रभुत्व माहौल और स्टाफ ट्रेनिंग की आवश्यकता

वित्त और लेखा जैसे तकनीकी विभाग का असली उद्देश्य प्रबंधन को ऐसी सूचना और रिपोर्टें देना है जिनके आधार पर सामयिक रूप से रेलवे के लिए सही और लाभकारी निर्णय लिए जा सकें। कुशल स्टाफ और ई आर पी की सहायता से लेखा विभाग की कार्यक्षमता में बहुत अंतर लाया जा सकता है। हमारे विभाग के अधिकतर कार्य ऐसे हैं जिनमें ऑटोमेशन लाने से काम जल्दी और बिना गलती के किया जा सकता है।

किसी नए सिस्टम को अमल में लाना शायद सभी जगह कठिन होता होगा परंतु एम आर वी सी के लेखा विभाग में जिस तरह की अड़चनें सामने आईं उनका विवरण करना कठिन है। सबसे पहली अड़चन तो यह थी कि हमारा स्टाफ इस काम के विरुद्ध था।

स्टाफ के लिए टैली में काम करना आसान था जबकि नए सिस्टम को समझने में उन्हें समय लग रहा था। स्टाफ को अलग-अलग बैठा कर उनके विशेष रोल में ट्रेनिंग देना, फिर साथ बैठा कर एक दूसरे के काम में सामंजस्य की आवश्यकता समझाना और उनकी कठिनाइयों को उनके पास जा कर समझना हमारी सबसे बड़ी चुनौती थी।

इस यज्ञ में हमारे उपमुख्य वित्त सलाहकार श्री जी. आर. सिंह और सहायक लेखा अधिकारी श्री ज्योतींद्र परमार का सबसे बड़ा योगदान रहा जिन्होंने दिन-रात एक करके नए सिस्टम को स्टाफ के बीच सफल बनाया।

एक बड़ी कठिनाई यह भी थी कि कोंकण रेलवे द्वारा बनाये गए इस सिस्टम में कई एक ऐसी कमियां थीं जिन्हें ठीक कराने में हमारा अधिकांश समय जा रहा था।

ऐसे भी कई मौके आये जब मुझे लगा कि शायद हमें पुराने सिस्टम की ओर फिर जाना पड़े। जब पूरा एक साल ख़त्म होने को आ गया और स्टाफ की परेशानियां कम होती नहीं दिखीं तो मैं अपनी शिकायतों का पिटारा लेकर स्वयं कोंकण रेलवे के मुख्यालय गयी।

कोंकण ने वादा किया कि हमारी ज़रूरतें पूरी की जाएँगी। मेरे इस नोट को लिखते समय तक कई काम कर दिये गए हैं और बची-खुची चीज़ों पर काम चल रहा है।

सबसे बड़ी अड़चन यह थी कि अपने नए सिस्टम के माध्यम से हम अपने सहकर्मियों के बीच एक आई टी- सोच पैदा करना चाहते थे। यह कहना कठिन है कि हम इस मिशन में सफल रहे या नहीं पर यह कहा जा सकता है कि लेखा विभाग के स्टाफ को शनिवार के दिन दफ्तर आते अब कम देखा जाता है।

यानि कि हमारा अधिकतर काम दैनिक और नियमित रूप से होने लगा है। आगामी समय में और अधिक कार्यकुशलता की अपेक्षा की जा सकती है।

- स्मृति वर्मा

पूर्व निदेशक / वित्त

शहरी क्षेत्रों में दीर्घकालिक पर्यावरण हितैषी परिवहन (ईएसटी) की अपेक्षा

जैसे-जैसे शहरीकरण विश्व स्तर पर तेजी से बढ़ रहा है, शहरों को परिवहन से संबंधित बढ़ती चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यातायात की भीड़, वायु प्रदूषण और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, उन मुद्दों पर विचार करने के लिए विवश कर रहे हैं जिनके लिए पर्यावरणीय रूप से दीर्घकालिक परिवहन की ओर बदलाव की आवश्यकता है। शहरी क्षेत्रों में दीर्घकालिक परिवहन में गतिशीलता और पहुंच को बढ़ाते हुए पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने के उद्देश्य से कई रणनीतियों और प्रौद्योगिकियों को शामिल किया गया है।

संयुक्त राष्ट्र के स्तर पर जलवायु नियंत्रण रखने और हरी-भरी धरती को बनाए रखने के प्रयास चल रहे हैं। हाल ही में, मुझे दीर्घकालिक पर्यावरण हितैषी परिवहन (ईएसटी) के लिए देशों को बढ़ावा देने और उनकी मदद करने के लिए मनीला दिसंबर 2024 में एशिया के लिए पर्यावरण की दृष्टि से दीर्घकालिक परिवहन फोरम में भाग लेने का अवसर मिला। इस मंच पर पर्यावरण हितैषी दीर्घकालिक परिवहन से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर व्यापक विचार-विमर्श हुआ।

पर्यावरण हितैषी दीर्घकालिक परिवहन का महत्व-

यदि हम शहरों में आज के बुनियादी ढांचे और परिवहन को देखते हैं, तो शहरी परिवहन प्रणाली,पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। अंतरराष्ट्रीय परिवहन मंच ने आकलन किया है कि शहरी परिवहन में ईंधन दहन से वैश्विक CO_2 उत्सर्जन का लगभग 24% है। शहरों में, निजी वाहन,परिवहन प्रणालियों पर हावी हैं, जिससे भीड़ और वायु प्रदूषण बढ़ जाता है। दीर्घकालिक परिवहन को अपनाने से इन प्रभावों को कम करने में मदद मिल सकती है, स्वच्छ हवा में योगदान हो सकता है, कार्बन फुटप्रिंट कम हो सकते हैं और सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है।

पर्यावरण हितैषी दीर्घकालिक परिवहन के लाभ:

1. **ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी:** दीर्घकालिक परिवहन समाधान, जैसे सार्वजनिक परिवहन और गैर-मोटर चालित विकल्प जैसे साइकिल चलाना और पैदल चलना, पारंपरिक वाहनों की तुलना में प्रति यात्री मील काफी कम उत्सर्जन करता है।
2. **बेहतर वायु गुणवत्ता:** सड़क पर प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों की संख्या को कम करके, दीर्घकालिक परिवहन शहरी वायु गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे श्वसन रोगों और हृदय संबंधी समस्याओं सहित प्रदूषण से जुड़े स्वास्थ्य जोखिमों में कमी आती है।
3. **आर्थिक लाभ:** स्थायी परिवहन प्रणालियों में निवेश रोज़गार सृजित कर सकता है, स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को प्रोत्साहित कर सकता है और भीड़-भाड़ और सड़क रखरखाव से जुड़ी लागत को कम कर सकता है।

4 **बढ़ी हुई गतिशीलता और पहुंच:** दीर्घकालिक परिवहन समाधान परिवहन सेवाओं तक समान पहुंच को बढ़ावा देते हैं, जिससे सभी निवासियों को उनकी गतिशीलता की जरूरतों को कुशलता से पूरा करने की अनुमति मिलती है।

5 **जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि:** दीर्घकालिक परिवहन, चलने और साइकिल चलाने को प्रोत्साहित करके स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देता है और जीवंत शहरी वातावरण में योगदान देता है जो सामुदायिक बातचीत को बढ़ावा देता है।

6 **जलवायु परिवर्तन पर नियंत्रण:** यह जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित रखने में मदद करेगा।

दीर्घकालिक परिवहन को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियाँ

1. **सक्रिय परिवहन अवसंरचना**-शहरों में गुड रोड नेटवर्क का निर्माण। पैदल चलने और साइकिल चलाने को बढ़ावा देना। शहरों को सुरक्षित, समर्पित पैदल यात्री मार्गों और साइकिल लेन के साथ-साथ बाइक-साझाकरण कार्यक्रमों में निवेश करना चाहिए। एम्स्टर्डम और कोपेनहेगन अनुकरणीय मॉडल के रूप में काम करते हैं, जहां साइकिल चलाना न केवल प्रोत्साहित किया जाता है बल्कि परिवहन का एक प्राथमिक साधन बन गया है।
2. **सार्वजनिक परिवहन प्रणाली**-विश्वसनीय और कुशल सार्वजनिक परिवहन में निवेश करना महत्वपूर्ण है। बसें, सबवे और ट्राम एक साथ कई यात्रियों को ले जा सकते हैं, जिससे निजी वाहनों पर निर्भरता कम हो जाती है। लंदन और टोक्यो जैसे शहरों ने एकीकृत सार्वजनिक

परिवहन प्रणालियों की प्रभावशीलता का प्रदर्शन किया है जो निर्बाध यात्रा सुनिश्चित करने के लिए परिवहन के विभिन्न साधनों को जोड़ते हैं।

3. **इलेक्ट्रिक और वैकल्पिक ईंधन वाहन-**इलेक्ट्रिक और वैकल्पिक ईंधन वाहन, जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करते हैं। शहर, कमी वाले कार्यक्रमों, सब्सिडी वाले चार्जिंग बुनियादी ढांचे और कम उत्सर्जन वाले क्षेत्रों के माध्यम से इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) को अपनाने को प्रोत्साहित कर सकते हैं। कारपूलिंग और राइडशेयरिंग के लिए अतिरिक्त प्रचार सड़क पर वाहनों की संख्या को और कम कर सकते हैं।
4. **पर्याप्त हरित ऊर्जा का उत्पादन-**पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा, जल विद्युत आदि जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग हरित ऊर्जा के उत्पादन के लिए किया जा सकता है और ऐसी ऊर्जा ईंधन से ऊर्जा का स्थान ले सकती है।
5. **स्मार्ट परिवहन प्रणाली-**परिवहन प्रबंधन में प्रौद्योगिकी को शामिल करने से दक्षता बढ़ सकती है। स्मार्ट ट्रैफ़िक प्रबंधन प्रणाली ट्रैफ़िक प्रवाह को अनुकूलित करने, भीड़ और उत्सर्जन को कम करने के लिए रीयल-टाइम डेटा का उपयोग करती है। सार्वजनिक परिवहन पर रीयल-टाइम जानकारी प्रदान करने वाले ऐप्स सवारियों को बढ़ा सकते हैं और उपयोगकर्ता अनुभव को बेहतर बना सकते हैं।

6. **नीति और योजना–** दीर्घकालिक शहरी परिवहन के लिए एकीकृत नीति ढांचे की आवश्यकता होती है जो शहरी नियोजन में स्थिरता को प्राथमिकता देते हैं। ज़ोनिंग कानूनों को मिश्रित-उपयोग विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए जो लंबे आवागमन की आवश्यकता को कम करता है, जबकि हरे रंग के सार्वजनिक स्थानों में निवेश करने और साइकिल चलाने को बढ़ावा देता है। नियोजन प्रक्रिया में प्रभावी सार्वजनिक जुड़ाव सुनिश्चित करता है कि समुदायों के पास स्थायी परिवहन समाधान विकसित करने में एक आवाज है।

शिक्षा और जागरूकता

दीर्घकालिक परिवहन के लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाने से सार्वजनिक दृष्टिकोण अधिक पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों की ओर स्थानांतरित हो सकता है। ऐसे अभियान जो चलने, साइकिल चलाने और सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने के स्वास्थ्य और आर्थिक लाभों को बढ़ावा देते हैं, शहरी आबादी के भीतर स्थिरता की संस्कृति को बढ़ावा दे सकते हैं।

उपसंहार

लचीला और रहने योग्य शहरी क्षेत्रों के विकास के लिए पर्यावरण हितैषी दीर्घकालिक परिवहन आवश्यक है। सहायक नीतियों और सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देते हुए शहर सार्वजनिक परिवहन, सक्रिय परिवहन बुनियादी ढांचे और नवीन प्रौद्योगिकियों में निवेश करके, अपने पर्यावरणीय प्रभाव को काफी कम कर सकते हैं। जैसे-जैसे शहरी आबादी बढ़ती जा रही है, दीर्घकालिक परिवहन को अपनाना सभी निवासियों के लिए स्वच्छ, स्वस्थ और अधिक न्यायसंगत शहरी वातावरण बनाने में सर्वोपरि होगा। दीर्घकालिक परिवहन को प्रोत्साहित करने से न केवल पर्यावरण को लाभ पहुंचाता है बल्कि शहरी जीवन की गुणवत्ता को भी बढ़ाता है, जिससे शहरों को भविष्य की पीढ़ियों के लिए अधिक जीवंत और आपस में जुड़े हुए स्थान मिलते हैं।

अंत में, मैं कहूंगा कि शहरी क्षेत्र में हरित ऊर्जा और पर्यावरण की दृष्टि से दीर्घकालिक परिवहन हमारे और भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण बनाने की कुंजी हैं।

- राजेन्द्र रूपनवर
महाप्रबंधक (एस एंड पी)

इंद्रियों

हमारे अनुभवों का मूल आधार हमारी इंद्रियाँ हैं। दुनिया को समझने के लिए हमें इन इंद्रियों के माध्यम से ही हर वस्तु का अनुभव होता है। इनमें से दो महत्वपूर्ण इंद्रियाँ हैं – आंखें और कान। आंखों की रेंज कान के मुकाबले अधिक है। हालांकि, दोनों ही इंद्रियाँ तरंगों के ग्रहण से जुड़ी हैं लेकिन इनका प्रभाव और कार्यप्रणाली पूरी तरह से भिन्न है। ध्वनि और प्रकाश दोनों ही तरंगें होती हैं लेकिन इनका अनुभव करने का तरीका अलग-अलग होता है। ध्वनि सुनाई देती है जबकि प्रकाश दिखाई देता है। यह दोनों तरंगें हमारे इंद्रिय अनुभव को आकार देती हैं और हमारे जगत के अनुभव का आधार बनती हैं।

इंद्रियों के द्वारा अनुभव किए जाने वाले तरंगों का भेद-

हमारी इंद्रियाँ हमें विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ देती हैं लेकिन इनके ग्रहण करने की क्षमता व स्वभाव में भिन्नता होती है। उदाहरण के लिए, ध्वनि को हम कानों से सुनते हैं जो एक प्रकार की ध्वनिक तरंग होती है। यह तरंग हवा में फैलती है और हमारी कान की झिल्लियों को कंपायमान करती है जिसके बाद यह तरंग मस्तिष्क तक पहुँचकर हमें सुनाई देती है। दूसरी ओर, प्रकाश को हम आंखों से देखते हैं जो विद्युत चुम्बकीय तरंगों का एक रूप है। यह तरंग हमारी आंखों के रेटिना पर पड़ती है और इससे हमें दृश्य अनुभव प्राप्त होता है। हालांकि दोनों ही तरंगें होती हैं परंतु इनका प्रभाव हमारे इंद्रिय अनुभव पर अलग-अलग होता है। हमारे इंद्रिय जगत का अनुभव इस पर निर्भर करता है कि हमारी इंद्रियाँ कितनी विकसित हैं और हम इनसे कैसे संपर्क करते हैं। उदाहरण के लिए, जब हम किसी चीज को देख रहे होते हैं तो यह सिर्फ आंखों से संबंधित नहीं होता। यह पूरे इंद्रिय प्रणाली का कार्य होता है जिसमें आंखों के साथ-साथ त्वचा, नाक, जीभ, कान और मन का भी योगदान होता है। जब इंद्रियाँ पूरी तरह विकसित होती हैं तो हमारे अनुभव भी अधिक व्यापक और विविध हो जाते हैं।

विषय और इंद्रियों का संबंध-

वास्तव में, विषय हमेशा विद्यमान होता है लेकिन जब इंद्रियाँ उत्पन्न होती हैं तब उनका अनुभव संभव हो पाता है। इसका अर्थ है कि दुनिया, जिसे हम देख सकते हैं या महसूस कर सकते हैं, वह हमारे इंद्रिय अनुभवों से ही अस्तित्व में आती है। यह एक गहरा सत्य है कि जब तक इंद्रियाँ विकसित नहीं होतीं तब तक हम बाहरी दुनिया को नहीं समझ सकते। इसलिए इंद्रियाँ ही हमारे अनुभवों का आधार बनती हैं।

हमारे इंद्रिय अनुभवों के अलावा, एक और समझ है जिसे हम अनुमान कहते हैं। यह अनुमान उन चीजों के बारे में जानकारी देता है जिन्हें हमारी इंद्रियाँ सीधे तौर पर अनुभव नहीं कर पातीं। यही अनुमान माया का रूप है। माया न तो कोई वस्तु है और न ही कोई इंद्रिय; यह केवल मन का भटकाव और भ्रम है। माया का अस्तित्व केवल हमारे मन के भ्रम के कारण होता है जो हमें वास्तविकता से भटका देता है।

के माध्यम

इंद्रियों का विकास और माया का अनुभव-

जब जीव विकसित होता है तो उसकी इंद्रियाँ क्रमशः विकसित होती हैं जिससे वह माया का अनुभव करता है। हालांकि, माया का अनुभव इंद्रियों के विकास के साथ होता है लेकिन असल में सम्पूर्ण भोग पुरुष (सांख्य दर्शन का) करता है जबकि जीव हमेशा माया के अधीन रहता है। माया की प्रक्रिया हमें यह समझाने में मदद करती है कि हम अपनी वास्तविकता से अनजान रहते हुए भ्रमित रहते हैं और भटकते रहते हैं।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि माया बुरी नहीं है बल्कि यह जीव की अक्षमता का परिणाम है। माया केवल इस कारण अस्तित्व में आती है क्योंकि जीव अपनी वास्तविकता से अपरिचित होता है। जीव अपनी सीमाओं को नहीं पहचानता और इस कारण वह माया के भ्रम में फंसा रहता है। माया के अधीन जीव कभी भी सच्ची समझ और शांति की ओर नहीं बढ़ पाता क्योंकि वह भ्रम और भटकाव के चक्कर में होता है।

माया का त्याग और आत्म-साक्षात्कार-

माया का त्याग तब संभव होता है जब जीव अपनी सीमाओं और भ्रमों से बाहर निकलता है और अपनी वास्तविकता को इन्द्रियों के विषय तक सीमित रख समझने की कोशिश करता है। जब जीव माया का त्याग करता है तो वह आत्म-साक्षात्कार की दिशा में अग्रसर होता है। आत्म-साक्षात्कार का अर्थ है अपनी वास्तविक स्थिति को पहचानना और जीवन को एक इंद्रिय भ्रम से विलग देखना। जब हम माया से मुक्त हो जाते हैं तो हम सच्चे अनुभव और सम्पूर्ण भोग की ओर बढ़ते हैं जो आत्मशांति और आत्मज्ञान का परिणाम होता है।

इसलिए, माया का त्याग केवल एक आध्यात्मिक परिपक्वता का परिणाम होता है। जैसे-जैसे जीव का आत्मज्ञान बढ़ता है और वह अपनी सीमाओं को पहचानता है वैसे-वैसे वह माया से मुक्त हो जाता है। यह आत्मज्ञान जीव को भ्रम से बाहर निकालकर सच्चे अनुभव और सम्पूर्ण भोग की दिशा में ले जाता है। माया का त्याग जीव की आध्यात्मिक यात्रा का हिस्सा है जो उसे उसकी सच्ची वास्तविकता से परिचित कराता है।

निष्कर्ष-

इस प्रकार, हम यह कह सकते हैं कि माया न तो कोई बुरी शक्ति है और न ही कोई शाप बल्कि यह हमारे अंतर्मन अर्थात् इंद्रियों की अक्षमता और भ्रांतियों का परिणाम है। जब तक हम अपनी इंद्रियों और मन की सीमाओं को समझकर उनके पार नहीं जाते तब तक हम माया के अधीन रहते हैं। लेकिन जैसे ही हम अपनी वास्तविकता को पहचानने की दिशा में कदम बढ़ाते हैं, हम माया से मुक्त हो जाते हैं और सच्चे अनुभव और सम्पूर्ण भोग की ओर अग्रसर होते हैं। यही हमारे आत्मज्ञान की ओर बढ़ने की दिशा है।

- विनायक पांडे
महाप्रबंधक/सिविल

माँ की कृपा का इंतजार

इन्द्रियों के विषय की वासना ही मन का क्षेत्र है। यदि यह वासना समाप्त हो जाए तो मन मुक्त हो जाय, परंतु स्मृति एक ऐसी चीज़ है, जो मन को इस वासना से मुक्त नहीं होने देती। स्मृति का एक अंश शरीर के संचालन के लिए आवश्यक होता है, लेकिन यही वासना का कारण भी बनता है। उदाहरण के रूप में, यदि पूर्ण रूप से स्मृति विलुप्त हो जाए तो हमें घर के बाथरूम और रसोई का रास्ता बार-बार ढूंढना पड़ेगा और समय का एहसास भी समाप्त हो जाएगा। भूख-प्यास लगने पर खाना और पानी पीने की इच्छा भी स्मृति पर निर्भर होती है। इसलिए स्मृति के महत्व को पूरी तरह से इन्कार नहीं किया जा सकता।

स्मृति की उत्पत्ति का आधार जड़ता में निहित है। प्रकृति में जड़ता मौजूद होती है , यह प्रकृति का मूल चरित्र है । जड़ता ही द्रव्य को स्थिति प्रदान करती है । सारे भौतिकी बलों का आधार जड़ता में ही है और यह ही बदलाव की विरोधी होती है। जड़ता परिवर्तन का कारण है और यही समय की उत्पत्ति का आधार भी है । आधुनिक विज्ञान भी जड़ता को समय की उत्पत्ति का कारण मानता है। इसकी गणितीय व्युत्पत्ति किसी भी माध्यमिक भौतिकी की पुस्तक में देखा जा सकता है। इस प्रकार, प्रत्येक शरीर में स्मृति, जड़ता, वासना और समय अवश्यंभावी होते हैं । जिनमें सभी का मूल जड़ता में ही है । मन शरीर का एक भाग है और इसमें भी जड़ता फलित वासना का प्रभाव होता है।

मन और शरीर का संबंध-मन और शरीर के बीच गहरा संबंध है। मन, भले ही अन्नमय कोश से ऊपर की स्थिति में हो लेकिन यह भी जड़ता और वासना के प्रभाव में रहता है। मन, काल के अधीन है और इसलिए इसकी मृत्यु भी निश्चित है। हालांकि, अन्नमय कोश की तुलना में मनोमय कोश की आयु अधिक होती है क्योंकि इसमें जड़ता कम होती है। यही कारण जब तक शरीर कई जन्म लेता है, मन वही रहता है। मन शरीर की वासना को धारण किये पुनः अवतरित हो जाता है।

स्मृतियाँ और पराजीवन-हम भौतिक जीवन में अच्छी स्मृतियों की कामना करते हैं क्योंकि माया रूपी संसार स्मृतियों की व्युत्पत्ति है। स्मृति भौतिक जीवन का आधार है ।परंतु पराजीवन में स्मृतियाँ एक बाधा बन जाती हैं। शास्त्रों का उद्देश्य स्मृतियों का विलोप करना है लेकिन मानव शास्त्रों को माध्यम की जगह ध्येय समझने लगता है । वास्तव में, स्मृति का विलोप ही सच्चे आत्मज्ञान की ओर ले जाता है।

अहंकार और जड़ता-अहंकार का निर्माण भी इन्द्रिय विषयों की जड़ता के कारण होता है। अहंकार की कोई वास्तविक स्थिति नहीं होती। यह मन के पटल पर उत्पन्न होने वाली गति है जो ब्रह्मांड के भौतिक बलों के अधीन होती है। यह बल बुद्धि के रूप में कार्य करता है। इस प्रकार, मन, बुद्धि और अहंकार आपस में जुड़े होते हैं। जैसे सूर्य की किरणों का फैलाव पूरे जगत में होता है लेकिन जब जड़ क्षेत्र में प्रवेश करता है तो संसार का उदय होता है। दृश्य संसार की उत्पत्ति जड़ता के कारण है , जिसे आधुनिक विज्ञान गुरुत्वाकर्षण बल बोलता है और वह प्रकाश है जो जीवन को उत्पन्न करता है।

समर्पण और मुक्ति-सांख्य दर्शन में आत्मा को पुरुष और प्रकृति को शक्ति माना गया है। पुरुष शिव है और प्रकृति शक्ति है।पुरुष का प्रकृति से विलग स्वयं का बोध होना ही उसकी मुक्ति है । अपनी इच्छा से प्रकृति से दूर होने की कोशिश ही माँ की गोद में समर्पण है। इस समर्पण से ही उसे मुक्ति मिलती है। जैसे ही पुरुष प्रकृति से अपनी स्थिति को विस्मृत करता है तब इस समर्पण की प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है। इस प्रकार, हमें माँ के प्रति पूर्ण समर्पण का मार्ग अपनाना चाहिए और माँ की कृपा का इंतजार करना चाहिए।

इस प्रकार, जीवन के प्रत्येक पहलु में आत्मज्ञान और समर्पण से ही हमें सच्ची मुक्ति की प्राप्ति हो सकती है।

- विनायक पांडे
महाप्रबंधक/सिविल

हमारा सम्मान उन शब्दों में नहीं है जो हमारे सामने कहे गए हैं बल्कि उन में है जो हमारी अनुपस्थिति में कहे गए हैं।

आलूबुखारे का पेड़

क्योहो युग के वर्ष 1716 में मोमोयामा फ़ुशिमी में एक बूढ़ा माली,हैम्बी रहता था। उसके दयालु स्वभाव और उसकी ईमानदारी के लिए लोग उसकी बहुत सम्मान करते थे। हालांकि हैम्बी बहुत गरीब था परंतु उसके पास रहने और खाने के लिये काफीथा। उसको अपने पिता से एक मकान और एक बागीचा विरासत में मिला था। उससे वहखुश था। उसके उस बागीचे में एक खास आलूबुखारे का पेड़ था जो उसको बहुत प्यारा था।उसका सबसे प्रिय काम था अपने बागीचे में उस खास आलूबुखारे के पेड़ की देखभालकरना। वह पेड़ जापान में फ़ुर्यो' के नाम से मशहूर था। ऐसे पेड़ों की वहाँ बहुत कीमत होतीथी।विशेषकर जब कोई अपना बागीचा सजाकररखता था। हालॉकि इस काम के लिये औरपहाड़ों और दूसरे टापुओं पर और भी बहुत सारे सुन्दर- सुन्दर पेड़ होते थे परंतु इस पेड़ कीअपनी कुछ अलग ही सुन्दरता थी। इसलिये लोग ऐसे पेड़पर गाना ज़्यादा पसन्द करते थे। दूसरेवाले पेड़ व्यापारिक इस्तेमाल के लिये ज़्यादा इस्तेमाल होते थे।जापान के रहने वालों के लिये ऐसे फ़ुर्यो की शक्ल के पेड़ों की बहुत कीमत होती थी चाहे वेआलूबुखारे के पेड़ हों या फिर पाइन के। आलूबुखारे के इस फ़ुर्यो पेड़ के लिये लोगों ने हैम्बीको कई बार बहुत सारे पैसे दे कर खरीदने की कोशिश की परंतुवह उसको किसी भी तरहसेबेचने पर सहमत नहीं कर सके। हैम्बी को यह पेड़ उसकी सुन्दरता की वजह से ही प्यारा नहींथा बल्कि वह उसको इसलिए भी प्यारा था क्योंकि वह पेड़ उसके पिता का था, उसके बाबाका था। और अब जब कि वह और उसकी पत्नी बूढ़े हो गये थे और उसके बच्चे घर से चलेगये थे, एक वही उसका साथी था।नवम्बर - दिसम्बर की ठंड में उस पेड़ की सब पत्तियाँ झड़ जातीं। फिर जनवरी में उसमेंकलियाँ निकलतीं तो उस समय कुछ ऐसा रिवाज था कि लोग दिन के कुछ घंटे उस पेड़ केनीचे आ कर बैठते और आलूबुखारों की कहानियाँ कहते सुनते जब यह सब ख़त्म हो जातातो हैम्बी अपने पेड़ की कटायी- छटायी करता और फिर गर्मी के दिनों में उसी पेड़ के आसपास घूमता रहता।

इस तरह से वर्ष दर वर्ष बीतते चले गए और राजा का पैसा भी उस पेड़ को न खरीद सका परंतु कभी न कभी कुछ न कुछ तो होना ही था। कोई भी आदमी हमेशा के लिये तोअपनीचीज़ों को लिये हुए बैठा नहीं रहता। एक न एक दिन

इस तरह से वर्ष दर वर्ष बीतते चले गए और राजा का पैसा भी उस पेड़ को न खरीद सका परंतु कभी न कभी कुछ न कुछ तो होना ही था। कोई भी आदमी हमेशा के लिये तोअपनी चीज़ों को लिये हुए बैठा नहीं रहता।

तो उसको उसे छोड़ना ही पड़ता है। एकदिन राजा के एक सलाहकार ने हैम्बी के पेड़ के बारे में सुना तो उसको अपने बागीचे मेंलगाना चाहा। उसने अपने एक नौकर कोटारो नैरूस को उस पेड़ को खरीदने की इच्छा सेहैम्बी के पास भेजा। उसको इस बात का ज़रा भी अन्दाज नहीं था कि वह जितने पैसे हैम्बीको दे रहा था वे उसे कम भी पड़ सकते थे।कोटारो मोमोयामा फुशीमी आया तो वहाँ उसका रस्मी तौर पर स्वागत हुआ। एक प्याला चायपीने के बाद कोटारो बोला कि उसको आलूबुखारे का फुर्यो पेड़ राजा के सलाहकार के लिएले जाने के लिये वहाँ भेजा गया है। हैम्बी तो यह सुन कर परेशान हो गया। इतने ऊँचे ओहदेवाले आदमी को वह उस पेड़ को न देने का क्या बहाना बनाये यह उस की समझ में ही नहींआया। सो उसने हकलाते हुए एक बेवकूफी की बात कही जिसका उस अक्लमन्द नौकर नेतुरन्त ही लाभ

उठाया । हैम्बी बोला - "नहीं, किसी कीमत पर भी मैं इस पुराने पेड़ कोकिसी को भी नहीं बेच सकता। मैंने पहले भी कई लोगों को इसको बेचने से मना कर दियाहै। "कोटारो बोला - "मैंने यह नहीं कहा कि मैं पैसे के बदले में इस पेड़ को खरीदने के लिये भेजागया हूँ। मैं तो यह कह रहा था कि मैं इसलिये भेजा गया हूँ ताकि मैं इस पेड़ को उससलाहकार के घर तक सुरक्षित रूप से पहुँचा सकूँ। वहाँ वह इस पेड़ को रस्मों के साथ लेंगेऔर इसकी बहुत अच्छे तरीके से देखभाल करेंगे। यह तो ऐसा होगा जैसे कि उनकी पत्नी घरआ रही होऔर यह तो तुम्हारे लिये और इस आलूबुखारे के पेड़ दोनों के लिये ही बड़े गर्व की बात होगीकि वह शादी के द्वारा इतनी बड़े आदमी से जुड़ेगा। मेरी सलाह मानो तो इस बात के लिये हाँकर दो।"

अब हैम्बी क्या कहे। वह तो बहुत ही गरीब परिवार में पैदा हुआ था और आज उसको राजाके परिवार के आदमी को कुछ देने के लिये कहा जा रहा था। वह बोला - "जनाब आपने मुझसे उन सलाहकार के लिए इतनी नम्रता से कहा है कि मैं उनको इनकार कर ही नहीं सकता।आप उनसे कह दीजियेगा कि यह पेड़ मेरी तरफ से उनके लिये भेंट है क्योंकि मैं इसको बेचनहीं सकता।" यह सुन कर कोटारो अपनी कोशिश की सफलता पर बहुत खुश हुआ। उसनेअपने कपड़ों में से एक थैली निकाली और हैम्बी को देते हुए बोला - "यह तुम्हारी भेंट केबदले में रस्म के तौर पर एक छोटी सी भेंट है, मेहरबानी कर के तुम इसको स्वीकार करो।"हैम्बी ने देखा तो उस थैली में तो सोना भरा हुआ था। उसने तुरन्त ही वह थैली कोटारो कोवापस करते हुए कहा - "यह भेंट मेरे लिए लेना नामुमकिन है।" पर बाद में उस नम्र आदमीके दोबारा कहने पर उसने उस थैली को रख लिया। पर जैसे ही कोटारो वहाँ से गया हैम्बीपछताने लगा क्योंकि उसको लगा कि जैसे उसने अपने परिवार के सदस्य को बेच दिया है।उस शाम वह सो नहीं सका ।आधी रात को उसकी पत्नी उसके कमरे की तरफ दौड़ी आई और उसकी बांह खींचते हुएचिल्लायी - "ओ बूढ़े व्यक्ति, तुम ज़रा यह तो बताओ, तुमको वह लड़की कहाँ से मिली? आजमैंने देखा है। झूठ मत बोलना मुझसे । मुझे कोई आश्चर्य नहीं अगर तुम अपने आपसे इस तरहबदला ले रहे हो तो।" हैम्बी बोला - "क्या हो गया है तुमको ओबा सैन? मैं तो किसी लड़की सेकभी मिला ही नहीं हूँ। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तुम कह क्या रही हो?"वह बोली - "तुम मुझसे झूठ मत बोलो। मैंने उसको देखा है। जब मैं अपने पीने के लिये एकगिलास पानी लेने गयी थी तब मैंने उसको अपनी आँखों से देखा है।" हैम्बी बोला - "क्याकहा? देखा है तुमने? तुम कहना क्या चाहती हो? किस लड़की को देखा है तुमने?" उसकीपत्नी बोली - "मैंने उसको घर के बाहर रोते हुए देखा है। बहुत ही सुन्दर लड़की है वह ।" यहसुन कर हैम्बी अपने बिस्तर से यह देखने के लिए उठा कि उसकी पत्नी सच बोल रही थी यानहीं।जब वह दरवाजे के पास पहुँचा तो उसको सिसकने की आवाज आयी और जैसे ही उसनेदरवाजा खोला तो उसने भी एक सुन्दर- सी लड़की को देखा। उसको सन्तोष कीसाँस आयी कि उसकी पत्नी सही कह रही थी ।

हैम्बी ने उससे पूछा - "तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रही हो?" वह लड़की बोली - "मैं उसआलूबुखारे के पेड़ की आत्मा हूँ, जिसकी तुम बरसों से देखभाल करते चले आ रहे हो और तुम्हारे पिता भी। मैंने सब सुन लिया है और मुझे दुख भी बहुत है कि मुझे उस सलाहकार के घर के बागीचे में भेजा जा रहा है। किसी अच्छे परिवार केसाथ जुड़ना अच्छा तो लगता है और इज़्ज़त की बात भी है। मैं शिकायत तो नहीं कर सकती परंतु क्योंकि मैं यहाँ तुम्हारे पास इतने दिनों तक रही हूँ और तुमने मेरी इतने अच्छे से देखभाल की है इसलिए मुझे यहाँ से जाने में अच्छा नहीं लग रहा है। क्या तुम मुझे यहाँ कुछ और

आखिर वह दुखदायी शनिवार भी आ ही पहुँचा जब उस पेड़ को वहाँ से जाना था। कोटारो वहाँ बहुत सारे आदमियों के साथ एक गाड़ी ले कर आया था।

समयके लिये नहीं रख सकते? जितने दिन भी मैं रहूँ।"हैम्बी बोला - "हालाँकि मैंने तुमको उस सलाहकार के घर क्योटो अगले शनिवार को यहाँ से भेजने का वायदा किया है परंतु फिर भी मैं तुम्हारी प्रार्थना को ठुकरा नहीं सकता क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम यहाँ मेरे पास ही रहो। तुम शान्ति से रहो मैं देखता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ। "आलूबुखारे के पेड़ की आत्मा ने अपनेआँसू पोंछे और हैम्बी की तरफ देख कर मुस्कुरायी और फिर उस आलूबुखारे के पेड़ के तने में जा कर गायब हो गयी। हैम्बी की पत्नी यह सबआश्चर्य से खड़ी- खड़ी देख रही थी। उसको यह विश्वास ही नहीं हो रहा था । आखिर वह दुखदायी शनिवार भी आ ही पहुँचा जब उस पेड़ को वहाँ से जाना था। कोटारो वहाँ बहुत सारे आदमियों के साथ एक गाड़ी ले कर आया था। हैम्बी ने कोटारो को बताया कि उसके जाने के बाद क्या हुआ था। कैसे उस पेड़ की आत्मा आयी थी और उससे क्या कह रहीथी। फिर उसने उससे प्रार्थना की कि वह सलाहकार के घर जाना नही चाहती थी। हैम्बी नेउसको उसकापैसा वापस करते हुए कहा "मेहरबानी कर के यह कहानी जो मैंने तुमसे कही है उस सलाहकार को बता देना। मुझे पूरा विश्वास है कि वह हम पर दया जरूर करेंगे। "यह सुन कर कोटारो गुस्सा हो गया। उसने पूछा - "पर यह बदलाव आया कैसे? क्या तुम मुझेमूर्ख बना रहे हो? तुमको बात करते समय सावधान रहना चाहिए। नहीं तो मैं तुमको बतारहा हूँ कि तुम्हारा सिर कटवा दिया जाएगा। अगर हम यह मान भी लें कि उस पेड़ की आत्मातुम्हारे सामने एक लड़की के रूप में प्रगट हुई थी तो क्या उसने यह भी कहा था कि उसकोयह जगह छोड़ कर उस सलाहकार के घर जाने में उसे दुख होगा? सलाहकार की भेंट वापसकरने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? मैं उनको इस अपमान की सफाई कैसे दूँगा? और फिर वह मेरे बारे में भी क्या सोचेंगे? क्योंकि तुम अपना वायदा पूरा नहीं कर रहे हो तो या तो मैंतुम्हारे पेड़ को जबरदस्ती ले जाऊँगा और या फिर उसके बदले में मैं तुमको मार दूँगा। "कोटारो का गुस्सा बढ़ता जा रहा था। गुस्से में आ कर उसने हैम्बी को ठोकर मारी तो वहसीढ़ी से नीचे गिर पड़ा। फिर उसने अपनी तलवार खींचते हुए उसको मारना चाहा किआलूबुखारे के फूलों की खुशबू का एक झोंका आया और एक बहुत सुन्दर लड़की कोटारो केसामने आ कर खड़ी हो गयी। आलूबुखारे के पेड़ की आत्मा । उसको देख कर कोटारो चिल्लाया - "मेरे रास्ते से हट जाओ वरना मैं तुमको मार दूंगा।"वह लड़की बोली - "नहीं, मैं नहीं हटूंगी। इस बेकुसूर आदमी को मारने की बजाय तो अच्छा है कि तुम मुझे मार दो - उस आत्मा को मार दो जिसकी वजह से तुमको इतनी परेशानी उठानीपड़ रही है।" कोटारो बोला - "हालाँकि मुझे आलूबुखारे के पेड़ की आत्मा में कोई विश्वास नहींहै परंतु फिर भी तुम उसकी आत्मा हो यह तो मुझे साफ नजर आ रहा है। परंतु फिर भी क्योंकितुम उस पुराने पेड़ की आत्मा हो इसलिये मैं तुम्हारी बात मान लेता हूँ और मैं तुमको सबसेपहले मारूँगा।"उसने यह कहने के साथ ही अपनी तलवार से कुछ काटा और उसको लगा भी कि उसकीतलवार ने सचमुच ही किसी शरीर को काटा। इससे वह लड़की तो गायब हो गयी पर उसकीतलवार आलूबुखारे के पेड़ की एक टहनी गिर पड़ी जिस पर फूल खिले हुए थे। अब कोटारोकी समझ में आया कि वह माली जो कुछ कह रहा था वह सच था सो उसने उससे माफीमाँगी। इस तरह आलूबुखारे की पेड़ की आत्मा ने उस माली की जान बचायी। कोटारो बोला "मैं इस पेड़ की यह कटी टहनी अपने साथ लिए जा रहा हूँ और मैं उस सलाहकार को यह कहानी सुना पाता हूँ या नहीं और वह इस कहानी पर विश्वास कर पाता है कि नहीं। "कोटारोउस टहनी को ले कर चला गया और जा कर उस सलाहकार को वह कहानी सुनाई तो वह सलाहकार भी उसको सुन कर रो पड़ा। उसने उस माली को एक बहुत ही प्यार भरा सन्देश भिजवाया और उसको वह पेड़ और वहपैसे जो उसने पेड़ लेने के बदले में भिजवाये थे वे भी उसको अपनेपास रखने की इजाज़त देदी। हालाँकि कोटारो की तलवार के वार से आलूबुखारे का वह पेड़ धीरे धीरे मुरझा गया औरहैम्बी की देखभाल के बावजूद वह पेड़ पूरी तरह सूख गया परंतु उसके तने का टुकड़ा अभी भीवहाँ मौजूद है। कई वर्षों तक मृत वृक्ष के तने की पूजा की जाती रही।

- रवीन्द्र वर्मा
महाप्रबंधक/रोलिंग स्टॉक
विशेष: जापान की एक लोक कथा का हिंदी अनुवाद।

नई पीढ़ी के ईएमयू रोलिंग स्टॉक के लिए उभरती प्रौद्योगिकियां

आजकल, पर्यावरण के अनुकूल सतत विकास (एसडीजी) लक्ष्यों को पूरा करने के लिए पूरी दुनिया में एक बड़ी चिंता पैदा हो रही है। इसके कारण, रेल परिवहन प्रणाली में ऊर्जा की बचत और दक्षता बढ़ाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। ईएमयू (इलेक्ट्रिक मल्टीपल यूनिट) रोलिंग स्टॉक के डिज़ाइन में सुधार करने की दिशा में, नई उभरती प्रौद्योगिकियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस लेख में हम उन उभरती प्रौद्योगिकियों पर चर्चा करेंगे जो कर्षण कन्वर्टर्स और मोटर्स के डिजाइन को और भी अधिक कॉम्पैक्ट, ऊर्जा-कुशल, हल्का और पर्यावरण के अनुकूल बनाने में सहायक हैं। यह लेख अगली पीढ़ी के ईएमयू के लिए SiC डिवाइस और PMSM कर्षण प्रणाली के लाभों को प्रस्तुत करता है।

1. पावर सेमीकंडक्टर उपकरणों का विकास-

रूपांतरण प्रणाली में पावर सेमीकंडक्टर उपकरणों का महत्व बहुत बढ़ चुका है। रूपांतरण प्रणाली में एक पीडवल्युएम कनवर्टर, डीसी लिंक और एक पीडवल्युएम इन्वर्टर होता है। दो प्रकार के सिलिकॉन कार्बाइड (SiC) डिवाइस हैं,एसआईसी शोट्की बैरियर डायोड (SBD) के साथ Si इंसुलेटेड गेट बाइपोलर ट्रांजिस्टर (IGBT), जिसे हाइब्रिड सिलिकॉन कार्बाइड (Hybrid SiC) सिस्टम के रूप में जाना जाता है और SiC बैरियर डायोड के साथ SiC- मॉसफेट, जिसे फुल सिलिकॉन कार्बाइड (Full SiC) सिस्टम के रूप में जाना जाता है। विशेष रूप से सिलिकॉन कार्बाइड (SiC) उपकरणों का उपयोग कर्षण प्रणाली के प्रदर्शन को बेहतर बना सकता है। सिलिकॉन कार्बाइड उपकरणों के उपयोग से कर्षण कन्वर्टर्स और इन्वर्टर्स के आकार में कमी आती है जिससे वे हल्के और अधिक कॉम्पैक्ट होते हैं। सिलिकॉन कार्बाइड उपकरणों का उपयोग करने से ऊर्जा हानि में भी कमी आती है और स्विचिंग के दौरान होने वाली हानियां भी कम होती हैं। सिलिकॉन कार्बाइड के साथ, उच्च तापमान पर भी प्रणाली को अच्छी कार्यक्षमता मिलती है जो कि पारंपरिक सिलिकॉन उपकरणों में नहीं होती। सिलिकॉन कार्बाइड उपकरणों में ऐसी ताकत और परत की मोटाई होती है जिससे स्विचिंग हानि और चालकता हानि में कमी आती है।

2. ऊर्जा दक्षता पर प्रभाव-

सिलिकॉन कार्बाइड उपकरणों का उपयोग करते समय, ऊर्जा दक्षता में सुधार होता है। जब इन उपकरणों का उपयोग पीडब्ल्यूएम (पल्स चौड़ाई मॉड्यूलेशन) कन्वर्टर्स और इन्वर्टर्स में किया जाता है तो ऊर्जा खपत में कमी आती है। यह विशेष रूप से कर्षण प्रणालियों में महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे पुनर्योजी ब्रेकिंग को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। पुनर्योजी ब्रेकिंग की क्षमता

दुख भोगने वाला, भविष्य में सुखी हो सकता है परंतु दुख देने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता है।

में वृद्धि होने से ऊर्जा की बचत होती है और ट्रैक्शन मोटर्स में उत्पन्न होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है। इस प्रकार, सिलिकॉन कार्बाइड आधारित सिस्टम में कम हानि और बेहतर ऊर्जा पुनर्नवीनीकरण की क्षमता होती है।

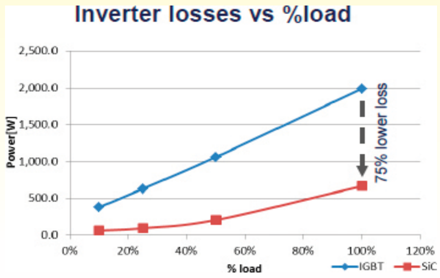

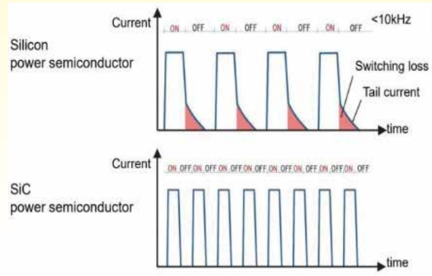

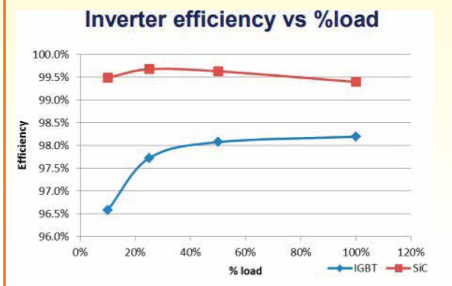

3. सिलिकॉन कार्बाइड एप्लाइड ट्रैक्शन सिस्टम के लाभ-

सिलिकॉन कार्बाइड उपकरणों के लाभ केवल रूपांतरण प्रणाली तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि पूरे कर्षण प्रणाली में इनका प्रभाव देखा जा सकता है। सिलिकॉन कार्बाइड आधारित उपकरणों के कारण कर्षण मोटर्स की दक्षता में सुधार होता है और इनवर्टर्स का आकार भी छोटा हो जाता है। इसके अतिरिक्त, सिलिकॉन कार्बाइड के उपयोग से शीतलन प्रणाली में भी सुधार होता है। सिलिकॉन कार्बाइड के कम स्विचिंग नुकसान के कारण, शीतलन पंखों की आवश्यकता कम हो जाती है, जिससे उपकरण का वजन हल्का और आकार कॉम्पैक्ट होता है। सिलिकॉन कार्बाइड उपकरणों के उपयोग से कर्षण सिस्टम में उच्च आवृत्तियों पर संचालन संभव हो पाता है जो उच्च गति और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है। सिलिकॉन कार्बाइड डिवाइस Si डिवाइस की तुलना में उच्च वोल्टेज, उच्च आवृत्तियों और उच्च जंक्शन तापमान पर काम कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पावर कनवर्टर के वजन और आकार में महत्वपूर्ण कमी आती है और सिस्टम दक्षता में वृद्धि होती है।

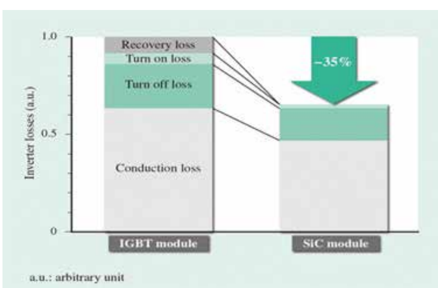

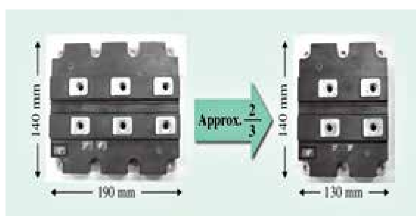

Exterior of IGBT and SiC Modules

The mounting footprint is reduced to about two-thirds, with the same output density.

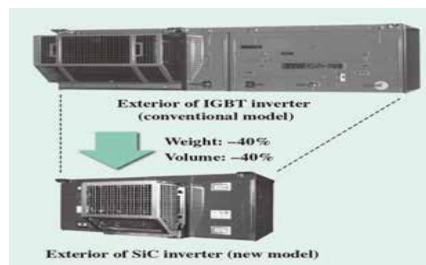

The SiC inverter is 40% smaller in terms of both weight and volume.

4. वजन घटाने और डाउनसाइजिंग प्रभाव-

सिलिकॉन कार्बाइड उपकरणों के उपयोग से कर्षण प्रणाली के वजन में महत्वपूर्ण कमी आती है। कर्षण कन्वर्टर्स, इन्वर्टर्स और अन्य पावर उपकरणों को कम आकार में डिजाइन किया जा सकता है। इसके परिणामस्वरूप, अंडरफ्लोर उपकरणों के लिए अधिक लचीला डिज़ाइन संभव होता है। पारंपरिक रूपांतरण प्रणालियाँ एक कार पर स्थित होती थीं जिससे अतिरिक्त कनेक्शन की आवश्यकता होती थी। सिलिकॉन कार्बाइड आधारित कर्षण प्रणाली इस समस्या को हल कर देती है क्योंकि अब एक ही कार में रूपांतरण प्रणाली और ट्रांसफार्मर स्थापित किए जा सकते हैं। यह डिज़ाइन परिवर्तन ईएमयू ट्रेन सेट के विभिन्न विन्यासों को समय और लागत बचत करते हुए नया स्वरूप देने में सक्षम बनाता है।

5. स्थायी चुंबक तुल्यकालिक मोटर (पीएमएसएम)

पीएमएसएम का उपयोग कर्षण प्रणाली में तेजी से बढ़ रहा है। इन मोटरों में दुर्लभ अर्थ धातुओं से बने स्थायी चुंबकों का उपयोग किया जाता है जो उन्हें उच्च दक्षता और कम आकार में अधिक शक्ति प्रदान करने में सक्षम बनाता है। स्थायी चुंबकीय सामग्री सैमरियम और नियोडिमियम और संक्रमण धातुओं के मिश्रित दुर्लभ पृथ्वी धातुओं का एक मिश्र धातु है, जिसे पाउडर धातु विज्ञान द्वारा दबाया और सिंटर किया जाता है और चुंबकीय क्षेत्र द्वारा चुंबकित किया जाता है। पीएमएसएम मोटरों का सबसे बड़ा लाभ उनकी उच्च दक्षता है। ये मोटरें ऊर्जा की बचत में बहुत प्रभावी हैं क्योंकि इनकी डिजाइन में कोई निष्पादन शक्ति की आवश्यकता नहीं होती है। पीएमएसएम की दक्षता 95-98% के बीच होती है जबकि पारंपरिक इंडक्शन मोटर की दक्षता 90-94% तक होती है।

पत्थर में एक कमी होती है कि वह पिघलता नहीं है परंतु उसमें यह गुण भी होता है कि वह बदलता नहीं है।

6. पीएमएसएम कार्य सिद्धांत-

पीएमएसएम एक सिंक्रोनस मोटर की तरह है। यह घूर्णनशील चुंबकीय क्षेत्र पर निर्भर करता है जो सिंक्रोनस गति पर विद्युत चालक बल उत्पन्न करता है। जब स्टेटर वाइंडिंग को 3-चरण की आपूर्ति देकर सक्रिय किया जाता है, तो वायु अंतराल के बीच एक घूर्णनशील चुंबकीय क्षेत्र बनाया जाता है। यह टॉर्क उत्पन्न करता है जब रोटर क्षेत्र ध्रुव घूर्णनशील चुंबकीय क्षेत्र को सिंक्रोनस गति पर पकड़ते हैं और रोटर लगातार घूमता रहता है।

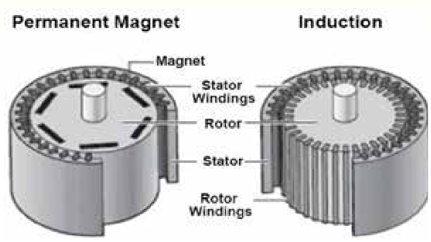

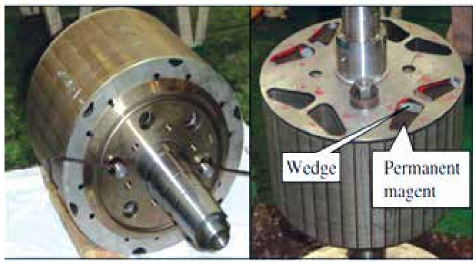

7. पीएमएसएम के लाभ-

पीएमएसएम के कई लाभ हैं जैसे कि उनकी सरल और कॉम्पैक्ट संरचना। ये मोटरें पारंपरिक मोटरों की तुलना में अधिक कुशल होती हैं और इन्हें अधिक शक्ति घनत्व प्रदान किया जा सकता है। पीएमएसएम मोटरों का शोर और कंपन बहुत कम होता है जिससे यात्रियों के आराम में वृद्धि होती है। शोर का स्तर उसी श्रेणी के स्व-वेंटिलेटिंग ओपन IM की तुलना में लगभग 12dB(A) कम हो जाता है। इसके अलावा, इन मोटरों का रखरखाव कम होता है और यह लंबे समय तक उच्च प्रदर्शन करती हैं। पीएमएसएम का उपयोग उपनगरों की रेल सेवाओं में विशेषतौर पर लाभदायक होता है, जहाँ पर्यावरणीय और धूल-मुक्त संचालन की आवश्यकता होती है। मोटर को अलग किए बिना बेयरिंग यूनिट को बदला जा सकता है। पूरी तरह से बंद संरचना के कारण संदूषण और पानी का प्रवेश नहीं होता है, इसलिए इन्सुलेशन खराब होने के कारण होने वाली विफलता कम हो जाती है। चुंबक को ट्रैक्शन मोटर के अंदर स्थापित किया जाता है और सामान्य उपयोग में चुंबकीय प्रवाह का लगभग कोई बाहरी रिसाव नहीं होता है।

8. उच्च दक्षता और कम रखरखाव-

पीएमएसएम की सबसे बड़ी विशेषता इसकी उच्च दक्षता और कम रखरखाव है। इसके कारण, नियमित रूप से रखरखाव करने की आवश्यकता नहीं होती, और इसका ऑपरेशन लंबे समय तक प्रभावी रहता है। इसके अलावा, पीएमएसएम के उपयोग से ट्रैक्शन मोटर्स का फ्लड-प्रूफ डिज़ाइन भी संभव हो पाता है, जिससे सिस्टम की विश्वसनीयता बढ़ जाती है। इसके अलावा, रखरखाव अंतराल कम बार-बार होता है और पारंपरिक ट्रैक्शन मोटर की तुलना में लागत कम होती है। यह लाभ पूरी तरह से बंद संरचना के कारण है जो परिचालन प्रदूषण को काफी कम करता है क्योंकि कम परिचालन तापमान के कारण मजबूर वायु शीतलन आवश्यक नहीं है।

9. अवसर, चुनौतियां और तकनीकी उन्नयन-

रेल परिवहन में ऊर्जा कुशल कर्षण प्रणालियों का उपयोग करने के अवसर लगातार बढ़ रहे हैं। हालांकि इन प्रणालियों को लागू करने में कुछ चुनौतियाँ भी हैं जैसे दुर्लभ अर्थ तत्वों की आपूर्ति की समस्याएं और पर्यावरणीय चुनौतियां। भारत में, रेलवे प्रणाली के उन्नयन और नवीनतम प्रौद्योगिकियों के उपयोग की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। भविष्य में, अगले पीढ़ी के कर्षण प्रणालियों में सिलिकॉन कार्बाइड उपकरणों और पीएमएसएम का उपयोग CO2 उत्सर्जन को कम करने में मदद करेगा।

निष्कर्ष- भारत में ईएमयू में पहले ही 3-फेज संचालन प्रौद्योगिकी को अपनाया जा चुका है जिससे उच्च विश्वसनीयता, ऊर्जा बचत और कम रखरखाव सुनिश्चित हुआ है। वैश्विक स्तर पर, हाइब्रिड और सिलिकॉन कार्बाइड आधारित ट्रैक्शन प्रणालियों का उपयोग बढ़ रहा है। अगली पीढ़ी के कर्षण प्रणालियों में इन प्रौद्योगिकियों के अधिक प्रभावी उपयोग से न केवल ऊर्जा की बचत होगी बल्कि सिस्टम की दक्षता और प्रदर्शन भी बेहतर होगा। नई तकनीकों को अपनाकर, भारतीय रेलवे दुनिया के सबसे आधुनिक और ऊर्जा-कुशल रेल प्रणालियों में से एक बन सकती है।

- रवीन्द्र वर्मा
महाप्रबंधक/रोलिंग स्टॉक

किसी का जीवन आसान नहीं होता है परंतु साहस उसे जीने की राह दिखाता है।

केरल के प्रमुख दर्शनीय स्थल

भारत की दक्षिण-पश्चिमी सीमा पर अरब सागर और सह्याद्रि पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित केरल भारत का प्राचीन और ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों वाला राज्य है।यहाँ के खूबसूरत समुद्र तट, बैकवाटर, पहाड़, और ऐतिहासिक स्थल पर्यटकों को बहुत आकर्षित करते हैं। यद्यपि केरल में वायनाड, वर्कला, फोर्ट कोच्चि, कोवलम एलेप्पी, सबरीमाला, थेक्कड़ी और त्रिवेंद्रम आदि कई प्रसिद्ध पर्यटन स्थल हैं परंतु केरल का मुन्नार पहाड़ी स्टेशन स्वर्ग के समान है। भारत के केरल की हरी-भरी पहाड़ियों में भव्यता से फैला, मुन्नार एक अविश्वसनीय रूप से खूबसूरत जगह है जो आगंतुकों को एक ऐसे क्षेत्र में ले जाती है जहां प्राकृतिक दुनिया अपने कैनवस को पेंट करने के लिए जीवंत रंगों का उपयोग करती है। राष्ट्रीय राजमार्ग 49 कोच्चि और मुन्नार को आपस में जोड़ता है। केएसआरटीसी की बसें और निजी बसें भी मुन्नार को आसपास के राज्यों से जोड़ती हैं। मुन्नार दक्षिण भारत के सबसे बड़े चाय बागानों का घर है जो हरियाली का एक अविश्वसनीय ताना-बाना बनाने के लिए गठबंधन करते हैं क्योंकि प्राकृतिक चमत्कार यहां मिलते हैं। मुन्नार के शीर्ष तथ्य इस प्रकार हैं: -

1. भौगोलिक आश्चर्य -

मुन्नार एक भौगोलिक आश्चर्य है जो पश्चिमी घाट के आलिंगन में स्थित हर किसी को आकर्षित करता है। मुन्नार, समुद्र तल से 1,600 मीटर की ऊंचाई पर स्थित, सुस्वाद हरे दृश्यों का एक शानदार दृश्य प्रदान करता है जो हमेशा के लिए फैला हुआ है। भौगोलिक विशेषाधिकार मुन्नार का एक महत्वपूर्ण तथ्य है जो प्रतिदिन हजारों पर्यटकों को यहां खींचता है। पश्चिमी घाट के केंद्र में स्थित, मुन्नार अपने भौगोलिक सद्भाव के कारण एक विलक्षण और लुभावनी जगह है, जहाँ ऊँचाई रसीला सुंदरता से मिलती है।

2. चाय उत्पादन -

विशाल चाय बागान पहाड़ियों को एक ज्वलंत हरे रंग की टेपेस्ट्री में कवर करते हैं, जिससे मुन्नार, जिसे कभी-कभी "चाय वंडरलैंड" के रूप में जाना जाता है, प्रसिद्ध है, इतिहास में समृद्ध है, मुन्नार के चाय उत्पादन की शुरुआत तब हुई जब अंग्रेजों ने इस क्षेत्र का उपनिवेश किया और इसे एक संपन्न चाय केंद्र में बदल दिया। आकर्षक दृश्य प्रदान करने के बजाय,

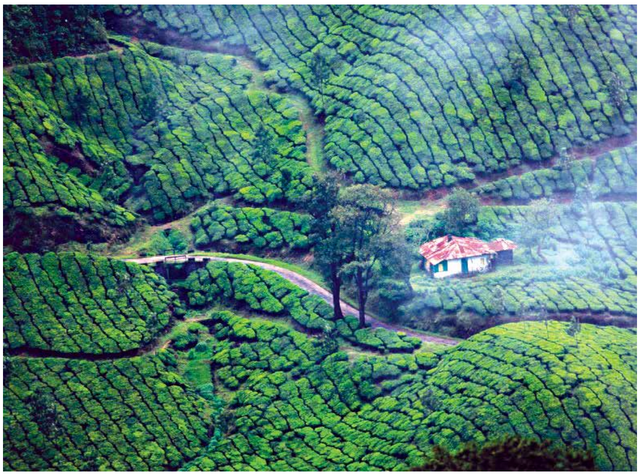

अर्थव्यवस्था में इस वृक्षारोपण का योगदान मुन्नार के महान तथ्यों में से एक है।

3. अनूठा फूल -

नीलकुरिंजी खिलना एक व्यापक रूप से प्रशंसित मुन्नार दिलचस्प तथ्य है, एक लुभावनी दृष्टि जो मुन्नार पहाड़ियों को कवर करती है, आसपास के क्षेत्र को नीले रंग के मनोरम समुद्र में बदल देती है। यह अनूठा फूल, जो अपने ज्वलंत रंग के लिए प्रसिद्ध है, हर 12 साल में केवल एक बार खिलता है, जिससे एक बहुप्रतीक्षित प्राकृतिक घटना होती है। भाग्यशाली दर्शकों के लिए, नीलकुरिंजी फूलों से ढकी पहाड़ियाँ दृश्य कविता का काम बन जाती हैं।

4. राष्ट्रीय उद्यान -

सुंदर एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान, एक स्वर्ग जो प्रकृति की महिमा को प्रकट करता है, मुन्नार के पास स्थित है। भव्य नीलगिरि तहर, एक लुप्तप्राय प्रजाति, इस जैव विविध शरण में रहती है, जहां यह पार्क के हरे-भरे परिवेश में पनपती है। एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान पर्यावरण के अनुकूल पर्यटन प्रथाओं और मनुष्यों और जानवरों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को प्रोत्साहित करता है।

5. पर्यावरण का सुंदर मुकुट रत्न-

अनामुडी, दक्षिण भारत की सबसे ऊंची चोटी-अनामुडी मुन्नार के पर्यावरण का सुंदर मुकुट रत्न है, जो गर्व से पश्चिमी घाट और दक्षिण भारत के सबसे ऊंचे पर्वत के रूप में खड़ा है। लंबी पैदल यात्रा मुन्नार के बारे में सबसे छिपे हुए तथ्यों में से एक है। अनामुडी 1,600 मीटर की अपनी ऊंचाई से परे रोमांचक लंबी पैदल यात्रा के विकल्प प्रदान करता है, विभिन्न प्रकार के आवासों के माध्यम से खोजकर्ताओं को चोटी तक मार्गदर्शन करता है।

6. जलविद्युत परियोजना-

पल्लीवासल जलविद्युत परियोजना एक इंजीनियरिंग चमत्कार के रूप में खड़ी है, जो बिजली उत्पन्न करने के लिए पानी की शक्ति का उपयोग करती है। ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण, इसने एक स्थायी ऊर्जा स्रोत प्रदान करके क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपने औद्योगिक महत्व से परे, परियोजना ने एक सुरम्य जलाशय बनाया, जो आसपास के परिदृश्य को प्राकृतिक सुंदरता के साथ बढ़ाता है। प्रौद्योगिकी और प्रकृति का यह सम्मिश्रण मुन्नार के दिलचस्प तथ्यों में से एक बनाता है और मुन्नार के विविध आकर्षण के एक नेत्रहीन मनोरम पहलू को भी प्रकट करता है।

7. पारिस्थितिकी तंत्र की झलक -

पश्चिमी घाट की दूसरी सबसे ऊंची चोटी मीसापुलिमाला के ऊपर मुन्नार के दिलचस्प तथ्य सामने आते हैं। साहसी लोग इसके चुनौतीपूर्ण अभी तक पुरस्कृत ट्रेकिंग ट्रेल्स के लिए तैयार हैं, जो अद्वितीय शोला घास के मैदान पारिस्थितिकी तंत्र की झलक पेश करते हैं।

8. चाय के बागानों का मनमोहक दृश्य -

मट्टुपेट्टी समुद्र तल से लगभग 1700 मी. ऊंचाई पर स्थित है। यहां पर बनी मट्टुपेट्टी झील और बांध पर पर्यटक पिकनिक मनाने आते हैं। यहां से चाय के बागानों का मनमोहक दृश्य नजर आता हैं। यहां पर पर्यटक बोटिंग का भी आनंद ले सकते हैं। मट्टुपेट्टी अपने उच्च विशिष्टीकृत डेयरी फार्म के लिए प्रसिद्ध है। मट्टुपेट्टी के अंदर व आसपास के शोला वन ट्रैकिंग करने की सुविधा उपलब्ध कराता हैं। ये जंगल विभिन्न प्रकार के पक्षियों का घर भी है। मट्टुपेट्टी बांध और झील मुन्नार के आश्चर्यजनक दृश्यों में बसे मुन्नार के बारे में अद्भुत तथ्यों के मंत्रमुग्ध प्रतिबिंब हैं। अपनी हरी-भरी पहाड़ियों के साथ, जलाशय लोगों को अपने पानी की शांतिपूर्ण शांति में खुद को विसर्जित करने के

लिए प्रेरित करता है। मुन्नार में मट्टुपेट्टी बांध सक्रिय रूप से कृषि और जल संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए स्थायी प्रथाओं के प्रति गंतव्य की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है, जो कल्पना सौंदर्य से परे है।

9. विविध समुदायों का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण -

मुन्नार की सांस्कृतिक समृद्धि, कई मुन्नार दिलचस्प तथ्यों में से एक, विविध समुदायों के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण का एक वसीयतनामा है। स्थानीय परंपराएं, जीवंत त्योहार और स्वादिष्ट व्यंजन इस क्षेत्र में बुने गए सांस्कृतिक टेपेस्ट्री को दर्शाते हैं।

- टी. विल्सन कोशी

विशेष कार्य अधिकारी/मानव संसाधन

भारतीय विद्युत कर्षण प्रणाली के 100 वर्ष का गौरव पूर्ण इतिहास

भारतीय विद्युत ट्रेन (विद्युत कर्षण) अपने इतिहास का 100 वां वर्ष 3 फरवरी 2025 को पूर्ण कर रहा है। 3 फरवरी 1925 से 3 फरवरी 2025 तक के ये 100 वर्ष गौरव पूर्ण हैं और इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। जैसे गंगोत्री से गंगासागर तक, गंगा की विभिन्न दिशाएं और धाराएं हैं वैसे ही विद्युत कर्षण की भारत में बहुत सी दिशाएं और धाराएं रही हैं तथा एतिहासिक काल में विद्युत कर्षण कई शिखरों और गर्त का साक्षी रहा है। इसकी जीवन- यात्रा को हम निम्नलिखित रूप में चित्रित कर सकते हैं-

ये जब भी चला पांव- पांव चला,
कभी धूप-धूप तो कभी छांव- छांव चला
कभी शहर–शहर तो कहीं गांव-गांव चला,
ये जब भी चला पांव-पांव चला।
बंबई को गेटवे ऑफ इंडिया के नाम से जाना जाता है,
इसी प्रकार से विद्युत कर्षण को हम भारत का गेटवे
कहे तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

आइये, इस ऐतिहासिक यात्रा के कुछ तथ्य जानते हैं

भारत की पहली उपनगरीय ट्रेन 03 फरवरी 1925 को विक्टोरिया टर्मिनस छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस से कुर्ला तक चलाई गई थी। यह दूरी 15 किलोमीटर की थी। यह ट्रेन 1500 वोल्ट डीसी प्रणाली पर चलाई गई थी। इसे एसएलएम विद्युत इंजन की सहायता से हार्बर लाइन ट्रैक से चलाया गया था। इसके बाद 5 जनवरी 1928 को चर्चगेट से बांद्रा तक इलेक्ट्रिक ट्रेन चलाई गई। पहली इलेक्ट्रिक मल्टीपल यूनिट जेसप कंपनी द्वारा 1950 में चलाया गया।

विद्युत कर्षण को फिर धीरे- धीरे इगतपुरी तथा पूना तक बढ़ाया गया। पहली विद्युत ट्रेन मुंबई से पूना डक्कन क्वीन 1930 में चलायी गई थी। तब मुम्बई में रेलवे को ग्रेट इंडियन पेनिनस्यूला रेलवे और वेस्टर्न रेलवे को बाम्बे वडौदा कार्पोरेशन ऑफ इंडिया कहा जाता था। धीरे- धीरे देश के अन्य हिस्सों में भी विद्युतीकरण का कार्य हुआ है। जैसे कलकत्ता से वर्धमान, चेन्नई से विल्लूपुरम, दिल्ली से शहादरा आदि का विद्युतीकरण हुआ। आज 64 हज़ार रुट किलोमीटर ट्रैक का भी विद्युतीकरण हो चुका है जो भारत में संपूर्ण ट्रैक का 96% से अधिक है।

आज विद्युतीकृत ट्रैक पर सम्पूर्ण भारत में ई एम यू/मेमू और विद्युत गाड़ियां चल रही हैं। भारत में विद्युतीकृत ट्रैक पर विद्युत ट्रेन इंजन तथा ईएमयू में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। विद्युतीकृत ट्रैक पर उपनगरीय रेल सेवा सबसे पहले मुंबई में जीआईपीआर और बीबीसीआई के अधीन (आज का मध्य तथा पश्चिम रेलवे) विद्युत उपनगरीय सेवा प्रारंभ हुई। जहां पर जेसप एनएसएसके ईब्रेडा तथा आईसीएफ कंपनी के ईएमयू की शुरुआत हुई। यह 1500 वोल्ट डीसी प्रणाली पर कार्य करते थे। मुंबई से बाहर एसी ईएमयू कार्य करते थे।

इसके बाद मुंबई में एसीडीसी तथा एसीईएमयू कन्वेनशनल ईएमयू को डीसी/एसी ईएमयू में बदलकर प्राप्त हुए तथा वीएचईएल, सीमेंन्स, बम्बार्डियर कंपनी ने बनाए जो 3-फेज ट्रैक्शन प्रणाली पर कार्य करते हैं। समयांतर के साथ ई.एम.यू. में आधुनिक टेक्नोलॉजी ए.डब्ल्यू.एस.पी.ए.सिस्टम एम.एम.आई.एस. आदि सिस्टम आए। एयर स्प्रिंग बेलो आदि ने ई.एम.यू. को काफी आरामदायक बना दिया। ई.एम.यू. सिस्टम 3 यूनिट 9 डिब्बे से 4 यूनिट 12 डिब्बे और अब 5 यूनिट से 15 डिब्बों की सब अर्बन ट्रेन में बदल गई है। समय के साथ एयर कंडीशंड रेक भी आ गए हैं।

विद्युत इंजन तथा रेल गाड़ियां

उपनगरीय गाड़ियों के समानांतर में जैसे-जैसे बाहर भी विद्युतीकरण हुआ, लंबी दूरी की गाड़ियां भी विद्युत इंजन से चलने लगी। भारत की पहली मेल एक्सप्रेस ट्रेन जो विद्युत इंजन से चली, वो डेक्कन क्वीन (दक्खन की रानी) थी जो 1930 में मुंबई से पुणे के बीच चली। इसी प्रकार वेस्टर्न रेलवे में चर्चगेट से सूरत तक फ्लाइंग रानी ट्रेन चली। इन लंबी दूरी की गाड़ियों को चलाने के लिए विद्युत इंजनों की आवश्यकता थी। ये इंजन मेट्रोपोलिटन विकर्स (एम.वी.) ने बनाए थे।

यह तत्कालीन गवर्नर सर लेस्ली विल्सन को समर्पित था। इंग्लैंड से आए इन इंजनों की सीरीज इ.ए., इ.बी. और इ.सी. तथा बाद में आए इ.एफ.1 इंजनों की देखरेख तथा मरम्मत के लिए 28 नवंबर 1928 में कल्याण विद्युत लोको शेड की स्थापना हुई। यह सभी लोको 1500 वोल्ट डीसी ट्रैक्शन प्रणाली पर कार्य करते थे। सन् 1955 में इंग्लिश इलेक्ट्रिक कंपनी लंदन से डब्ल्यू.सी.एम.-1 लोको आए तथा डब्ल्यू.सी.एम. -2 लोको कलकत्ता के लिए आए थे। जो 3000 वोल्ट

डीसी पर कार्य करता था, जिसे बाद में मुंबई कल्याण लोको शेड में लाकर 1500 वोल्ट डीसी प्रणाली में बदल दिया गया। इसके बाद हिटैची जापान से डब्ल्यू.सी.एम.-3 तथा डब्ल्यू. सी. एम-4 लोको आए।

भारत का पहला विद्युत इंजन डब्ल्यू.सी.एम.-5 सीरीज 20083 चितरंजन वर्कशॉप में बनाया गया था। यह इंजन 1963 में बना और इसका नाम भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आदरणीय श्री बाल गंगाधर लोकमान्य तिलक के नाम पर लोकमान्य दिया गया और उनको समर्पित था।

1971 में डब्ल्यू.सी.जी. -2 लोको बने जबकि भारत के अन्य भागों में ए.सी. ट्रेक्शन होने के कारण ए.सी. लोको डब्ल्यू. ए. एम. 1,2,3,4 डब्ल्यू.ए.पी. सीरीज के इंजन बने। समयांतर के साथ मुंबई डीवीजन को भी डी.सी. से ए.सी. प्रणाली में परिवर्तित करने की आवश्यकता हुई तथा संक्रमण काल में ए.सी./ डी.सी. इंजन डब्ल्यू.सी.ए.एम.-1, डब्ल्यू. सी.ए.एम. -2, डब्ल्यू.सी.ए.एम.-2, पीडब्ल्यू.सी.ए.एम. -3, तथा डब्ल्यू.सी.ए.जी.-1 इंजनों का निर्माण हुआ जो डी.सी. तथा ए.सी. दोनों प्रणाली पर कार्य करते थे। मुंबई डिवीजन को डी.सी. से ए.सी. प्रणाली में कन्वर्जन के बाद ये इंजन ए.सी. प्रणाली में बदल दिए गए। टेक्नोलॉजी में परिवर्तन होने के साथ 3-फेज इंजन डब्ल्यू.ए.पी.-5, डब्ल्यू.ए.पी. -7 डब्ल्यू.ए.पी.-9, डब्ल्यू.ए.जी. -9 एच, डब्ल्यू.ए.जी. -12 बी आदि इंजन आए जिनकी क्षमता 12000 एचपी है। समय के साथ वैक्यूम ब्रेक स्टॉक को एयर ब्रेक स्टॉक में परिवर्तित करने की आवश्यकता थी। इसलिए ऐसी ब्रेक प्रणाली को इंजन में विकसित करने की आवश्यकता थी। अतः संक्रमण काल में वैक्यूम ब्रेक लोको को ड्अल ब्रेक लोको में परिवर्तित किया गया जो वैक्यूम ब्रेक तथा एयर ब्रेक दोनों ट्रेनों पर कार्य करते थे। इस ड्अल ब्रेक लोको को बाद में एयर ब्रेक प्रणाली में परिवर्तित कर दिया गया। टेक्नोलॉजी के परिवर्तन के साथ लोको में इलेक्ट्रोनिक ब्रेक, एंटी कॉलीजन डिवाइस (ए.सी. डी.) आदि उपकरण आए। एफ.डी.सी.एस. प्रणाली एयर स्प्रिंग हाई स्पीड बोगी आदि का निर्माण हुआ जिसमें स्टैटिक इनवर्टर्स आदि उपकरण लगे।

उपनगरीय गाड़ियों के समानांतर में जैसे-जैसे बाहर भी विद्युतीकरण हुआ, लंबी दूरी की गाड़ियां भी विद्युत इंजन से चलने लगी। भारत की पहली मेल एक्सप्रेस ट्रेन जो विद्युत इंजन से चली, वो डेक्कन क्वीन (दक्खन की रानी) थी जो 1930 में मुंबई से पुणे के बीच चली।

ओवरहेड ईक्विपमेंट तथा सब स्टेशन

विद्युत प्रणाली को सुचारु रूप से चलाने के लिए जनरेटिंग स्टेशन से सब स्टेशन तक पॉवर सप्लाई जानी थी तथा ओवरहेड इक़्युप्मेंट, कॉन्टेक्ट वायर, कैटेनरी वायर तथा सपोर्ट मास्ट का जाल बिछाना था। जिस प्रणाली से पैटोंग्राफ के द्वारा लोको को विद्युत करेंट लेना था। यही कार्य सबसे जटिल तथा सबसे दुरूह था। प्रारंभिक दौर 1925 से 2016 तक संपूर्ण मुंबई सेंट्रल और वेस्टर्न रेलवे 1500 वोल्ट डीसी प्रणाली पर कार्य करता था तथा शेष भारत 25 केवी एसी प्रणाली पर कार्य कर रहे थे। 2003 से 2016 के बीच सम्पूर्ण डीसी को एसी ट्रैक्शन प्रणाली में परिवर्तित की गई।

डीसी एसी कन्वर्जन

भारत के शेष भाग की कर्षण प्रणाली को मुंबई की कर्षण प्रणाली से भिन्न होने पर कई तकनीकी कठिनाइयां आ रही थीं तथा यह आवश्यक हो गया था कि मुंबई की ट्रैक्शन प्रणाली को भी शेष भारत की तरह एसी प्रणाली में परिवर्तित किया जाए और यह परिवर्तन बिना मुंबई के उपनगरीय सेवा को प्रभावित किए हुए करना था। यह सबसे बड़ा चुनौती भरा समय और मुंबई डिवीजन का संक्रमण काल था, जहां संपूर्ण मुंबई डिवीजन की ओएचई के इंसुलेशन लेवल को 1500 वोल्ट डीसी से परिवर्तित करके 25 केवी एसी ट्रैकशन प्रणाली के लिए फिट करना था। बिजली के खंभे ओएचई उपकरण, सेक्शन इंसुलेटर, आॅयसोलेटर आदि बदलने थे। सभी डीसी सब स्टेशन को एसी सबस्टेशन में परिवर्तित करना था । आउट गोइंग वोल्टेज में परिवर्तन के कारण इनकमिंग वोल्टेज में भी परिवर्तन करना था। अतः सप्लाई का सोर्स तथा सप्लाई का स्थान दोनों ही परिवर्तित हो गया, जिसके लिए ट्रांसमिशन लाइन पावर केबल सबमें परिवर्तन करना पड़ा और किया गया। पहले जहां मध्य रेलवे में कुल 76 डीसी सब स्टेशन थे वहीं अब 18 सब स्टेशन + 3 नए कुल 21 ट्रैकशन सबस्टेशन हैं।

डीसी से एसी कन्वर्जन के समय संक्रमण काल में ऐसे इंजनों की जरूरत थी जो डीसी तथा एसी दोनों ट्रैक्शन पर कार्य कर सकें। अतः बी.एच.ई.एल भोपाल ने ऐसे इंजनों का निर्माण

इन सभी प्रकार की प्रणालियों को संचालित करने के लिए मशीन के साथ-साथ अति कुशल रेल कर्मी पर्यवेक्षक तथा अधिकारियों की भी बहुत बड़ी भूमिका होती है।

किया। यह इंजन डब्ल्यू.सीए.एम/1,डब्ल्यू.सीए.एम/2,डब्ल्यू.सीए.एम/2पी,डब्ल्यू.सीए.एम/3 तथा डब्ल्यू.सीए.जी/1 थे जो 1500वी डीसी/25 केवी एसी दोनों सप्लाई पर काम करते थे। इसी प्रकार ड्यूअल वोल्टेज पर काम करने वाले एस/डीसी ईएमयू का निर्माण हुआ। इसमें डीसी से एसी/डीसी परिवर्तित रेट्रो फिट रेक बी.एच.ई.एल, सीमेंस तथा बंबार्डियर कंपनियों द्वारा बनाए गए जिसमें एसी डीसी रेक शामिल हैं। कालांतर में एयर कंडीशनर रेक भी आए, एसी से डीसी रेक आने के बाद कन्वेंशन रेक / 3 फेज टेक्नोलॉजी पर आधारित रेक में परिवर्तित हो गए। लोको तथा ईएमयू रेक में समय-समय पर बहुत से तकनीकी सुधार किए गए, जैसे लोको में वैक्यूम ब्रेक से ड्यूअल ब्रेक/एयर ब्रेक एसीवी प्रणाली का विकास, इलेक्ट्रॉनिक ब्रेक सिस्टम डायनमिक ब्रेक आदि ईएमयू में ए.डब्ल्यू.एस सिस्टम पी.ए. सिस्टम डी.डी.यू. तथा एम.एम.आई.एस. कोच में एयर स्प्रिंग का प्रयोग आदि। ओएचई में इलेक्ट्रॉनिक रिले की जगह पर न्यूमेरिकल रिले लगाई गई। प्रोटेक्शन सिस्टम को 4050 स्तर पर तथा स्कैडा को पहले 1080 समय के साथ ही 25 केवी विद्युत कर्षण प्रणाली को 2x25 केवी विद्युत कर्षण प्रणाली में परिवर्तित किया जा रहा है और फिर 134 में परिवर्तित किया गया। खारबो में GIS टाइप का सब स्टेशन बनाया गया तथा और भी स्थानों पर GIS वेस सब स्टेशन बन रहे हैं।

हेड ऑन जनरेशन

एक नई प्रणाली हेड ऑन जेनरेशन लाई गई है जिसमें ओएचई की सप्लाई को 25KV सप्लाई जो पैटोंग्राफ से लोको में आती है उसे ट्रांसफर के टर्सियरी वाईडिग से मीडियम वोल्टेज में कन्वर्ट करके इन्टर व्हीकल कपलर की सहायता से कोच में सप्लाई दिया गया है जिससे लाइट फैन और एयर कंडीशनर तथा पेंट्रीकार के सारे उपकरण चल सके। अभी पावर कार में डीजल अल्टरनेटर तथा हैड ऑन जेनरेशन दोनों की सप्लाई रहती है जिससे ट्रेन की सप्लाई इलेक्ट्रीफाइड सेक्शन में हैड ऑन जेनरेशन पर तथा नान इलेक्ट्रिफाइड सेक्शन में पावर कार अल्टरनेटर पर चलें ।

कंट्रोल ऑफिस में परिवर्तन

ट्रैक्शन प्रणाली का औवर हेड इक्विपमेंट कंट्रोल ऑफिस से नियंत्रित होता है। ट्रैक्शन में परिवर्तन के बाद कंट्रोल ऑफिस में भी बड़े परिवर्तन किए गए। नए सिस्टम में परिवर्तन किये गये, नए सर्वर सिस्टम मिमिक डायग्राम तथा स्कैडा में परिवर्तन किया गया तथा टीएमएस प्रणाली लगाया गया ।

सिगनल प्रणाली में परिवर्तन

एसी ट्रेक्शन के साथ ही सिग्नलिंग के ट्रैक सर्किट में भी परिवर्तन करना पड़ा ---इंपीडेंस बॉड, ट्रैक सर्किटिंग, ए एफ टीसी (आडियो फ्रिकवेंसी टैक सर्किट), एचएफटीसी (हाई फ्रिकवेंसी टैक सर्किट एक्स काउन्टर –लागर रुट रिले इंटर लाकिंग (आर आर आई) सालिड स्टेट इंटर लॉकिंग(एस.एस.आई) आदि प्रणाली को प्रचलित किया गया तथा कंट्रोल ऑफिस में ट्रेन की मॉनिटरिंग स्क्रीन पर टीएमएस द्वारा किया जाता है।

इन सभी प्रकार की प्रणालियों को संचालित करने के लिए मशीन के साथ-साथ अति कुशल रेल कर्मी पर्यवेक्षक तथा अधिकारियों की भी बहुत बड़ी भूमिका होती है। जिसमें लाइन पर कार्य करने वाले स्टाफ लोको शेड तथा कार शेड के कर्मचारीगण कंट्रोल ऑफिस में कार्यरत कंट्रोलर तथा ट्रेन को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने वाले मोटरमैन, लोको पायलट, गार्ड, स्टेशन पर कंट्रोल करने वाले ऑपरेटिंग स्टाफ तथा रेल सेवा का लाभ उठाकर, रेलवे का आय स्रोत यात्रीगण भी शामिल हैं। इन सभी ने रेलवे प्रणाली को सदा जीवन्त रखा है और रेल यात्रा सतत चल रही है और आगे भी चलेगी।

उपसंहार

विद्युत कर्षण का एक शताब्दी का यह इतिहास कागज के चंद पन्नों में उकेरना गागर में सागर भरने के समान है परंतु यह इतिहास सतत चलने वाला इतिहास है अविरल धारा की तरह गंगा के तेज प्रवाह की तरह सच ही कहा है-

इस पथ का उद्देश्य नहीं है,शांति भवन में टिक जाना
किंतु पहुंचना उस मंजिल तक,जिसके आगे राह नहीं है।

– विनोद कुमार सिंह
उप मुख्य बिजली इंजीनियर

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी भाषा मॉडलों का भविष्य

इस लेख में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के विकास और उसकी भाषा मॉडलों, विशेषकर हिंदी भाषा मॉडलों की क्षमताओं और सीमाओं पर चर्चा की गई है। हिंदी भाषा मॉडलों की वर्तमान स्थिति और उनके भविष्य की संभावनाओं पर भी विचार किया गया है। इसके अलावा, इसमें एआई के इतिहास और उसके विकास की गति का भी संक्षिप्त वर्णन किया गया है जिसमें विशेष रूप से लेखन क्षमता और भाषा समझ पर प्रकाश डाला गया है। जिन दिनों हमारे दिमागों से कोविड महामारी का भय उतर रहा था, उन्हीं दिनों में एक ऐसी क्रांति का आगाज हो रहा था जो विशेषतौर पर लेखकों, कवियों, संगीतकारों, चित्रकारों, शिक्षकों-प्राध्यापकों और सॉफ्टवेयर कोडर्स के लिए बड़ी चुनौती पेश करने वाली थी।

यह चुनौती थी - मशीनी बुद्धिमत्ता की, जिसे 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' या 'आर्टिफिशियल इंटलीजेंस' (एआई) कहा जाता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आने के बाद कई सॉफ्टवेयर बहुत सस्ते हो गए हैं। यद्यपि, इतिहास के पन्नों को देखें तो इसकी शुरुआत 50 के दशक से भी पहले हो चुकी थी परंतु कोविड महामारी के कारण जब लॉकडाउन लगा और लोगों की ऑनलाइन गतिविधियों में वृद्धि हुई तब इसके विकास को अचानक गति मिली। लोगों को समझ आने लगा कि कोविड के दौरान विश्व की तकनीकी दिग्गज कंपनियों द्वारा लाए गए 'एआई स्प्रिंग' हमारे जीवन को जल्दी ही बड़े पैमाने पर बदलने लगेगा और यह वसंत लंबे समय तक चलेगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भाषा मॉडल्स

वास्तव में कृत्रिम बुद्धिमत्ता किसी एक तकनीक का नाम नहीं है बल्कि यह कई प्रौद्योगिकियों की समेकित उपलब्धियों की एक काम चलाऊ संज्ञा है। विभिन्न प्रौद्योगिकियां मिलकर कंप्यूटरों को कुछ ऐसे जटिल कार्यों को करने की क्षमता प्रदान करती हैं जिन्हें पहले सिर्फ मनुष्य ही कर सकते थे। दूसरे शब्दों में कई तकनीकों का संयोजन अब 'बुद्धिमत्ता' का निर्माण कर रहा है जो अब तक सिर्फ मनुष्य व कुछ अन्य चेतन प्राणियों की विशेषता थी।' इनमें से सबसे चर्चित है मशीनों द्वारा किया जाने वाला लेखन।

विशाल भाषा मॉडल

आखिर वह क्या चीज है, जो इसे आदमी की तरह लेखन के योग्य बनाती है?- कृत्रिम बुद्धिमत्ता के निर्माण में जिन प्रौद्योगिकियों की भूमिका है उनमें विशाल भाषा मॉडल हैं। मशीनों को मनुष्य जैसा लेखन करने के योग्य बनाने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका 'विशाल भाषा मॉडल' की ही है। तकनीक की दुनिया में इसे एलएलएम के संक्षिप्त नाम से जाना जाता है। इस लेख में हम इसे 'भाषा मॉडल' के नाम से संबोधित करेंगे।

भाषा मॉडल की संरचना

अगर आप समझना चाहते हैं कि मशीन लेखन व अन्य रचनात्मक कामों को कैसे अंजाम देती है तो हमें इन 'विशाल भाषा मॉडलों की संरचना को कम-से-कम मोटे तौर पर समझना होगा। 'भाषा मॉडल' भाषा के डिजिटल नमूनों के अति-विशाल भंडार होते हैं जिन्हें टेक्स्ट जेनरेट (पाठ तैयार) के लिए डिजाइन किया जाता है।

ये मॉडल अरबों-खरबों शब्दों को 'पढकर' भाषा का सामान्य पैटर्न सीखते हैं और उसके आधार पर मौलिक लेखन करने की क्षमता विकसित करते हैं। इस मामले में यह मानव मस्तिष्क के कामकाज के तरीके का अनुसरण करते हैं। इन्हें भारी मात्रा में डेटा-सेट (भाषा के नमूनों) से प्रशिक्षित किया जाता है, जिनमें डिजिटल रूप में उपलब्ध किताबें, लेख, ब्लॉग पोस्ट, वेब पेज, फेसबुक, ट्विटर (एक्स) आदि पर मौजूद हमारी-आपकी पोस्ट शामिल हैं।

इंटरनेट पर मौजूद सभी प्रकार की ऑडियो-वीडियो सामग्री, विकिपीडिया कॉर्पस[2], कॉमन क्रॉल और अकादमिक रिपॉजिटरियों' आदि पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग भी इनके प्रशिक्षण के लिए किया जाता है।

इनके प्रशिक्षण के दौरान ध्यान रखा जाता है कि इनका सामना ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के साथ-साथ आम बोलचाल में प्रयुक्त होने वाली अधिकाधिक प्रकार की भाषा-शैलियों, वाक्य-संरचनाओं, शब्द-प्रयोगों आदि से हो।

भाषा मॉडल की कार्यप्रणाली

भाषा मॉडल सीखने की प्रक्रिया में शब्दों को टोकन (छोटे-छोटे टुकड़ों) में बदलता है और उनके वाक्यों में प्रयोग के पैटर्न को समझता है। सीखे हुए पैटर्न का उपयोग नया पाठ लिखने में करता है। इस प्रकार यह पहले से लिखित और बोली गई सामग्री को देख-सुनकर भाषा की बनावट को समझते हैं।

इस प्रक्रिया में ये मशीन लर्निंग' के माध्यम से स्वयं भी सीखते जाते हैं और उसी ज्ञान के आधार पर नई सामग्री लिखने में सक्षम हो जाते हैं। यह भाषा मॉडल कितने विशाल होते हैं, इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि इनमें 100 मिलियन से 1.5 ट्रिलियन 'डेटासेट पैरामीटर का प्रयोग किया जा रहा है जो विभिन्न भाषओं, विषयों और शैलियों के होते हैं। नए-नए भाषा मॉडलों में इन पैरामीटरों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है।

भाषा मॉडल का इतिहास:-

भाषा-मॉडल का आधार नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (एनएलपी)" नामक प्रौद्योगिकी है। इस प्रौद्योगिकी का इतिहास शीत युद्ध के समय से शुरू होता है जब तकनीकी और वैचारिक वर्चस्व के लिए अमेरिका और सोवियत संघ के बीच प्रतिस्पर्धा चरम पर थी। शीत युद्ध के शुरुआती दौर में 7 जनवरी, 1954 को पहली बार कंप्यूटर ने 60 रूसी वाक्यों का अंग्रेजी में अनुवाद किया था जिसे अमेरिकी कंपनी आईबीएम और जॉर्जटाऊन यूनिवर्सिटी, वाशिंगटन ने मिलकर अंजाम दिया था। यह घटना मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण कदम मानी जाती है जिसने एनएलपी के विकास को दिशा पदान कर दी थी। इसके बाद कई दशकों तक इसे रोजमर्रा की जरूरतों के लिए उपयोगी बनाने के लिए कोशिशें की जाती रहीं लेकिन कोई ठोस परिणाम नहीं मिला।

1990 के दशक में जैसे-जैसे कंप्यूटर विकसित होते गए, इसके परिणाम आने लगे। बाद के वर्षों में गूगल आदि सर्च इंजनों के अल्गोरिथम एनएलपी के आधार पर ही उन्नत हुए। एनएलपी की तकनीक कंप्यूटर विज्ञान और भाषा-विज्ञान को मिलाकर काम करती है। इस प्रौद्योगिकी के माध्यम से कंप्यूटर मानवीय वाणी को पहचानने और आवाज के डेटा को टेक्स्ट डेटा में बदलने में सक्षम हुए। अर्थात् अब वे मनुष्य द्वारा बोले हुए शब्दों को सुनकर उन्हें लिख सकते थे। उदाहरण के लिए गूगल ट्रांसलेट, सीरी, अलेक्सा, गूगल अस्सिटेंट आदि एनएलपी पर ही काम करते हैं।

बड़े भाषा मॉडल और कृत्रिम बुद्धिमत्ता:-

वर्तमान में जीपीटी चैट, जेमिनी, सिंथेसिया, मिडजर्नी, मरफ़, साउन्डरा और स्लाइड्स आदि कई एआई प्रचलन में हैं। जैसा कि पहले कहा गया, 'बड़े भाषा मॉडल' का विकास इसी एनएलपी की अगली कड़ी है। इसके विकास में तेजी 2010 के दशक में इंटरनेट के प्रसार के कारण डेटा की उपलब्धता और कंप्यूटिंग शक्ति में वृद्धि के कारण हुई। 2013 में गूगल ने डीप माइड की स्थापना की, जिसने 'भाषा-मॉडल' के विकास में सबसे अधिक योगदान दिया लेकिन असली परिणाम 2022 के अंत में आया। 30 नवंबर, 2022 को ओपेन एआई ने वह कारनामा कर दिखाया जिसे आज दुनिया आश्चर्य से देख रही है। यह पहल थी - ओपन एआई द्वारा अपने भाषा मॉडल के नए संस्करण को चैट जीपीटी 3.5' नाम से आम जनता के लिए जारी कर देना।

भाषा मॉडल का प्रदर्शन:

भाषा मॉडल कई अनूठे काम कर सकते हैं जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं:

1) मौलिक रचनाएं लिखना।
2) विभिन्न संगीत शैलियों में संगीत-रचना।
3) समाचार लेखन।
4) हमारी आवश्यकता के अनुसार ईमेल का उत्तर या हमारे लिए आवेदन-पत्र लिखना।
5) आलोचनात्मक सामग्री तैयार करना, जैसे कि विभिन्न विषयों पर लेख, टिप्पणियां।
6) 100 से अधिक भाषाओं में धाराप्रवाह अनुवाद, जिनमें हिंदी भी शामिल है।
7) हमारे प्रश्नों का व्यापक और शोधपूर्ण तरीके से उत्तर देना।

हिंदी में भाषा मॉडल:-

हिंदी में भी हम जितनी उम्मीद कर रहे थे, यह भाषा मॉडल उससे कहीं ज्यादा बेहतर काम करने लगे हैं। यह हिंदी में भी अपने कामों से हमें आश्चर्यचकित कर रहे हैं लेकिन वस्तुतः विज्ञान, तकनीक और नवाचार के मामले में हमारी आशाएं बहुत छोटी हैं। वास्तविकता यह है कि हिंदी समेत सभी भारतीय भाषाओं में भाषा मॉडलों की दक्षता अंग्रेजी, चाइनीज, स्पेनिश, फ्रेंच और जर्मन आदि की तुलना में बहुत कम है। हिंदी के अतिरिक्त बंगाली, मराठी, तमिल, तेलुगु और गुजराती में भी यह काम करने लगा है लेकिन सवाल इसकी सटीकता का है जो कि भारतीय भाषाओं में तुलनात्मक रूप से कम है। स्वाभाविक तौर पर अंग्रेजी में इन भाषा मॉडलों का प्रदर्शन सबसे अच्छा है। अंग्रेजी के बाद फ्रेंच का स्थान है। तीसरा स्थान स्पेनिश का है। चाइनीज जैसी जटिल भाषा में भी यह भाषा-मॉडल अच्छी तरह काम करने लगे हैं। हालांकि अंग्रेजी और फ्रेंच की तुलना में चाइनीज में इसकी सटीकता थोड़ी कम है। यह चीन द्वारा बनाए गए देशी भाषा मॉडलों का कमाल है।

हिंदी भाषा मॉडलों का भविष्य:-

भाषा मॉडलों की सफलता दो चीजों पर निर्भर करती है। इनमें से एक है- भाषा की जटिलता और दूसरी है- डेटा की उपलब्धता। कुछ भाषाएं दूसरों की तुलना में अधिक जटिल होती हैं। उदाहरण के लिए- अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश और जर्मन की तुलना में हिंदी भाषा कछ अधिक जटिल है। हिंदी के व्याकरणिक नियम इन भाषाओं की तुलना में न सिर्फ अधिक सूक्षम हैं बल्कि कई मामलों में इसके मानक भी निधर्धारित नहीं हैं। लिंग, वचन, कारक, विभक्ति जैसे कई अन्य जटिल पहलू इसमें हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार,इस समय भारत में लगभग 850 एआई स्टार्टअप्स काम कर रहे हैं। भारत में 65% एआई स्टार्टअप्स एप्लीकेशन पर और 22% एआई स्टार्टअप्स टूलिंग पर काम कर रहे हैं केवल 3% एआई स्टार्टअप्स भारत में इंफ्रास्ट्रक्चर एवं फाउंडेशन मॉडल पर काम कर रहे हैं। इस प्रकार हमारे यहां लगभग उन्हीं मॉडलों पर काम किया जा रहा है जो पहले से उपलब्ध हैं। इस प्रकार भारत को इंजीनियरिंग और डेवलपमेंट के अंतर्गत कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुसंधान पर भी ध्यान देने की जरूरत है।

निष्कर्ष:-

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में हो रही प्रगति और हिंदी भाषा के लिए विकसित किए जा रहे मॉडल भविष्य में भारतीय भाषाओं की अधिक प्रभावी और सटीक पहचान बना सकते हैं लेकिन इसके लिए डेटा की गुणवत्ता और सटीकता में सुधार की आवश्यकता है। साथ ही, हमें इस दिशा में और ज्यादा काम करने की आवश्यकता है ताकि हिंदी जैसी भाषाओं का भी मॉडलिंग में प्रभावी रूप से उपयोग किया जा सके। वस्तुतः विशाल वैश्विक तकनीकी शक्तियां हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की मॉडलिंग की दिशा में पूरी ताकत और व्यवसायिक प्रतिबद्धता से सक्रिय हैं।

इस दिशा में उनकी प्रगति बहुत तेज है। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और मेटा हिंदी भाषा मॉडल विकसित करने में काफी निवेश कर रहे हैं। आखिर लगभग 140 करोड़ जनसंख्या वाला भारत उनके लिए दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे सुलभ बाजार है। भाषा, प्रभुत्व का सबसे आसान, सबसे शक्तिशाली और सबसे टिकाऊ माध्यम है। जिनके पास भाषा मॉडलों की चाभी होगी वे हमारे विचारों और कार्यकलापों को मनचाही दिशा में बदलने में सक्षम होंगे। हमें इस पर समय रहते विचार करने की जरूरत है। हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मायानगरी के ग्लोबल युग में हैं इसमें तकनीक के विकास को किसी क्षेत्रीय या राष्ट्रवादी उन्माद में बदलने की कोशिश लाभकारी सिद्ध नहीं होगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता कई देशों में आपसी झगड़े कराने के लिए भी एक कारण बन सकती है।

– डॉ.सुशील कुमार शर्मा
राजभाषा अधिकारी

भारत सरकार की प्रमुख हिंदी प्रोत्साहन एवं पुरस्कार योजनाएं

भारत सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन पर आधारित है इसलिए भारत सरकार के अधीन स्थापित कार्यालयों/उपक्रमों और संस्थानों आदि में भारत सरकार की विभिन्न हिंदी प्रोत्साहन एवं पुरस्कार योजनाएं लागू की गई हैं।

(1) हिंदी प्रशिक्षण पुरस्कार योजनाएं

वैयक्तिक वेतन– हिंदी भाषा, हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि की परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने पर केंद्र सरकार के अधिकारियों/कर्मचारियों को 12 महीने की अवधि के लिए एक वेतन वृद्धि के बराबर का वैयक्तिक वेतन देय है।

(क) प्रबोध परीक्षा– वैयक्तिक वेतन केवल उन्हीं अराजपत्रित कर्मचारियों को दिया जाता है जिनके लिए प्रबोध पाठ्यक्रम अंतिम पाठ्यक्रम के रूप में निर्धारित किया गया है और जो इस परीक्षा को 55 प्रतिशत या अधिक अंक लेकर उत्तीर्ण करते हैं। राजपत्रित अधिकारियों को प्रबोध परीक्षा उत्तीर्ण करने पर वैयक्तिक वेतन नहीं दिया जाता है।

(ख) प्रवीण परीक्षा– वैयक्तिक वेतन केवल उन्हीं अधिकारियों/कर्मचारियों को दिया जाता है जिनके लिए प्रवीण पाठ्यक्रम अंतिम पाठ्यक्रम के रूप में निर्धारित किया गया है–

(1) अराजपत्रित कर्मचारियों को 55 प्रतिशत या अधिक अंक लेकर प्रवीण परीक्षा उत्तीर्ण करने पर।

(2) राजपत्रित अधिकारियों को 60 प्रतिशत या अधिक अंक लेकर प्रवीण परीक्षा उत्तीर्ण करने पर।

(ग) प्राज्ञ परीक्षा- वैयक्तिक वेतन केवल उन्हीं सरकारी अधिकारियों/कर्मचारियों (राजपत्रित /अराजपत्रित) को प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण करने पर दिया जाता है जिनके लिए यह पाठयक्रम अंतिम पाठ्यक्रम के रूप में निर्धारित किया गया है।

(1) अराजपत्रित कर्मचारियों को उत्तीर्णांक लेकर प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण करने पर।

(2) राजपत्रित अधिकारियों को 60 प्रतिशत या अधिक अंक लेकर प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण करने पर।

पृष्ठ 84 पर जारी.....

यदि परिश्रम करने के बाद भी सफलता न मिले तो लक्ष्य नहीं बल्कि तरीका बदलने की जरूरत होती है।

कार्य-जीवन असंतुलन: कारण और समाधान

हम सभी अपने जीवन में कई बार शारीरिक या मानसिक रूप से व्यस्त रहते हैं। हम अपने कार्यों की योजना बनाते हैं और खुद को, अपने परिवार को, और अपनी जिम्मेदारियों को निर्धारित समय- सीमा के भीतर पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। फिर भी, अधिकांश समय ये योजनाएँ किसी न किसी रूप में टूट जाती हैं और हम देखते हैं कि काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना मुश्किल हो जाता है। काम और व्यक्तिगत जीवन को अलग-अलग बांधना वास्तविकता से बहुत दूर होता है।

औद्योगिक मनोविज्ञान में स्पिलओवर परिकल्पना के अनुसार, जीवन संतुष्टि और नौकरी की संतुष्टि एक-दूसरे से सकारात्मक रूप से जुड़ी होती हैं। इसका मतलब यह है कि अगर आपका व्यक्तिगत जीवन खुशहाल है तो आपके कार्य जीवन, में भी संतोष की संभावना अधिक होती है लेकिन यदि आपका काम तनावपूर्ण या निराशाजनक है तो यह आपके व्यक्तिगत जीवन को भी प्रभावित करता है।

यह समझना जरूरी है कि कार्य-जीवन संतुलन का मतलब यह नहीं है कि आप अपने काम और निजी जीवन को पूरी तरह से अलग-अलग बनाए रखें, न ही यह बात मल्टीटास्किंग की तरफ इशारा करता है क्योंकि शोध से यह साबित हुआ है कि मल्टीटास्किंग न तो उत्पादक है और न ही प्रभावी। इसके बजाय, कार्य-जीवन संतुलन का मतलब है कि आप दोनों क्षेत्रों में ऐसे तरीके से समय और ऊर्जा लगाते हैं जो आपके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हो।

आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया में हमें अपने कार्यों को दूसरों से पहले प्रस्तुत करने के लिए हर समय संघर्ष करना पड़ता है। काम की अधिकता और तकनीकी साधनों की पहुँच ने इस संतुलन को और अधिक चुनौतीपूर्ण बना दिया है। आजकल काम का तनाव घर तक पहुंचने लगा है और हम घर पर भी काम की जिम्मेदारियाँ लेकर आ जाते हैं। इसी तरह, सप्ताहांत पर दोस्तों के साथ समय बिताने की योजना बनाने में फोन और ई-मेल की निरंतर सूचनाएँ हमें मानसिक रूप से व्यस्त रखती हैं और इस तरह कार्य में उत्पादकता और पारिवारिक आनंद दोनों पर असर डालती हैं।

असमर्थित कार्यस्थल नीतियाँ भी कार्य-जीवन संतुलन में एक बड़ी रुकावट बनती हैं जबकि अनुसंधान से यह पता चलता है कि लचीले कामकाजी घंटे कर्मचारियों की उत्पादकता और संतुष्टि को बढ़ाते हैं, अधिकांश कार्यस्थल अभी भी कठोर 9 से 5 की अनुसूची को ही प्राथमिकता देते हैं। इसके कारण, कर्मचारी लगातार तनाव में रहते हैं और अपने व्यक्तिगत जीवन को उचित समय नहीं दे पाते।

कार्य-जीवन संतुलन बनाने में एक और बाधा घर पर तनावपूर्ण माहौल है। बच्चों की देखभाल, बुजुर्ग माता-पिता की जिम्मेदारियाँ और पारिवारिक संघर्ष उन लोगों के लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण होते हैं। इसके अलावा, व्यक्तित्व जैसे निराशावाद, अंतर्मुखता और पहल की कमी भी कार्य-जीवन संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अब सवाल यह उठता है कि ऐसी परिस्थितियों में कार्य-जीवन में संतुलन कैसे बनाएं?

1. जागरूकता और कार्यभार प्रबंधन:

सबसे पहले, यह जरूरी है कि हम यह जानें कि हम कितना काम घर ले जा रहे हैं और घर में कितना काम कर रहे हैं। एक सप्ताह के लिए अपने कार्यों का रिकॉर्ड रखें और देखें कि आप कहां समय बर्बाद कर रहे हैं। फिर उन कार्यों पर ध्यान केंद्रित करें जो आपके लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए,

औद्योगिक मनोविज्ञान में स्पिलओवर परिकल्पना के अनुसार, जीवन संतुष्टि और नौकरी की संतुष्टि एक-दूसरे से सकारात्मक रूप से जुड़ी होती हैं।

अगर आपको काम के बाद अपने बच्चे को स्कूल से लाना बहुत संतुष्टिदायक लगता है तो यह सुनिश्चित करें कि आपकी नौकरी ऐसी हो जो आपको इस स्वतंत्रता की अनुमति दे।

2. "नही" कहना सीखें:
अपने कार्यों की सूची को प्राथमिकता के आधार पर क्रमबद्ध करें। आपको यह पहचानने की जरूरत है कि कौन से कार्य अनिवार्य हैं और कौन से आप छोड़ सकते हैं। सोशल मीडिया नोटिफिकेशन्स को बंद करें और परिवार के साथ छुट्टियों के दौरान अपने आधिकारिक ई-मेल्स पर "नो कॉल अर्ली एक्सेप्ट इन इमरजेंसी" संदेश डालें। जब आप ऐसा करेंगे तो धीरे-धीरे आप और आपके आसपास के लोग इस संतुलन को समझने लगेंगे।

3. माइंडफुल टाइमआउट:
हमें यह याद रखना चाहिए कि काम करते समय हमें कुछ समय खुद के लिए भी निकालना चाहिए। हम इंसान हैं, मशीन नहीं। यदि हम लगातार काम करते रहें तो हमारी उत्पादकता पर असर पड़ेगा। इसलिए, थोड़ी देर का ब्रेक लें लेकिन जब ब्रेक लें तो मानसिक रूप से भी काम से दूर हो जाएं। सोशल मीडिया या किसी और से बात करते हुए, मानसिक रूप से काम से छुट्टी लें और फिर ताजगी के साथ वापस काम पर लौटें।

4. जिम्मेदारियाँ साझा करें:
जब आपके पास अत्यधिक काम हो और घर की जिम्मेदारियाँ भी हों तो यह जरूरी है कि आप दूसरों से मदद लें। अगर आपको अपने भाई से बाइक की मरम्मत करवानी है तो इसका मतलब यह नहीं है कि आप आलसी हैं। ऐसे में, आप अपनी जिम्मेदारियों को परिवार के साथ साझा कर सकते हैं और यह पारिवारिक शांति बनाए रखने में मदद करेगा। इसके साथ ही, परिवार के सदस्य और आप मिलकर कार्यों का सामूहिक समाधान निकाल सकते हैं।

कुल मिलाकर, कार्य-जीवन संतुलन एक निरंतर प्रक्रिया है जो समय और परिस्थितियों के साथ बदलती रहती है। इसमें खुद को समझना, प्राथमिकताएँ तय करना और सामंजस्यपूर्ण तरीके से काम और परिवार के बीच संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है। कभी-कभी असंतुलन अनिवार्य हो सकता है, लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि हम अपनी स्थिति को समझें और हर परिस्थिति में सही विकल्प चुनें।

– वृंदा एवं दिनेश रूपरेलिया
उप महाप्रबंधक (सिग्नल)

बसन्त

महके सारा दिग दिगन्त,
लो फिर आया प्यारा बसन्त,
किया पतझड़ ने सादर अभिनन्दन,
हे बसन्त देवता शत-शत वन्दन॥
खेतों में छाई हरियाली,
झूम रही है जाली- डाली,
झूम रहे कृषकों के वृंद,
लो फिर आया प्यारा बसन्त॥
बौराई आमों को डाली,
गा उठी कोयल की कव्वाली,
खिले अधखिले देखो देखो फूल,
भौरे, गायें अपना पथ भूल,
झूम रहे कुसुमों के वृंद,
लो फिर आया प्यारा बसंत॥
धरती ओढे पीली चादर,
भरा हुआ सुमनों का सागर,
सूरज की किरणें गरमाई,
जाग उठी है अब तरुणाई,
हो गया अब जाड़े का अन्त,
लो फिर आया प्यारा बसन्त॥

– राजेश सिंह
उप मुख्य बिजली इंजीनियर

स्थिरता का महत्व

1. स्थिरता की अवधारणा-

स्थिरता की अवधारणा समाज के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं के समग्र संतुलन को ध्यान में रखते हुए विकसित हुई है। यह विचार 20 वीं शताब्दी के अंत में सामाजिक न्याय, पारिस्थितिक संरक्षण और वैश्विकता के समन्वय से उत्पन्न हुआ। 'स्थिरता' की पहली बार प्रभावी रूप से चर्चा 1972 में 'ब्लूप्रिंट फॉर सर्वाइवल' नामक प्रभावशाली पर्यावरणविद् पुस्तक में की गई, जिसने तत्कालीन पर्यावरणीय समस्याओं की भयावहता की ओर ध्यान आकर्षित किया। 1983 में, संयुक्त राष्ट्र ने नॉर्वे के प्रधानमंत्री ग्रो हार्लेम ब्रंटलैंड को पर्यावरण और विकास पर आयोग स्थापित करने का आदेश दिया। इस आयोग ने स्थिरता की परिभाषा दी जो कि न केवल वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करती है बल्कि भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को भी प्रभावित न करती हो।

2. स्थिरता के तीन मुख्य स्तंभ-

स्थिरता को मुख्य तीन स्तंभों में विभाजित किया गया है जो पर्यावरणीय स्थिरता, आर्थिक स्थिरता और सामाजिक स्थिरता हैं। ये तीन स्तंभ स्थिर विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जिससे न केवल प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण होता है बल्कि समाज के समग्र विकास को भी बढ़ावा मिलता है।

2.1 पर्यावरणीय स्थिरता-

पर्यावरणीय स्थिरता का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना और पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखना है। इसमें यह सुनिश्चित करना कि हम अपने दैनिक जीवन के लिए आवश्यक संसाधनों का उपयोग इस प्रकार से करें कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी ये उपलब्ध हों। इसका उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और जैव विविधता की रक्षा करना है। इसके अंतर्गत विभिन्न पहलुओं को शामिल किया जाता है, जैसे प्रदूषण की रोकथाम, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, और पारिस्थितिकीय तंत्र को मजबूत करना।

2.2 आर्थिक स्थिरता-

आर्थिक स्थिरता का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि समाज के सभी वर्गों को समान अवसर मिलें और वे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सक्षम हों। यह आर्थिक गतिविधियों को टिकाऊ बनाए रखने का प्रयास है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों की हानि कम हो और हर व्यक्ति के पास अपनी जीवनशैली को बनाए रखने के लिए आवश्यक संसाधन हों। इसमें नवीकरणीय ऊर्जा, हरित प्रौद्योगिकी, और पर्यावरण के अनुकूल उत्पादन प्रणालियाँ शामिल हैं। आर्थिक स्थिरता का उद्देश्य यह भी है कि विकास के लाभों का समान वितरण हो, जिससे समाज में आर्थिक असमानताएँ कम हो सकें।

2.3 सामाजिक स्थिरता-

सामाजिक स्थिरता का मुख्य उद्देश्य यह है कि समाज में हर व्यक्ति को बुनियादी अधिकारों का समान रूप से लाभ मिले। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, रोजगार और आवास जैसी आवश्यकताओं की उपलब्धता शामिल है। सामाजिक स्थिरता यह सुनिश्चित करती है कि समाज में किसी भी प्रकार की असमानता या भेदभाव न हो और सभी वर्गों को समान अवसर मिले। इस प्रकार, सामाजिक स्थिरता का उद्देश्य सामाजिक न्याय, समानता और मानवाधिकारों की रक्षा करना है।

3. स्थिरता क्यों महत्वपूर्ण है?-

स्थिरता का महत्व इसलिए है क्योंकि यह न केवल हमारे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करती है बल्कि यह सामाजिक न्याय और समानता के सिद्धांतों को भी प्रोत्साहित करती है। स्थिरता के अभ्यास से हम न केवल प्रदूषण को कम कर सकते हैं बल्कि जैव विविधता और पारिस्थितिकीय तंत्र की रक्षा भी कर सकते हैं। जब कंपनियां और सरकारें स्थिरता के

स्थिरता का महत्व इस बात में निहित है कि यह हमारे भविष्य के लिए आवश्यक संसाधनों को बचाने और संरक्षित करने में मदद करती है।

सिद्धांतों का पालन करती हैं तो यह न केवल ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने में मदद करता है बल्कि यह समाज में एक सकारात्मक बदलाव भी लाता है। इससे जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है और एक समृद्ध और स्वस्थ समाज की नींव रखी जाती है।

4. भारत का स्थिरता में योगदान-

भारत का स्थिरता की दिशा में योगदान वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण है। भारतीय संस्कृति में 'वसुधैव कुटुम्बकम' (विश्व एक परिवार है) का सिद्धांत निहित है जो स्थिरता के सिद्धांतों से मेल खाता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2015 में संयुक्त राष्ट्र सतत विकास शिखर सम्मेलन में यह कहा था कि भारत के विकास एजेंडे का अधिकांश हिस्सा सतत विकास लक्ष्यों में प्रतिबिंबित होता है। भारत ने इस विचार को अपनी नीति का हिस्सा बनाया और सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कई पहलें की हैं।

भारत ने सार्वभौमिक ग्रामीण विद्युतीकरण, स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा के विस्तार, सभी के लिए सड़क और डिजिटल कनेक्टिविटी और स्वच्छता जैसे महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध किया है। इसके अतिरिक्त, भारत ने सामाजिक और पर्यावरणीय लक्ष्यों की दिशा में भी कई पहलें की हैं जो वैश्विक स्थिरता के प्रयासों में सहायक हैं। इसके अलावा, भारत ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और पर्यावरणीय नुकसान को कम करने के लिए कई योजनाओं की शुरुआत की है।

5. स्थिरता का वैश्विक दृष्टिकोण-

स्थिरता अब केवल एक विचारधारा नहीं रही बल्कि यह एक वैश्विक आंदोलन बन चुकी है। 1992 के पृथ्वी सम्मेलन में, 'सतत विकास' को 21 वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण नीति के रूप में स्थापित किया गया। यह सम्मेलन स्थिरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था, जिसने दुनिया भर में एक नए प्रतिमान की शुरुआत की। पृथ्वी शिखर सम्मेलन के बाद, स्थिरता के सिद्धांतों ने वैश्विक निर्णयों को प्रभावित किया और अब यह एक सार्वभौमिक पद्धति के रूप में उभरा है जो यह निर्धारित करने में मदद करता है कि क्या मानव विकल्प पर्यावरणीय और सामाजिक जीवन शक्ति उत्पन्न करेंगे या नहीं।

6. स्थिरता के लाभ-

स्थिरता के अनेक लाभ हैं जो न केवल पर्यावरण को, बल्कि समाज और अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित करते हैं। कुछ प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं-

- **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण:** स्थिरता यह सुनिश्चित करती है कि हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस प्रकार से करें कि आने वाली पीढ़ियों के लिए वे उपलब्ध रहें।
- **प्रदूषण की रोकथाम:** स्थिरता का पालन करने से प्रदूषण में कमी आती है जो पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने में मदद करता है।
- **सामाजिक समानता:** स्थिरता का उद्देश्य समाज के हर वर्ग को समान अवसर प्रदान करना है जिससे सामाजिक समानता और न्याय की स्थापना होती है।
- **आर्थिक समृद्धि:** स्थिरता से आर्थिक गतिविधियाँ अधिक टिकाऊ होती हैं जिससे आर्थिक संकट कम होते हैं और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है।

उपसंहार-

स्थिरता का महत्व इस बात में निहित है कि यह हमारे भविष्य के लिए आवश्यक संसाधनों को बचाने और संरक्षित करने में मदद करती है। यह केवल पारिस्थितिकी की रक्षा नहीं करती बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक न्याय को भी बढ़ावा देती है। स्थिरता के सिद्धांतों को जीवन में लागू करने से हम न केवल प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं बल्कि हम एक समावेशी, समृद्ध और स्वस्थ समाज की दिशा में भी आगे बढ़ सकते हैं। इसलिए, स्थिरता का अभ्यास अब समय की आवश्यकता बन चुका है और यह मानवता के उज्जवल भविष्य के लिए आवश्यक है। सभी देशों को यह समझना होगा कि स्थिरता केवल एक पर्यावरणीय आवश्यकता नहीं है बल्कि यह एक समग्र दृष्टिकोण है जो सामाजिक और आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय संतुलन को भी सुनिश्चित करता है। स्थिरता के बिना कोई भी राष्ट्र या समाज दीर्घकालिक रूप से विकसित नहीं हो सकता है। इस दृष्टिकोण से स्थिरता न केवल आज की आवश्यकता है बल्कि यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी आवश्यक है।

– के. पद्मसुंदरन
सहायक कार्मिक अधिकारी

सिंगरौली कोयला खदानों का भारत के विकास में योगदान

सिंगरौली, मध्य प्रदेश में स्थित कोयला खदानें भारतीय कोयला उद्योग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह क्षेत्र न केवल मध्य प्रदेश, बल्कि पूरे भारत के ऊर्जा उत्पादन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सिंगरौली का कोयला खदान क्षेत्र भारत के सबसे बड़े और प्रमुख कोयला खदान क्षेत्रों में से एक है, जहां से कई थर्मल पावर स्टेशनों के लिए कोयला आपूर्ति की जाती है। इस लेख में हम सिंगरौली के कोयला खदानों की भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक महत्व, पर्यावरणीय प्रभाव, और इस उद्योग से जुड़े सामाजिक और आर्थिक पहलुओं पर विस्तृत रूप से चर्चा करेंगे।

1. सिंगरौली की भौगोलिक स्थिति-

सिंगरौली मध्य प्रदेश राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है। यह सिंगरौली जिले में स्थित है जो उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित है। यहाँ की कोयला खदानें विंध्याचल पर्वत के आस-पास की पठार के हिस्से के रूप में स्थित हैं जो भारत के केंद्रीय क्षेत्र का एक प्रमुख भौगोलिक और खनिजीय संरचना है।सिंगरौली में विशाल कोयला खनिज संसाधन हैं जो इस क्षेत्र को खनिज संपत्ति से भरपूर बनाते हैं। इस क्षेत्र में कोयला की गुणवत्ता बहुत अच्छी मानी जाती है जिससे यह उद्योग के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है।

2. सिंगरौली के कोयला खदानों का ऐतिहासिक महत्व-

सिंगरौली के कोयला खदानों का ऐतिहासिक महत्व भारतीय औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह क्षेत्र भारतीय ऊर्जा उद्योग का एक प्रमुख स्रोत रहा है, खासकर जब से थर्मल पावर प्लांटों ने कोयला आधारित ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा दिया। 1960 के दशक के अंत में सिंगरौली में कोयला खनन का कार्य शुरू हुआ था और तब से यह क्षेत्र भारत के सबसे बड़े कोयला उत्पादक क्षेत्रों में से एक बन गया है। पहले यहाँ के खनन कार्य छोटे स्तर पर थे लेकिन जैसे-जैसे बिजली उत्पादन और औद्योगिक उत्पादन की मांग बढ़ी वैसे-वैसे सिंगरौली के कोयला खदानों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सिंगरौली की कोयला खदानें एनटीपीसी (नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन) और अन्य बड़े सरकारी और निजी थर्मल पावर स्टेशनों के लिए कोयला आपूर्ति करती हैं। इन खदानों से प्राप्त कोयला भारतीय ऊर्जा आपूर्ति का एक बड़ा हिस्सा बनता है जो देश की आर्थिक प्रगति में सहायक होता है।

3. कोयला खनन और उसकी आर्थिक महत्वता-

सिंगरौली के कोयला खदानों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव है। यह क्षेत्र भारतीय ऊर्जा उत्पादन का एक प्रमुख

स्रोत है जो न केवल देश के घरेलू बाजारों के लिए कोयला आपूर्ति करता है बल्कि निर्यात के लिए भी कोयला भेजता है। भारत में बढ़ते ऊर्जा संकट के कारण सिंगरौली की कोयला खदानों का महत्व और भी बढ़ गया है।

सिंगरौली में कोयला खनन से हजारों लोगों को रोजगार मिलता है। यहां काम करने वाले श्रमिकों की संख्या लाखों में है। इसके अलावा, सिंगरौली में स्थापित थर्मल पावर प्लांट्स से बिजली उत्पादन होता है जो उद्योगों और घरेलू उपयोग के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान करता है। इससे राज्य और केंद्र सरकार को राजस्व प्राप्त होता है और स्थानीय समुदायों के लिए सामाजिक सुविधाएं उपलब्ध होती हैं।

4. पर्यावरणीय प्रभाव-

कोयला खनन के पर्यावरणीय प्रभाव भी काफी गंभीर हो सकते हैं। सिंगरौली के कोयला खदानों से वायु प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, और जल संसाधनों पर दबाव जैसे मुद्दे सामने आते हैं। कोयला खनन से होने वाले प्रदूषण का मुख्य कारण धूल और गैसों का उत्सर्जन है जो न केवल पर्यावरण को प्रभावित करता है बल्कि आसपास के समुदायों की स्वास्थ्य समस्याओं का कारण भी बनता है। इसके अलावा, खनन के दौरान पेड़-पौधों की कटाई और वनस्पति का विनाश होता है जिससे जैव विविधता को नुकसान पहुंचता है। कोयला खनन के कारण भूमि के नीचे जलस्तर भी प्रभावित हो सकता है, जिससे कृषि और पीने के पानी की आपूर्ति पर असर पड़ता है। पर्यावरणीय नीतियों और तकनीकी उपायों के द्वारा इन प्रभावों को कम करने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन यह एक बड़ा चुनौतीपूर्ण कार्य है।

5. सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू-

सिंगरौली के कोयला खदानों का स्थानीय समुदायों पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। जहां एक ओर इस उद्योग ने लाखों लोगों को रोजगार दिया है वहीं दूसरी ओर यह क्षेत्र सामाजिक असमानता, श्रमिक शोषण, और अन्य सामाजिक समस्याओं का सामना भी करता है। कोयला खनन क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों के लिए सुरक्षा मानकों का पालन और उचित वेतन सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। कई बार मजदूरों को असुरक्षित कार्य परिस्थितियों में काम करना पड़ता है जिससे दुर्घटनाओं और स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा रहता है।

स्थानीय समुदायों के लिए यह खनन कार्य एक आय का प्रमुख स्रोत बन गया है लेकिन इसके साथ ही खनन के कारण उनके पारंपरिक जीवन और सांस्कृतिक धरोहर पर भी प्रभाव पड़ा है। कई स्थानों पर कोयला खनन ने आदिवासी और अन्य

सिंगरौली में कोयला खनन से हजारों लोगों को रोजगार मिलता है। यहां काम करने वाले श्रमिकों की संख्या लाखों में है। इसके अलावा, सिंगरौली में स्थापित थर्मल पावर प्लांट्स से बिजली उत्पादन होता है जो उद्योगों और घरेलू उपयोग के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान करता है।

समुदायों की भूमि और जल संसाधनों पर कब्जा कर लिया है जिससे उनका पारंपरिक जीवन प्रभावित हुआ है।

6. भविष्य की दिशा-

सिंगरौली के कोयला खदानों का भविष्य ऊर्जा जरूरतों के मद्देनजर महत्वपूर्ण है। हालांकि, दुनिया भर में कोयला आधारित ऊर्जा के प्रति बढ़ती चिंता के कारण, भारत सरकार ने नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर भी ध्यान देना शुरू किया है। इसके बावजूद, सिंगरौली के कोयला खदानों की अहमियत अभी भी बनी हुई है क्योंकि यह भारत के ऊर्जा उत्पादन में अहम योगदान देता है।

भविष्य में, यह जरूरी होगा कि कोयला खनन उद्योग पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हुए स्थानीय समुदायों की भलाई के लिए काम करे। साथ ही, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के विकास पर भी जोर दिया जाए, ताकि कोयला आधारित ऊर्जा पर निर्भरता कम हो सके।

निष्कर्ष:-

सिंगरौली, मध्य प्रदेश के कोयला खदानों का ऐतिहासिक, आर्थिक और पर्यावरणीय महत्व स्पष्ट है। यह क्षेत्र भारतीय ऊर्जा आपूर्ति का महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन इसके साथ ही पर्यावरणीय चुनौतियों और सामाजिक मुद्दों का भी सामना करना पड़ता है। भविष्य में, इस क्षेत्र को संतुलित तरीके से विकसित करना, जहां आर्थिक लाभ के साथ पर्यावरण और समाज का ध्यान रखा जाए, एक महत्वपूर्ण कार्य होगा।

– प्रमोद कुमार राणा
प्रबंधक (सतर्कता)

रूपकुंड एक कंकाल झील

रूपकुंड झील, जिसे कंकाल झील भी कहा जाता है, उत्तराखंड राज्य के चमोली जिले में स्थित है और यह भारतीय हिमालय की गोदी में बसी एक रहस्यमय और आकर्षक जगह है। समुद्र तल से लगभग 5000 मीटर (16,000 फीट) की ऊँचाई पर स्थित यह झील अपने अद्वितीय इतिहास और रहस्यमय तत्वों के कारण पर्यटकों और शोधकर्ताओं के लिए एक आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। जब बर्फ की परतें पिघलती हैं तो इस झील के आसपास स्थित पर्वतों से गिरने वाली बर्फ़ की बूँदें इस स्थान को और भी रहस्यमय बना देती हैं लेकिन इसका प्रमुख आकर्षण यहां पाए गए मानव कंकाल हैं जो समय के साथ एक अनसुलझे रहस्य के रूप में सामने आए हैं।

रूपकुंड झील का रहस्य – रूपकुंड झील का रहस्य 1942 में एक पार्क रेंजर द्वारा खोजे गए कंकालों के बारे में सामने आया था। जब उस रेंजर ने इस झील में खुदाई की तो उसने सैकड़ों मानव कंकालों का पता लगाया। इन कंकालों को देखकर पहली बार यह बात सामने आई कि किसी सामूहिक हत्या या युद्ध के दौरान इन लोगों की जान गई होगी लेकिन इससे जुड़ी अधिक जानकारियों के अभाव में यह एक बड़ा रहस्य बन गया। यहां पाए गए कंकालों के बारे में कई मत हैं। कुछ लोग मानते हैं कि ये कंकाल 9वीं शताब्दी के हैं जब एक भीषण ओलावृष्टि ने इन यात्रियों की जान ले ली। एक अन्य मान्यता के अनुसार, यह कंकाल किसी शाही परिवार के सदस्य हो सकते हैं जो किसी धार्मिक यात्रा के दौरान इस स्थान पर पहुंचे थे और अचानक मौसम के बदलाव के कारण मारे गए। वर्तमान में, वैज्ञानिक अध्ययनों और डीएनए परीक्षणों से यह पुष्टि हुई है कि ये कंकाल 12वीं और 15वीं शताब्दी के हैं और इनका संबंध एक प्रमुख राजवंश से हो सकता है। इसके अलावा, यहां पाए गए गहनों और अन्य सांस्कृतिक अवशेषों ने इस बात की ओर संकेत किया है कि ये कंकाल किसी सामरिक अभियान के हिस्से हो सकते हैं जो इस क्षेत्र में कभी हुआ होगा।

रूपकुंड का भूगोल और स्थल रूपकुंड झील उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित है और यह हिमालय की गोदी में बसी हुई एक ऊंची झील है। समुद्र तल से लगभग 5029 मीटर (16,500 फीट) की ऊंचाई पर स्थित होने के कारण यह झील बहुत ही कठिन और चुनौतीपूर्ण स्थान पर स्थित है। इस झील तक पहुंचने के लिए ट्रैकिंग की आवश्यकता होती है जो एक रोमांचक और साहसिक यात्रा बनाती है। यह झील आमतौर पर पूरे साल बर्फ से ढकी रहती है जिससे यहां का दृश्य और भी अद्भुत हो जाता है। बर्फ के ऊपर चलने और हिमालय की शांति का अनुभव करने के लिए इसे एक बेहतरीन यात्रा गंतव्य माना जाता है। यहां के घास के मैदान, बर्फ से ढके पहाड़ और ठंडी हवाएं इस स्थान को और भी मंत्रमुग्ध कर देती हैं।

रूपकुंड ट्रैक – रूपकुंड झील तक पहुंचने के लिए ट्रैकिंग की यात्रा बहुत ही रोमांचक और साहसिक होती है। इस यात्रा का मार्ग एक लंबा और कठिन सफर होता है जिसमें घने जंगल, विशाल घास के मैदान और बर्फीली ऊंचाइयों से गुजरना पड़ता है। इस ट्रैक का हिस्सा बनने के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार रहना बहुत जरूरी है।

ट्रैक की शुरुआत आमतौर पर लोहाजंग या बांण से होती है। यह दोनों स्थान रूपकुंड झील के करीब स्थित हैं और यहां से ट्रैकिंग शुरू होती है। इस यात्रा के दौरान, आपको शानदार दृश्य, अद्भुत वनस्पतियां और शानदार पहाड़ी दृश्य देखने को मिलते हैं। लोहाजंग से लेकर रूपकुंड तक का सफर लगभग 4 से 5 दिनों का होता है, जिसमें कठिन चढ़ाई, गहरी घाटियां और बर्फ से ढके पहाड़ शामिल होते हैं। रूपकुंड तक पहुंचने के बाद, जब आप झील के पास पहुंचते हैं तो वहां की अद्वितीय शांति और रहस्य आपको मंत्रमुग्ध कर देता है। बर्फीले पानी में डूबे कंकाल और उनके आसपास का वातावरण इस स्थान को और भी रहस्यमय बना देता है।

रूपकुंड के कंकालों की उत्पत्ति –रूपकुंड झील में पाए गए कंकालों का रहस्य सदियों से शोधकर्ताओं, पर्यटकों और इतिहासकारों को आकर्षित करता रहा है। शुरुआती मान्यता

के अनुसार, इन कंकालों का संबंध किसी एक बड़े युद्ध या सामूहिक हत्या से हो सकता है लेकिन बाद में वैज्ञानिकों ने यह पाया कि इन कंकालों की उम्र 12वीं से 15वीं शताब्दी के बीच की है। डीएनए परीक्षण और अन्य वैज्ञानिक अध्ययनों के परिणामों से यह जानकारी मिली है कि ये कंकाल विभिन्न नस्लों के लोगों के हो सकते हैं।

कुछ कंकाल भारतीय मूल के थे जबकि कुछ कंकालों का डीएनए यूरोपीय मूल का था। इसका मतलब यह हो सकता है कि यह कंकाल एक ऐसे समूह के थे जो किसी तीर्थयात्रा या सामरिक अभियान पर इस स्थान पर आए थे और अचानक मौसम के बदलाव के कारण अपनी जान गंवा बैठे। इसके अलावा, यहां मिले गहनों और अन्य सांस्कृतिक वस्तुओं से यह भी पता चलता है कि ये कंकाल शायद किसी शाही यात्रा का हिस्सा रहे हों। यह संभावना भी जताई जाती है कि यह किसी शाही तीर्थ यात्रा या विजय यात्रा के दौरान इस झील के पास आए थे और अचानक ओलावृष्टि के कारण उनकी मौत हो गई।

रूपकुंड का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व- रूपकुंड झील न केवल एक साहसिक स्थल है बल्कि यह ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी बहुत महत्वपूर्ण है। यहां पाए गए कंकालों और अन्य सांस्कृतिक अवशेषों से इस स्थान का ऐतिहासिक महत्व उजागर होता है। यह झील एक समय में किसी धार्मिक यात्रा का हिस्सा रही होगी जिसमें बड़ी संख्या में लोग आए थे। इसके अलावा, रूपकुंड का स्थान और इसके आसपास का वातावरण भी ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र गढ़वाल हिमालय के क्षेत्र में स्थित है जो प्राचीन समय से धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। यहां के लोग इस स्थान को पवित्र मानते हैं और इसे एक धार्मिक यात्रा स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है।

रूपकुंड यात्रा का अनुभव- रूपकुंड यात्रा के दौरान, आपको न केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जानकारी प्राप्त होती है बल्कि यह एक अद्भुत साहसिक अनुभव भी है। इस यात्रा में आपको पहाड़ों की ऊंचाई, बर्फीली हवाएं, घास के मैदान और शांत वातावरण का अनुभव होगा। यह ट्रैक न केवल शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण होता है बल्कि मानसिक रूप से भी आपको दृढ़ता और साहस का सामना करना पड़ता है। रूपकुंड की यात्रा करते समय आपको इस क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता, विविधता और रहस्य का अद्भुत अनुभव होगा। यहां का वातावरण और यहां के लोग आपकी यात्रा को और भी विशेष बना देंगे।

कैसे पहुंचा जाए- रूपकुंड ट्रेक लोहाजंग 7,700 फीट ऊंचाई से से शुरू होता है जो निकटतम रेलवे स्टेशन काठगोदाम से 230 किमी दूर है। यहां से परिवहन/जीप सुविधाएं उपलब्ध हैं जिनमें स्थानीय यातायात की स्थिति के आधार पर सड़क मार्ग से लगभग 8 से 10 घंटे का समय लगता है। लोहाजंग का मार्ग अल्मोड़ा-ग्वालदम-थराली-देबल-मुंडोली-लोहाजंग के रास्ते से होते हुए जाता है। ड्राइव ट्रेक के लिए यह एक अच्छा अवसर है, इसमें देखने के लिए कई चीजें हैं। साधारण कैंची धाम आश्रम अल्मोड़ा के रास्ते पर पड़ता है, नदी के किनारे बना आश्रम, स्टीव जॉब्स और मार्क जुकरबर्ग को भी बहुत पसंद आया था। यहाँ का पूरा मार्ग सुरम्य है, जिसमें हरे जंगल, गहरी घाटियाँ और बर्फ से ढकी चोटियाँ शामिल हैं।

निष्कर्ष- रूपकुंड झील एक ऐसा स्थान है जो रहस्यों और रोमांच से भरा हुआ है। इसके कंकालों का रहस्य आज भी अनसुलझा है लेकिन यह झील अपनी रहस्यमय सुंदरता और ऐतिहासिक

महत्व के कारण हमेशा ही यात्रियों और शोधकर्ताओं का आकर्षण बनी रहती है। यह स्थान उन लोगों के लिए एक आदर्श यात्रा स्थल है जो साहसिक यात्रा के साथ-साथ इतिहास और संस्कृति में भी रुचि रखते हैं। अगर आप भी इस अद्भुत और रहस्यमय स्थल की यात्रा करना चाहते हैं तो रूपकुंड आपके लिए एक बेहतरीन गंतव्य हो सकता है।

– डी.संपत कुमार

सहायक इंजीनियर (-खरीद)

* लेखक ने कुछ वर्ष पहले पश्चिम रेलवे एडवेंचर स्पोर्ट्स क्लब द्वारा आयोजित इस यादगार ट्रेक में भाग लिया था।

वह प्रेरणादायक व्यक्तित्व
मास्टर साहब

शिक्षक केवल ज्ञान का स्रोत नहीं होते बल्कि वे व्यक्ति के जीवन को दिशा देने वाले पथ-प्रदर्शक भी होते हैं। ऐसे ही एक गुरु हैं, आदरणीय श्री सत्येन्द्र ठाकुर जी, जिन्हें हम सब बच्चे स्नेहपूर्वक “मास्टर साहब” कहकर पुकारते थे। उन्होंने अपने निःस्वार्थ प्रेम, अथक परिश्रम और अनुशासन से हमें न केवल शिक्षित किया बल्कि हम सभी बच्चों को जीवन के मूल्यों का भी बोध कराया।

मैं पहली बार मास्टर साहब के संपर्क में छठी कक्षा में आया जब वे बी.ए.की पढ़ाई कर रहे थे। धीरे-धीरे मेरे गाँव और आसपास के अन्य गाँवों के बच्चे भी उनसे शिक्षा ग्रहण करने लगे। वे हमें गणित, विज्ञान, अंग्रेजी, सामाजिक विज्ञान और संस्कृत जैसे विषयों की गहन जानकारी प्रदान करते थे। उनकी विशेषता थी कि वे जो कुछ भी हमें पढ़ाते, उसका साप्ताहिक परीक्षण करना नहीं भूलते थे। जिससे हमारी पढ़ाई में प्रतिस्पर्धा बनी रहती और हम सभी श्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए हमेशा प्रेरित होते रहते थे।

मास्टर साहब का दैनिक जीवन अत्यंत संयमित एवं अनुशासित था। वे प्रतिदिन प्रातः चार बजे उठते और माँ भगवती के भजन "जय जय भैरवी" का गायन करते थे। यह गीत हिंदी के प्रसिद्ध कवि विद्यापति द्वारा रचित है लेकिन जब वे इसे गाते तो मन को असीम शांति मिलती है। मैंने अपने जीवन में अनेक भजन सुने हैं लेकिन मास्टर साहब द्वारा लयबद्धता और आत्मतलीनता से गाया हुआ भगवती का यह गीत आज भी मेरे कानों में हमेशा गूँजता रहता है और अविस्मरणीय है।

मास्टर साहब किसी भी विद्यार्थी के साथ कोई भेदभाव नहीं करते थे, चाहे वह विद्यार्थी किसी भी वर्ग, जाति एवं समुदाय से संबंधित हो। चाहे वह ग्रामीण परिवेश के संपन्न परिवार से हो या निर्धन परिवार से। उनका एकमात्र उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से समाज का विकास करना था। वे विद्यार्थियों को शिक्षित करके उन्हें किसी शिखर तक पहुँचने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करते थे। गुरु जी सातवीं से दसवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को पढ़ाते थे। जहाँ तक मुझे याद है, पहली बार 1990 में उनके द्वारे पढ़ाए गये दो विद्यार्थी – श्री संतोष मिश्र और श्री मनोज मिश्र ने बिहार बोर्ड की परीक्षा दी थी और अच्छे अंक के साथ पास हुए थे। तब से प्रत्येक वर्ष उनके लगभग

50 विद्यार्थी बिहार बोर्ड की दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करते आ रहे हैं। मेरा मानना है कि मास्टर साहब ज्ञान की गंगा है और जो भी उनके विद्या रूपी जल को ग्रहण करता है, उसका जीवन सुखमय हो जाता है।

आज मास्टर साहब के शिष्य देश-विदेश में कार्यरत हैं। चाहे वह आईआईटी मुंबई का परिसर हो, भारत का रक्षा क्षेत्र, रेलवे, बैंकिंग,अमूल का दुग्ध कारखाना या कोई अन्य बहुराष्ट्रीय कंपनी— हर जगह उनके विद्यार्थी कार्यरत मिलेंगे और उनके द्वारा सुझाए गए जीवन बोध को निष्पादित कर रहे हैं। यह उनकी शिक्षा और मार्गदर्शन का ही परिणाम है कि उनके शिष्यों ने विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त की है।

मास्टर साहब का व्यक्तित्व अत्यंत सरल, सहज, सौम्य और स्नेहमयी है। उनकी कक्षा में सदैव ज्ञान की गंगा बहती थी, जहाँ पर हर विद्यार्थी अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए

सजीव हो उठता था। गुरु जी का अध्यापन केवल शैक्षिक पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रहता था बल्कि वे विद्यार्थियों को अनुशासन, नैतिकता, ईमानदारी, जीवन व्यवहारिकता और परिश्रम के महत्व को भी रोचक एवं कलात्मक ढंग से बताते थे।

उनकी शिक्षण शैली अनुपम और अद्वितीय थी। वे कठिन से कठिन विषय को इतनी सरलता, सरसता और सहजता से समझाते कि वह विद्यार्थियों की स्मृतिपटल पर तुरंत अंकित हो जाता था। उन्होंने हमें लेखन की कला भी सिखाई और यह भी बताया कि किस प्रकार से किसी प्रश्न का उत्तर प्रभावशाली और सारगर्भित रूप से लिखा जाता है। उनकी वाणी में एक अलग आत्मीयता तथा तेज था और शब्दों में एक विशेष आकर्षण था जो हर विद्यार्थी को उनके प्रति श्रद्धा और सम्मान से भर देता था।

मुझे आज भी स्मरण है कि परीक्षा के दिनों में उन्होंने जब हम सभी छात्रों को मानसिक तनाव से मुक्त रखने के लिए,विशेष रूप से कई प्रेरणादायक एवं रोचक कहानियाँ सुनाई थीं। मास्टर साहब कहते थे "असली सफलता केवल अंकों में नहीं बल्कि आपके ज्ञान, व्यवहार और आत्म-सम्मान में निहित होती है।" उनके यही उदेश्यपूर्ण वाक्य, सीख एवं बातें जीवनभर मेरे साथ रही हैं।

मैं स्वयं को अत्यंत भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे मास्टर साहब से शिक्षा प्राप्त करने का सुनहरा अवसर मिला और मेरे जीवन में उनका एक विशेष स्थान है। वे मेरे लिए केवल गुरु ही नहीं बल्कि ईश्वर तुल्य हैं। जब भी मैं उनके चरण स्पर्श करता हूँ तो मैं स्वयं को धन्य मानता हूँ। मास्टर साहब के सान्निध्य में जाने से मेरे मन को अपार शांति मिलती है और उनसे बात करने मात्र से ही मुझे आत्मिक सुकून प्राप्त होता है।

आज जब मैं अपने जीवन में आगे बढ़ रहा हूँ तो उनके द्वारा बताए हुए सभी सिद्धांत मेरी राह को बहुत आसान बना देते हैं और इसे आलोकित कर रहे हैं। बहुआयामी व्यक्तित्व-के धनी, मास्टर साहब सभी विद्यार्थियों के केवल एक शिक्षक ही नहीं बल्कि मार्गदर्शक, अभिभावक, संरक्षक और प्रेरणा के स्रोत थे। उनके प्रति आज भी मेरे मन में असीम श्रद्धा और कृतज्ञता है।

मैं मानता हूँ कि मास्टर साहब जैसे गुरु इस समाज की अमूल्य धरोहर हैं जिनके योगदान को शब्दों में बाँधना एवं व्यक्त कर पाना असंभव है। वे हमें सदैव यह सिखाते रहे कि "शिक्षा केवल डिग्री नहीं बल्कि वह शक्ति है जो हमें जीवन को सही दिशा में आगे बढ़ाने के लिए, हमारा मार्ग प्रशस्त करती है।"

ऐसे महान गुरु को मेरा शत-शत नमन।

– नवल किशोर पाठक
यातायात निरीक्षक

छुट्टी

इस दौडती भागती जिंदगी से थक चुकी हो
तो थोडा रुक जाओ।
थोडा सबर करो, थोड़ी सांसे लो,
और हो सके तो खुदको इक "संडे" गिफ्ट कर दो॥
कुछ पल जिंदगी से अपने लिए चुरा लो।
कुछ ना करो, बस पाव पसारो,
ऑखे मूंद लो और "जगजीत सिंह"
की ग़ज़ले ही सुन लो।
इक संडे तो बनता है तुम्हारा, उसे हक से ले लो॥
अगर ठेका ले के ही रखा है काम का,
तो कुछ पूरे और कुछ थोड़े ही कर लो।
या कुछ भूल जाओ, कुछ को अनदेखा कर लो।
इक संडे तो बनता है तुम्हारा, उसे हक से ले लो॥
खुद से ही प्यार करो, खुद को ही लाड करो,
खुद अपने ही लिए, इक दिन खुदकी माँ बनो।
अगर कोई खुदगर्ज कहे तो ध्यान न दो।
इक संडे तो बनता है तुम्हारा, उसे हक से ले लो॥
जो पसंद है वो करो, या कुछ न करो
इक दिन किसी के लिए नहीं,
बस खुद के लिए जी लो।
छुट्टी तो सबका हक है,
इक दिन तुम्हारा भी तो हो।
इक संडे तो बनता है तुम्हारा, उसे हक से ले लो॥

– वैशाली गोसावी
सहायक प्रबंधक – योजना

आरोग्य और कल्याण शिविर के तहत इमेजिका की एक अविस्मरणीय यात्रा

11 जनवरी 2025 को मुंबई रेलवे विकास निगम (एमआरवीसी) द्वारा इमेजिका में आयोजित आरोग्य और कल्याण शिविर ने हम सभी के जीवन में एक अविस्मरणीय अनुभव छोड़ दिया। यह यात्रा एक दिन की थी, लेकिन इसने हमें कई अनमोल यादें दीं, जिन्हें हम जीवनभर याद रखेंगे। इस यात्रा ने न केवल हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूक किया, बल्कि हमें अपने सहकर्मियों के साथ समय बिताने और एक-दूसरे के अनुभवों को साझा करने का एक अद्भुत अवसर भी प्रदान किया। इसके साथ ही, इमेजिका के रोमांचक आकर्षणों ने इस यात्रा को और भी खास बना दिया।

यात्रा की शुरुआत-यह हमारी यात्रा, मुंबई के दादर से सुबह 8:00 बजे से शुरू हुई। यात्रा की शुरुआत उत्साह और खुशी से भरी बस यात्रा से हुई। जब हम सब बस में सवार हुए, तो हमारे चेहरों पर मुस्कान और दिल में उमंग थी। हर कोई इस यात्रा के लिए तैयार था और एक अद्वितीय अनुभव की उम्मीद कर रहा था। बस में चढ़ते ही हंसी-ठहाकों का दौर शुरू हो गया। हर कोई एक-दूसरे से गप्पें मार रहा था, और कुछ मजेदार किस्सों के बारे में बातें कर रहा था। रास्ते में हरे-भरे खेतों, छोटी-छोटी पहाड़ियों और ठंडी हवा ने यात्रा को और भी सुखद बना दिया। जैसे-जैसे हम इमेजिका के पास पहुँच रहे थे, उत्साह और भी बढ़ता जा रहा था।

कुछ ही समय में हम इमेजिका पहुँचे और वहां के भव्य प्रवेश द्वार ने हमारा स्वागत किया। इमेजिका का प्रवेश द्वार इतना आकर्षक था कि वह अपने आप में एक नया अनुभव दे रहा था। उस विशाल द्वार के माध्यम से इमेजिका के अंदर प्रवेश करते ही हमने महसूस किया कि हम किसी नई दुनिया में कदम रख रहे हैं, जहां रोमांच और मस्ती का कोई अंत नहीं था।

स्वागत और नाश्ता-हमारे स्वागत के बाद हम पहले एक शानदार नाश्ते के लिए आमंत्रित किए गए। गरमा-गरम पोहा वड़ा पाव, इडली-सांभर, पकोड़ी और चाय-कॉफी ने हमें न केवल ताजगी का अहसास दिलाया, बल्कि हमें दिनभर के लिए ऊर्जा भी दी। इमेजिका का यह नाश्ता न केवल स्वादिष्ट था, बल्कि हमारी यात्रा की शुरुआत को और भी विशेष बना दिया। नाश्ते के दौरान, सहकर्मियों के साथ बैठकर हमारी बातचीत और हंसी मजाक ने वातावरण को खुशनुमा बना दिया। यह एक ऐसा पल था, जब हम सबने एक-दूसरे के साथ अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा किया और यह महसूस किया कि हम सभी का जीवन एक समान है, चाहे हम किसी भी कार्यक्षेत्र में हों।

इमेजिका के रोमांचक आकर्षण-नाश्ता करने के बाद हम इमेजिका के प्रमुख आकर्षणों का अनुभव करने के लिए निकले। इमेजिका में हर उम्र और हर रुचि के लोगों के लिए कुछ न कुछ खास था। यहां के रोमांचक राइड्स और आकर्षणों ने हमारी यात्रा को और भी खास बना दिया। सबसे पहले, हम सभी ने कुछ रोमांचक राइड्स का अनुभव किया। ये राइड्स इतने रोमांचक और साहसिक थे कि हर राइड पर चढ़ते हुए हमें एक अलग अनुभव होता था। जैसे ही हम राइड पर चढ़े, हमारे चेहरे पर खुशी और उत्साह की लहर थी। कुछ राइड्स ने हमें थोड़ी घबराहट भी दी, लेकिन जैसे ही राइड खत्म होती थी, हमें जो संतुष्टि और खुशी मिलती थी, वह एक अविस्मरणीय अनुभव बन जाती थी।

एक विशेष राइड में हम सभी ने एक साथ बैठकर एक विशाल झूला झूलने का आनंद लिया। इस राइड में हम हवा के साथ झूलते हुए बहुत ऊँचाई तक पहुँच गए थे। हवा में उड़े हुए महसूस करते हुए, हर किसी के चेहरे पर खुशी की चमक थी। यह राइड एक अद्भुत साहसिक अनुभव था जो हमें डर को पार करने और जीवन में नए अनुभवों को अपनाने का संदेश दे रहा था।

इसके बाद, हम इमेजिका के थीम पार्क में गए, जहां रंग-बिरंगे झूले और कैरेस्सल थे। इन झूलों पर बैठकर हम सबने अपने बचपन को फिर से जीने की कोशिश की। इन झूलों पर बैठते हुए हमें ऐसा महसूस हुआ जैसे हम फिर से बच्चे बन गए हों, और हमें एक दूसरे के साथ खेलने का एक और मौका मिला। यहां के खेल कक्षाओं और गतिविधियों ने भी हमें आनंदित किया। हम सभी ने मिलकर टीम बना कर खेल खेले, और टीम भावना को महसूस किया।

स्वादिष्ट लंच और अनुभवों का आदान-प्रदान-लंच का समय आया, और हम सभी एक स्वादिष्ट लंच के लिए आमंत्रित किए गए। लंच में पंजाबी थाली, रायता, सलाद और खीर जैसी स्वादिष्ट मिठाई थी। यह भोजन न केवल स्वादिष्ट था, बल्कि हमें दिनभर के रोमांचक अनुभवों से ताजगी भी मिली। लंच के दौरान, हम सभी ने एक-दूसरे के अनुभवों को

साझा किया और यह महसूस किया कि इस यात्रा ने हमें एक दूसरे के करीब ला दिया है। सहकर्मियों के साथ बैठकर भोजन करते हुए हम सबने एक दूसरे से अपनी-अपनी कहानियाँ साझा की, और माहौल और भी खुशनुमा हो गया।

लंच के दौरान यह अहसास हुआ कि यह यात्रा न केवल मनोरंजन का एक जरिया थी, बल्कि यह हमारे बीच एकता और सामूहिक भावना को भी बढ़ावा दे रही थी। हम सभी एक दूसरे के साथ मिलकर कार्य करते हैं, लेकिन इस यात्रा ने हमें यह समझने का मौका दिया कि एक अच्छे सहकर्मी संबंधों के लिए समय बिताना और एक-दूसरे के अनुभवों को समझना कितना महत्वपूर्ण है।

स्नो पार्क का अनुभव-लंच के बाद, हम इमेजिका के "स्नो पार्क" में गए, और यह अनुभव अविस्मरणीय था। जैसे ही हम स्नो पार्क में प्रवेश करते हैं, हमें ऐसा महसूस हुआ जैसे हम किसी बर्फीले देश में प्रवेश कर गए हों। बर्फ के गोलों से खेलते हुए, बर्फ पर स्लाइड करते हुए, और बर्फ की बर्फीली हवाओं का आनंद लेते हुए हमने अपने बचपन को फिर से जी लिया। यह पल न केवल मजेदार था, बल्कि इसने हमें यह भी सिखाया कि कभी-कभी हमें अपने अंदर के बच्चे को बाहर लाने की जरूरत होती है। बर्फ के बीच खेलते हुए, हमने जीवन की सरल खुशियों को महसूस किया।

स्नो पार्क का अनुभव हमारे लिए एक नई दुनिया के दरवाजे की तरह था। यहाँ की ठंडी हवा और बर्फ के गोलों ने हम सभी को नया जोश दिया। यह अनुभव हमारे दिलों में हमेशा रहेगा, और यह हमें याद दिलाएगा कि हमें जीवन में छोटी-छोटी खुशियों का आनंद लेना चाहिए।

यात्रा का समापन-दिन के अंत में, हम सभी ने स्नैक्स,गरम-गरम भुर्जी,पाव,बिस्किट, और चाय का आनंद लिया। यह समय एक आरामदायक और शांतिपूर्ण समापन था। चाय पीते हुए और स्नैक्स खाते हुए हम सभी ने अपने अनुभवों को साझा किया और एक दूसरे से हंसी मजाक किया। हम सभी ने यह महसूस किया कि इस यात्रा ने हमें न केवल आनंदित किया, बल्कि यह हमारे सहकर्मियों के साथ रिश्तों को भी मजबूत किया। बस यात्रा के दौरान एक-दूसरे के साथ अनुभव साझा करते हुए, हम इस यात्रा को हमेशा याद रखेंगे।

जीवन के छोटे पल-यह यात्रा न केवल मनोरंजन का एक शानदार अवसर थी, बल्कि इसने हमें यह भी सिखाया कि जीवन में छोटे-छोटे लम्हों में भी बड़ी खुशियाँ छिपी होती हैं। इमेजिका की एक दिन की यात्रा ने हमें यह समझने का अवसर दिया कि हमें अपने जीवन में हर छोटे से पल का आनंद लेना चाहिए, चाहे वह आनंद किसी साधारण सफर या साधारण नाश्ते का ही क्यों न हो। जीवन में खुशी केवल बड़े लक्ष्यों की प्राप्ति में नहीं, बल्कि छोटे-छोटे पलों में भी होती है, जिन्हें हम अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं।

***निष्कर्ष**-इमेजिका की यह यात्रा न केवल हमारे दिलों में बसी रहेगी, बल्कि यह हमें जीवन में ऊर्जावान और उत्साही रहने की प्रेरणा भी देगी। यह यात्रा हमें यह सिखाती है कि कभी भी जीवन में कठिनाइयाँ आएं, हमें खुश रहना और हर पल का पूरा आनंद लेना चाहिए।*

– पराग सवाई
प्रोजेक्ट इंजीनियर/विद्युत

राइडिंग द लद्दाख सर्किट: ए सोलो एडवेंचर ऑफ ट्रायम्फ एंड ट्रांसफॉर्मेशन

अज्ञात में प्रवेश करने का अनुभव हमेशा कुछ गहरा और विशिष्ट होता है और जब यह यात्रा भारत के लद्दाख क्षेत्र के चुनौतीपूर्ण इलाकों में एकल बाइक की सवारी से जुड़ी हो तो इसका अहसास और भी अधिक बढ़ जाता है। जम्मू के हलचल भरे शहर से शुरू होकर, राजसी पहाड़ों के बीच घुमावदार मार्ग पर लद्दाख सर्किट की यात्रा हर साहसिक उत्साही का सपना होती है। लेकिन मेरे लिए, यह यात्रा केवल एक सवारी नहीं थी बल्कि यह एक व्यक्तिगत विकास की यात्रा थी, जहां मैंने प्रतिकूलताओं पर विजय पाई और आत्म-संतुष्टि का अनुभव किया जो केवल अपनी सीमाओं को आगे बढ़ाने से मिल सकता है।

यात्रा की शुरुआत और प्रारंभिक उत्साह-

यह यात्रा उत्साह और प्रत्याशा से भरी हुई थी लेकिन मैंने यह भी समझ लिया था कि इस तरह के एक चुनौतीपूर्ण मार्ग पर यात्रा करते समय कुछ भी हो सकता है। अपनी बाइक को हर तरह से तैयार करने के बाद, मैंने बुनियादी उपकरण और औजार अपने साथ ले लिए थे ताकि अगर कोई यांत्रिक समस्या हो तो मैं उसे हल कर सकूं। हालांकि, मैं मानसिक रूप से भी तैयार था क्योंकि मुझे पता था कि यह यात्रा मुझे मानसिक और शारीरिक दोनों तरह से चुनौती देने वाली थी। पैंगोंग झील के विशाल विस्तार और सियाचिन ग्लेशियर की भव्यता जैसे दृश्य मेरी ऊर्जा को भरने वाले थे और मुझे विश्वास था कि यह यात्रा मुझे अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचाएगी।

प्राकृतिक सौंदर्य और कठिनाइयाँ- लद्दाख के प्राकृतिक सौंदर्य ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। हर मोड़ पर मुझे एक नई चुनौती और एक नया सबक मिलता गया। द्रंग ग्लेशियर ने मुझे प्रकृति की कच्ची, अदम्य शक्ति की याद दिलाई। यह विशाल और बर्फ से ढका हुआ ग्लेशियर लद्दाख की विशेषताओं को उजागर करता है जो मुझे अपनी नश्वरता का अहसास कराता है। यह एक ऐसी यादगार थी जो हमेशा याद दिलाती है कि कुछ चीजें हमारे नियंत्रण से बाहर होती हैं लेकिन उनकी भव्यता हमें गहरे तरीके से बदल सकती है।

लिंगशेड मार्ग पर यांत्रिक समस्या का समाधान

यात्रा का एक निर्णायक क्षण तब आया जब मैं लिंगशेड मार्ग पर यात्रा कर रहा था जो एक उच्च ऊंचाई वाला क्षेत्र था।

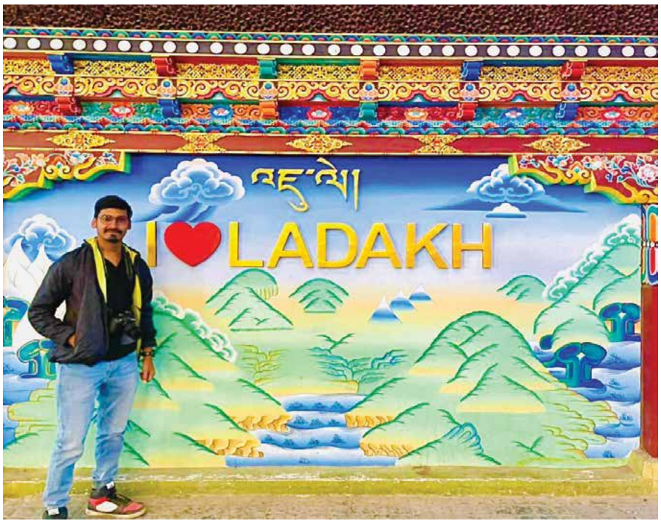

यात्रा का एक और गहन अनुभव गाटा लूप्स था जहाँ 21 हेयरपिन मोड़ों के साथ सड़क चढ़नी होती है। यह खंड मेरे धैर्य और मानसिक शक्ति का परीक्षण था। हर मोड़ के बाद मुझे एक नई चुनौती का सामना करना पड़ा लेकिन मुझे यह एहसास हुआ कि यह सिर्फ शारीरिक नहीं बल्कि मानसिक रूप से भी प्राण लेने वाला है।

यहाँ हवा की कमी और इंजन की समस्या ने मुझे एक कठिन परिस्थिति में डाल दिया। बाइक का प्रदर्शन गिरने लगा था और मुझे यह महसूस हुआ कि मैं संतुलन से बाहर जा सकता हूँ लेकिन मैं घबराया नहीं, मैंने अपनी तैयारी और उपकरणों को याद किया और फिर बिना किसी सहायता के खुद ही बाइक के एयर फिल्टर को ठीक किया। यह एक जुआ जैसा था लेकिन मेरी योजना और आत्मविश्वास ने मुझे सफलता दिलाई। थोड़ी देर में, बाइक फिर से चलने के लिए तैयार हो गई। उस क्षण में, मुझे जो संतुष्टि मिली, उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है।

गाटा लूप्स और मानसिक चुनौती-

यात्रा का एक और गहन अनुभव गाटा लूप्स था जहाँ 21 हेयरपिन मोड़ों के साथ सड़क चढ़नी होती है। यह खंड मेरे धैर्य और मानसिक शक्ति का परीक्षण था। हर मोड़ के बाद मुझे एक नई चुनौती का सामना करना पड़ा लेकिन मुझे यह एहसास हुआ कि यह सिर्फ शारीरिक नहीं बल्कि मानसिक रूप से भी प्राण लेने वाला है। यह अनुभव मुझे याद दिलाता है कि कभी-कभी सड़क जितनी कठिन होती है उतनी ही बढ़िया उपलब्धि की भावना मिलती है। हर चढ़ाई के साथ मुझे अपने भीतर की शक्ति का अहसास होता गया।

मोर प्लेन्स और लद्दाख की अनूठी सुंदरता

लद्दाख के मोर प्लेन्स, पर्वत श्रृंखलाओं के बीच बसा एक विशाल पठार, एक और अनुभव था जो मेरे दिल को छू गया। ऊंचाई पर होने के बावजूद, यह जगह सपाट और बंजर-सी लगती थी। वहां की चुप्पी और खुली जगह ने मुझे एक नई स्वतंत्रता का एहसास कराया और मुझे महसूस हुआ कि मैं जीवन के हर पल को जिया करता हूँ जैसे कि मैं पूरी दुनिया में सवार हूँ।

दुनिया के कुछ सबसे ऊंचे दर्रों से गुजरना

लद्दाख के कुछ सबसे ऊंचे मोटरेबल पास से गुजरना एक शारीरिक और मानसिक चुनौती दोनों थी। उमलिंग ला पास पर सवारी करना एक रोमांचक अनुभव था जहाँ मुझे अत्यधिक ऊंचाई और ठंडी हवाओं का सामना करना पड़ा। यह न केवल शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण था बल्कि एक गहरी मानसिक संतुष्टि भी थी। जैसेकि मैं दुनिया के ऊपर खड़ा हूँ। इसके बाद चांग ला और खारदुंग ला पास से गुजरने का अनुभव भी उतना ही अद्भुत था। ये दर्रे मेरे साहस का परीक्षण कर रहे थे और जैसे-जैसे मैंने इन्हें पार किया, मुझे अपनी सीमा और क्षमता का अधिक विश्वास हुआ।

आत्मविश्वास और आत्मज्ञान की ओर यात्रा

लद्दाख सर्किट पर इस एकल बाइक यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू मेरे आत्मज्ञान और आत्मविश्वास का बढ़ना था। यात्रा के दौरान, मैंने रोमांच की तलाश में कदम रखा था लेकिन मुझे एक गहरा आंतरिक परिवर्तन मिला। मुझे अपने आप पर विश्वास हुआ और मैंने यह जाना कि सच्ची यात्रा केवल शारीरिक चुनौती के बारे में नहीं है बल्कि यह एक मानसिक और आत्मिक यात्रा है।

अंतिम बिंदु और आत्म-विजय

लंबी और चुनौतीपूर्ण सवारी के बाद दिल्ली में अपने अंतिम बिंदु तक पहुंचना एक गर्व का क्षण था। शारीरिक थकावट के बावजूद, मैंने यह अनुभव किया कि इस यात्रा ने मुझे केवल बाहरी चुनौतियों से नहीं बल्कि अपने भीतर के संकोच और डर से भी विजय दिलाई थी। यह यात्रा सिर्फ एक रोड ट्रिप नहीं थी बल्कि यह खुद को जीतने का एक तरीका था, अपनी क्षमताओं पर भरोसा करने और हर पल को पूरी तरह से जीने का तरीका था।

निष्कर्ष

यदि आपको कभी लद्दाख सर्किट पर सवारी करने का मौका मिले तो केवल दृश्य पर ध्यान न दें। चुनौतियों को गले लगाएं, अज्ञात को अपनाएं, और याद रखें कि यह यात्रा अपने आप में उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि गंतव्य।

– दीपांश आड़े
परियोजना इंजीनियर

स्वास्थ्य: जीवन की कुंजी

स्वास्थ्य का अर्थ केवल शारीरिक स्वस्थता नहीं है बल्कि यह शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक सभी पहलुओं को शामिल करता है। यह उस स्थिति को दर्शाता है जिसमें व्यक्ति अपनी पूरी क्षमताओंके साथ जीवन जीता है। आजकल लोग स्वास्थ्य को केवल बीमार न होने के रूप में परिभाषित करते हैंलेकिन यह सोच पूरी तरह से गलत है।

स्वस्थ होने का मतलब न केवल बीमारियों से मुक्त होना है बल्कियह मानसिक और भावनात्मक संतुलन को बनाए रखना भी है।आज के इस तनावपूर्ण जीवन में अधिकांश लोग तनाव और मानसिक दबाव का सामना करते हैं, जोउनके शारीरिक स्वास्थ्य पर भी असर डालता है। एक स्वस्थ जीवन जीने के लिए जरूरी है कि हमअपनी दिनचर्या में ध्यान केंद्रित करें और खुद को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखने काप्रयास करें।

स्वास्थ्य का महत्व

स्वस्थ शरीर और मन से हम जीवन का पूरा आनंद ले सकते हैं। जब हमारा शरीर स्वस्थ होता है तो हम अपनी रोजमर्रा की जिम्मेदारियों को अच्छे से निभा सकते हैं और समाज में सकारात्मक योगदान दे सकते हैं। इसके विपरीत, बीमार या तनावग्रस्त व्यक्ति न केवल अपनी सेहतखोता है बल्कि उसके जीवन की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। मानसिक स्वास्थ्य का असर शारीरिकस्वास्थ्य पर पड़ता है और शारीरिक बीमारियाँ मानसिक स्थिति को और खराब कर सकती हैं।स्वस्थ आहार और नियमित व्यायाम से हम भविष्य में कई गंभीर बीमारियों से बच सकते हैं। जब हमखुद को फिट रखते हैं तो हम न केवल बेहतर महसूस करते हैं बल्कि चिकित्सा खर्चों को भी कम करसकते हैं। यदि हम समय रहते अपना ध्यान रखते हैं तो हम महंगे उपचारों और बीमारियों से बच सकतेहैं जिससे हमारी वित्तीय स्थिरता भी बनी रहती है।

वर्कहॉलिक

वह व्यक्ति होता है जो अपने काम में इतना व्यस्त रहता है कि वह अपने रिश्तों या स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाए बिना काम करने का समय सीमित नहीं कर पाता। ऐसा व्यक्ति हमेशा काम में डूबा रहता है और अक्सर अपनी व्यक्तिगत ज़िंदगी और स्वास्थ्य को नजरअंदाज करता है। काम में व्यस्त रहना खुद में कोई बुरी बात नहीं है बल्कि यह एक सकारात्मक आदत हो सकती है लेकिन जब यह आदत बन जाती है तो यह समस्या बन सकती है।

वर्कहॉलिज्म का असर न केवल शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ता है बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह तनाव, चिंता और अवसाद जैसी समस्याओं को जन्म दे सकता है। इसके अलावा, रिश्तों में भी खटास आ सकती है क्योंकि काम के कारण व्यक्ति अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय नहीं बिता पाता। इसलिए, वर्कहॉलिज्म से बचने के लिए जरूरी है कि काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाए रखा जाए। यह महत्वपूर्ण है कि हम समय-समय पर आराम करें, अपने प्रियजनों के साथ समय बिताएं और अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

व्यायाम और शारीरिक स्वास्थ्य

स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए नियमित व्यायाम करना बेहद जरूरी है। इसके लिए सबसे उपयुक्त समय प्रात:काल का है, जब वातावरण ताजगी से भरा होता है।नियमित व्यायाम से शरीर में ऊर्जा बनी रहती है, मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं, और मानसिक स्थिति भीसकारात्मक रहती है।

योग, प्राणायाम, और सांस की गहरी प्रक्रिया जैसे उपाय भी हमें मानसिक शांतिप्रदान करते हैं। हालांकि, नौकरी करने वालों के लिए यह आदतें अपनाना थोड़ा मुश्किल हो

संतुलित आहार में प्रोटीन, विटामिन, खनिज और आवश्यक कैलोरी की उचित मात्रा शामिल होनी चाहिए। आयुर्वेद के अनुसार, भोजन में ताजे, पौष्टिक और हल्के खाद्य पदार्थों को शामिल करना चाहिए।

सकता हैलेकिन हमें सप्ताहांत में इस पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।स्वस्थ जीवन जीने के लिए अनुशासन बेहद महत्वपूर्ण है। खासकर छात्रों के लिए यह समय आदतोंको सुधारने का होता है। यदि बच्चों को शुरू से ही अच्छे आहार और जीवनशैली की आदतें सिखाईजाएं तो वे भविष्य में स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार

शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए यह जरूरी है कि हम संतुलितआहार लें। संतुलित आहार में प्रोटीन, विटामिन, खनिज और आवश्यक कैलोरी की उचित मात्रा शामिलहोनी चाहिए। आयुर्वेद के अनुसार, भोजन में ताजे, पौष्टिक और हल्के खाद्य पदार्थों को शामिल करनाचाहिए। रात में भारी भोजन से बचना चाहिए और सही समय पर भोजन करना चाहिए। यह शरीर कोठीक से काम करने के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान करता है और वजन को नियंत्रित रखता है।संतुलित आहार और सही जीवनशैली का पालन करने से हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी मजबूतहोती है, जिससे हम जल्दी बीमार नहीं पड़ते। इसके साथ ही, यह हमें मानसिक शांति भी प्रदान करताहै, जो शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।शरीर के संकेतों को समझनाहमेशा

यह समझना जरूरी है कि शरीर से हमें संकेत मिलते हैं जबकुछ गलत हो रहा होता है। शरीर, थकावट, दर्द, या अन्य संकेतों के जरिए हमें बताता है कि हमें ध्यानदेने की जरूरत है। हमें इन संकेतों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। समय पर इन संकेतों कोसमझने और चिकित्सा सहायता लेने से हम गंभीर बीमारियों से बच सकते हैं। इसके लिए हमें अपनीदिनचर्या में ध्यान, मेडिटेशन और योग जैसी गतिविधियाँ शामिल करनी चाहिए जो शरीर और मस्तिष्कको बेहतर ढंग से जुड़ने में मदद करती हैं।

स्वच्छता और स्वास्थ्य

स्वास्थ्य केवल आहार और व्यायाम से ही संबंधित नहीं है बल्कि यह स्वच्छताऔर अच्छे वातावरण से भी जुड़ा है। यदि हम स्वच्छ वातावरण में नहीं रहते हैं तो इसके परिणामस्वरूपस्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं, भले ही हम आहार और व्यायाम पर ध्यान दें। इसलिए, सफाई और स्वच्छता पर ध्यान देना जरूरी है। अच्छा वातावरण हमें शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखने में मदद करता है।

स्वास्थ्य का सार

स्वास्थ्य, जीवन की सबसे महत्वपूर्ण चीज है। यह वह कुंजी है जो हमें खुद से प्यार करने और खुद की देखभाल करने में मदद करती है। स्वस्थ शरीर हमें अपने जीवन के हर पहलू कोबेहतर तरीके से जीने की शक्ति देता है। योग में शरीर को एक मंदिर कहा गया है क्योंकि यह हमेंआत्मा के साथ जुड़ने और जीवन के उद्देश्य को समझने में मदद करता है।स्वास्थ्य का ख्याल रखना न केवल हमारी जिम्मेदारी है बल्कि यह हमारे आत्मसम्मान और आत्मविश्वास का भी हिस्सा है। जब हम अपने शरीर का ख्याल रखते हैं तो हम अपनी पूरी क्षमता केसाथ जीवन जी सकते हैं। इसलिए, यह बेहद महत्वपूर्ण है कि हम अपनी जीवनशैली में स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें और स्वस्थ आदतों को अपनाएं।

निष्कर्ष

स्वस्थ रहना केवल बीमारियों से बचने के बारे में नहीं है बल्कि यह एक समग्र दृष्टिकोण है जोशारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को ध्यान में रखता है। एक स्वस्थ जीवन जीने के लिएसंतुलित आहार, नियमित व्यायाम, मानसिक शांति और स्वच्छता पर ध्यान देना चाहिए। स्वास्थ्य जीवनकी वह कुंजी है जो हमें अपने आत्मसम्मान और जीवन के उद्देश्य को समझने में मदद करती है।इसलिए हमें इसे अपनी प्राथमिकता बनानी चाहिए और हमेशा खुद की देखभाल करनी चाहिए।

– ममता ईदनानी
गोपनीय सहायक

कभी -कभी हम किसी के लिए उतना जरुरी भी नहीं होते हैं जितना हम सोच लेते हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति का सूत्रधार- इंटरनेट

इंटरनेट एक ऐसा वैश्विक नेटवर्क है जिसने सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी.) के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। यह एक विशाल और शक्तिशाली नेटवर्क है जिसे संक्षेप में "नेट" भी कहा जाता है। इंटरनेट, विश्वभर के कम्प्यूटरों और उपनेटवर्कों को एक दूसरे से जोड़ने वाला एक जाल है। इसे स्थापित करने के लिए टी सी पी/आई पी प्रोटोकॉल का प्रयोग किया जाता है जिसके माध्यम से दो या दो से अधिक कम्प्यूटरों को आपस में जोड़कर उन्हें नेटवर्क का भाग बनाया जाता है। इंटरनेट के द्वारा किसी भी स्थान पर स्थित किसी भी कम्प्यूटर से जानकारी आदान-प्रदान किया जा सकता है। यह कम्प्यूटर नेटवर्क्स का एक विस्तृत रूप है, जिसके अंतर्गत कई प्रकार के नेटवर्क जैसे लैन, इंटरनेट और इंट्रानेट शामिल हैं।

इंटरनेट ने दुनियाभर में मानवीय जीवन को आसान और सुविधाजनक बना दिया है। आजकल, इंटरनेट के बिना जीवन की कल्पना करना मुश्किल हो गया है। यह न केवल व्यक्तिगत उपयोग के लिए बल्कि व्यवसाय, शिक्षा, स्वास्थ्य, सरकार, और अन्य क्षेत्रों में भी बहुत महत्वपूर्ण बन चुका है। इंटरनेट के हम कुछ ही समय में सूचना का आदान-प्रदान कर सकते हैं, व्यापार कर सकते हैं, ऑनलाइन शॉपिंग कर सकते हैं, बैंकों के काम निपटा सकते हैं, और शिक्षा से लेकर मनोरंजन तक सभी क्षेत्रों में इसका उपयोग हो रहा है।

इंटरनेट का इतिहास

इंटरनेट का इतिहास 1960 के दशक से जुड़ा हुआ है। सबसे पहले, अमेरिका के रक्षा मंत्रालय द्वारा एडवांस रिसर्च प्रोजेक्ट्स एजेंसी नेटवर्क की स्थापना की गई थी, जिसका उद्देश्य विभिन्न सरकारी एजेंसियों के बीच डेटा आदान-प्रदान करना था। इसके बाद, इंटरनेट की तकनीकी नींव विकसित की गई और 1980 के दशक में इसे सार्वजनिक रूप से उपयोग में लाया गया। भारत में इंटरनेट 1990 के दशक के अंत में आया और धीरे-धीरे इसकी पहुंच बढ़ने लगी।

इंटरनेट के लाभ

इंटरनेट के उपयोग से न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि समाज के कई क्षेत्रों में भी सकारात्मक बदलाव आया है। इंटरनेट ने हमारे जीवन को सरल और सुविधाजनक बना दिया है। इसके कुछ प्रमुख फायदे निम्नलिखित हैं:

1) **सूचना का त्वरित आदान-प्रदान**:
इंटरनेट के माध्यम से हम किसी भी जानकारी को मिनटों में भेज और प्राप्त कर सकते हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण ई-मेल (Email) है, जिसके द्वारा हम अपनी आवश्यकताएँ और सूचनाएँ तुरंत एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेज सकते हैं।

2) **ऑनलाइन शॉपिंग**:
इंटरनेट ने खरीदारी के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। अब लोग घर बैठे ही विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर जाकर अपनी पसंदीदा वस्तुएं खरीद सकते हैं। इससे समय की बचत होती है और सामान की तुलना करना भी आसान हो जाता है।

3) **शिक्षा का प्रचार और प्रसार**:
इंटरनेट ने शिक्षा के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी बदलाव किया है। अब विद्यार्थी घर बैठे ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। वे ऑनलाइन पाठ्यक्रम, ट्यूटोरियल्स, और अन्य शैक्षिक सामग्री का उपयोग करके अपनी शिक्षा को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

4) **सम्पर्क में बने रहना**:
इंटरनेट ने लोगों को एक दूसरे से जुड़ने के नए और प्रभावी तरीके दिए हैं। विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर आदि के माध्यम से लोग अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के संपर्क में बने रह सकते हैं, चाहे वे किसी भी स्थान पर हों।

5) **मनोरंजन और मीडिया**:
इंटरनेट ने मनोरंजन की दुनिया को पूरी तरह से बदल दिया है। अब हम इंटरनेट के माध्यम से संगीत, वीडियो, फिल्में और गेम्स आदि का आनंद ले सकते हैं। इससे

न केवल मनोरंजन का स्तर बढ़ा है, बल्कि लोग अपनी पसंद के अनुसार सामग्री का चयन कर सकते हैं।

6) **ऑनलाइन बैंकिंग और बिल भुगतान**:
इंटरनेट ने वित्तीय लेन-देन को भी सरल बना दिया है। अब लोग ऑनलाइन बैंकिंग के जरिए अपने खातों को नियंत्रित कर सकते हैं, बिल का भुगतान कर सकते हैं, और कई अन्य वित्तीय कार्यों को आसानी से संपन्न कर सकते हैं।

7) **सरकारी सेवाएं**:
अब सरकारी विभागों द्वारा भी इंटरनेट के माध्यम से कई सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। लोग घर बैठे ही विभिन्न सरकारी सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं, जैसे कि बिजली और पानी के बिलों का भुगतान, पासपोर्ट आवेदन, आयकर रिटर्न, और अन्य कार्य।

इंटरनेट की हानियाँ

इंटरनेट के अनगिनत लाभों के बावजूद, इसकी कुछ हानियाँ भी हैं। कुछ असामाजिक तत्वों ने इंटरनेट का गलत तरीके से उपयोग करना शुरू कर दिया है जिसके कारण समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इंटरनेट की कुछ प्रमुख हानियाँ निम्नलिखित हैं:

1) **साइबर क्राइम और हैकिंग**:
इंटरनेट ने साइबर क्राइम और हैकिंग को बढ़ावा दिया है। विभिन्न असामाजिक तत्वों ने इंटरनेट का दुरुपयोग करके व्यक्तिगत जानकारी चुराने, ऑनलाइन धोखाधड़ी करने और अन्य अपराधों को अंजाम दिया है।

2) **मानसिक और शारीरिक समस्याएं**:
इंटरनेट पर अत्यधिक समय बिताने से मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसके अलावा, लंबे समय तक कंप्यूटर या स्मार्टफोन का उपयोग करने से आँखों की समस्याएं, सिरदर्द और शारीरिक थकावट भी हो सकती है।

3) **अश्लील और हिंसक सामग्री**:
इंटरनेट पर अश्लील और हिंसक सामग्री का प्रसार भी एक बड़ा खतरा बन गया है। यह बच्चों और किशोरों के मानसिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है और उन्हें गलत दिशा में ले जा सकता है।

4) **सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग**:
सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर ट्रोलिंग और ऑनलाइन पीछा करने की घटनाएँ बढ़ी हैं। यह न केवल व्यक्तिगत सुरक्षा को खतरे में डालता है बल्कि मानसिक रूप से भी लोगों को परेशान कर सकता है।

5) **नौकरी और शिक्षा में निर्भरता**:
इंटरनेट के बढ़ते उपयोग ने कई क्षेत्रों में लोगों की निर्भरता बढ़ा दी है। उदाहरण के लिए, शिक्षा और नौकरी के मामले में, इंटरनेट की मदद से हम बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं लेकिन इसका अत्यधिक उपयोग रोजगार के अवसरों और पारंपरिक विधियों को प्रभावित कर सकता है।

इंटरनेट का भविष्य-

इंटरनेट का भविष्य और भी रोमांचक और प्रभावशाली होने वाला है। आगामी वर्षों में इंटरनेट की गति और क्षमता में वृद्धि होगी और यह और भी अधिक कार्यों को आसान बना देगा। 5जी और 6जी जैसी नई तकनीकों के आने से इंटरनेट के उपयोग में और भी वृद्धि होगी और इंटरनेट के माध्यम से स्मार्ट शहर, स्मार्ट घर, और इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसे क्षेत्रों में तेजी से विकास होगा।

निष्कर्ष-

इंटरनेट ने आज के युग में मानव जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है। इसकी सहायता से हम विश्व के किसी भी कोने में अपनी जानकारी साझा कर सकते हैं, संवाद कर सकते हैं और व्यापार कर सकते हैं। यद्यपि इंटरनेट के कई लाभ हैं लेकिन इसकी कुछ हानियों को भी नकारा नहीं जा सकता। हमें इंटरनेट का सही तरीके से उपयोग करना चाहिए और इसके दुरुपयोग से बचने के लिए सतर्क रहना चाहिए। इस प्रकार, इंटरनेट के द्वारा हम अपने कार्यों को आसान और त्वरित बना सकते हैं लेकिन हमें इसके नकरात्मक पहलुओं से भी बचने के लिए उचित सावधानियां बरतनी चाहिए।

– मयुरी धारवणे
आईटी इंजीनियर

एमआरवीसी की 2024-25 की
विशिष्ट / प्रमुख उपलब्धियां

एशियन इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक की 08 से 11 अप्रैल 2025 तक आयोजित बैठक के कुछ दृश्य।

02.04.25 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, जगजीवन राम अस्पताल, मुंबई सेंट्रल को वाहन एवं चाबी सौंपते हुए।

17.07.24 को राजभाषा में प्रशंसनीय कार्य के लिए उपक्रमों की नराकास की शील्ड प्राप्त करते हुए और बैठक में भाग लेते हुए तत्कालीन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा अन्य अधिकारी।

26 जनवरी,2025 को एमआरवीसी द्वारा एक परियोजना स्थल पर आयोजित गणतंत्र दिवस की झलकियां।

07.03.2025 को महिलाओं के लिए आयोजित कैंसर जागरूकता कार्यक्रम के कुछ चित्र।

विश्व क्षयरोग दिवस के अवसर पर 24.03.2025 को आयोजित स्वास्थ्य शिविर के कुछ दृश्य।

12 जुलाई 2024 को आयोजित 25 वें वार्षिक उत्सव के कुछ दृश्य।

21 जून 2024 को कॉर्पोरेट कार्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के चित्र।

28.10. से 03.11.2024 तक आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह के कतिपय चित्र।

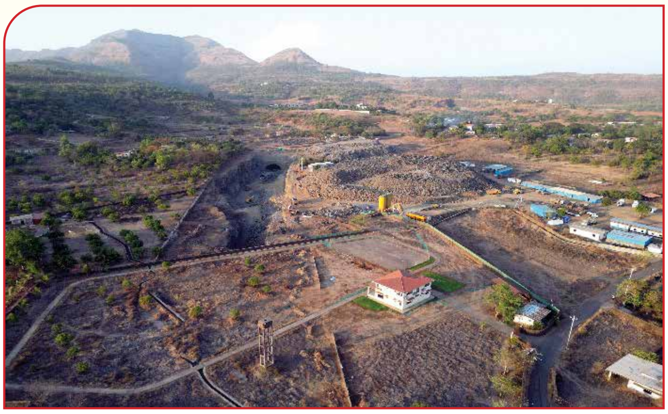

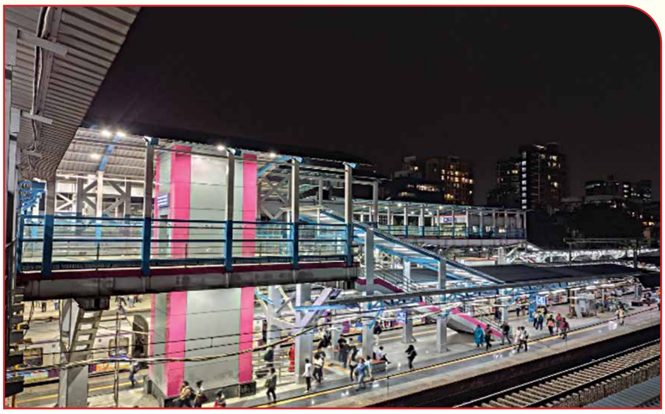

कॉरपोरेशन द्वारा निष्पादित की जाने वाली विविध परियोजनाओं के अंतर्गत निर्माणाधीन कार्यों के कुछ दृश्य।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को बढ़ाने के लिए समय –समय पर आयोजित विभिन्न गतिविधियों की झलकियां ।

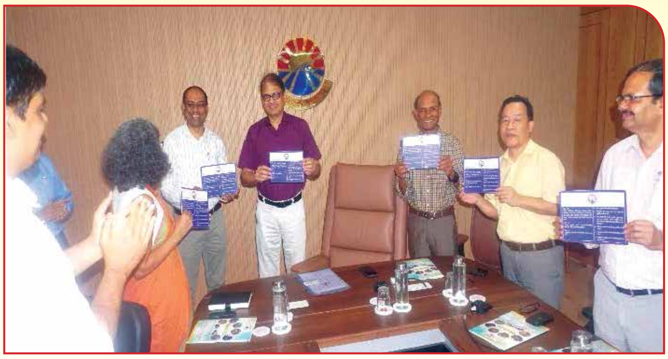

अतिथि

एक काँठलिया के जमींदार मतिलाल बाबू नौका से सपरिवार अपने घर जा रहे थे। रास्ते में दोपहर के समय नदी के किनारे की एक मंडी के पास नौका बाँधकर भोजन बनाने का आयोजन कर ही रहे थे कि इसी बीच एक ब्राह्मण-बालक ने आकर पूछा, ''बाबू, तुम लोग कहाँ जा रहे हो?'' मति बाबू ने उत्तर दिया, ''काँठालिया।'' ब्राह्मण-बालक ने कहा, ''मुझे रास्ते में नंदीग्राम उतार देंगे आप'' बाबू ने स्वीकृति प्रकट करते हुए पूछा, ''तुम्हारा क्या नाम है?'' ब्राह्मण-बालक ने कहा, ''मेरा नाम तारापद है।'' गौरवर्ण बालक देखने में बड़ा सुंदर था। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों और मुस्कराते हुए ओष्ठाधरों पर सुललित सौकमार्य झलक रहा था। वस्त्र के नाम पर उसके पास एक मैली धोती थी। उघरी हुई देह में किसी प्रकार का बाहुल्य न था, मानो किसी शिल्पी ने बड़े यत्न से निर्दोष, सुडौल रूप में गढ़ा हो। मानो वह पूर्वजन्म में तापस-बालक रहा हो और निर्मल तपस्या के प्रभाव से उसकी देह का बहुत-सा अतिरिक्त भाग क्षय होकर एक साम्मर्जित ब्राह्मण्य-श्री परिस्फुट हो उठी हो।

मतिलाल बाबू ने बड़े स्नेह से उससे कहा, ''बेटा, स्नान कर आओ, भोजनादि यहीं होगा।'' तारापद बोला, ''ठहरिए!'' और वह तत्क्षण निस्संकोच भोजन के आयोजन में सहयोग देने लगा। मतिलाल बाबू का नौकर गैर-बंगाली था, मछली आदि काटने में वह इतना निपुण नहीं था; तारापद ने उसका काम स्वयं लेकर थोड़े ही समय में अच्छी तरह से संपन्न कर दिया और एक-दो तरकारी भी बड़ी कुशलता से तैयार कर दी। भोजन बनाने का कार्य समाप्त होने पर तारापद ने नदी में स्नान करके पोटली खोली और एक सफेद वस्त्र धारण किया; काठ की एक छोटी-सी कंघी लेकर सिर के बड़े-बड़े बाल माथे पर से हटाकर गर्दन पर डाल लिए और स्वच्छ जनेऊ का धागा छाती पर लटकाकर नौका पर बैठे मति बाबू के पास जा पहुँचा। मति बाबू उसे नौका के भीतर ले गए। वहाँ मति बाबू की स्त्री और उनकी नौ वर्षीया कन्या बैठी थी। मति बाबू की स्त्री अन्नपूर्णा इस सुंदर बालक को देखकर मन-ही-मन कह उठीं, 'अहा! किसका बच्चा है, कहाँ से आया है? इसकी माँ इसे छोड़कर किस प्रकार जीती होगी?'' मति बाबू और इस लड़के के लिए पास-पास दो आसन डाले गए। लड़का ऐसा भोजन-प्रेमी न था, अन्नपूर्णा ने उसका अल्प आहार देखकर मन में सोचा कि लज्जा रहा है; उससे यह-वह खाने को बहुत अनुरोध करने लगीं; किंतु जब वह भोजन से निवृत्त हो गया तो उसने कोई भी अनुरोध न माना। देखा गया, लड़का हर काम अपनी इच्छा के अनुसार करता, लेकिन ऐसे सहज भाव से करता कि उसमें किसी भी प्रकार की जिद या हठ का आभास न मिलता। उसके व्यवहार में लज्जा के लक्षण लेशमात्र भी दिखाई नहीं पड़े। सबके भोजनादि के बाद अन्नपूर्णा उसको पास बिठाकर प्रश्नों द्वारा उसका इतिहास जानने में प्रवृत्त हुईं। कुछ भी विस्तृत विवरण संग्रह नहीं हो सका। बस इतनी-सी बात जानी जा सकी कि लड़का सात-आठ बरस की उम्र में ही स्वेच्छा से घर छोड़कर भाग आया है। अन्नपूर्णा ने प्रश्न किया, ''तुम्हारी माँ नहीं है?''तारापद ने कहा, हाँ ''है।'' अन्नपूर्णा ने पूछा, ''वे तुम्हें प्यार नहीं करतीं?'' इसे अत्यंत विचित्र प्रश्न समझकर हँसते हुए तारापद ने कहा, ''प्यार क्यों नहीं करेंगी!'' अन्नपूर्णा ने प्रश्न किया, ''तो फिर तुम उन्हें छोड़कर क्यों आए?'' तारापद बोला, ''उनके और भी चार लड़के और तीन लड़कियाँ हैं।'' बालक के इस विचित्र उत्तर से व्यथित होकर अन्नपूर्णा ने कहा, ''ओ माँ, यह कैसी बात है! पाँच अँगुलियाँ हैं, तो क्या एक अँगुली त्यागी जा सकती है?'' तारापद की उम्र कम थी, उसका इतिहास भी उसी अनुपात में संक्षिप्त था; किंतु लड़का बिलकुल असाधारण था। वह अपने माता-पिता का चौथा पुत्र था, शैशव में ही पितृहीन हो गया था। बहु-संतान वाले घर में भी माँ, भाई-बहन और मुहल्ले के सभी लोगों को तारापद सबको अत्यंत प्यारा था। यहाँ तक कि गुरुजी भी उसे नहीं मारते थे–मारते तो भी बालक के अपने-पराए सभी उससे वेदना का अनुभव करते। ऐसी अवस्था में उसका घर छोड़ने का कोई कारण नहीं था परंतु समस्त ग्राम का दुलारा यह लड़का एक बाहरी यात्रा-दल में शामिल होकर निर्ममता से ग्राम छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

सब लोग उसका पता लगाकर, उसे गाँव लौटा लाए। उसकी माँ ने उसे छाती से लगाकर आँसुओं से आर्द्र कर दिया। उसकी बहनें रोने लगीं। उसके बड़े भाई ने पुरुष-अभिभावक का कठिन कर्तव्य-पालन करने के उद्देश्य से उस पर मृदुभाव से शासन करने का यत्न करके अंत में अनुतप्त चित्त से खूब प्रश्रय और पुरस्कार दिया। मुहल्ले की लड़कियों ने उसको घर-घर बुलाकर खूब प्यार किया और नाना प्रलोभनों से उसे वश में करने की चेष्टा की। किंतु बंधन, यही नहीं, स्नेह का बंधन भी उसे सहन नहीं हुआ, उसके जन्म-

नक्षत्र ने उसे गृहहीन कर रखा था। वह जब भी देखता कि नदी में कोई विदेशी नौका अपनी रस्सी घिसती जा रही है, गाँव के विशाल पीपल के वृक्ष के तले किसी दूर देश के किसी संन्यासी ने आश्रय लिया है अथवा बंजारे नदी के किनारे ढालू मैदान में छोटी-छोटी चटाइयाँ बाँधकर खपच्चियाँ छीलकर टोकरियाँ बनाने में लगे हैं, तब अज्ञात बाह्य पृथ्वी को स्नेहहीन स्वाधीनता के लिए उसका मन बेचैन हो उठता। लगातार दो-तीन बार भागने के बाद उसके कुटुंबियों और गाँव के लोगों ने उसकी आशा छोड़ दी।

पहले उसने एक यात्रा-दल का साथ पकड़ा। जब अधिकारी उसको पुत्र के समान स्नेह करने लगे और जब वह दल के छोटे-बड़े सभी का प्रिय पात्र हो गया, यही नहीं, जिस घर में यात्रा होती, उस घर के मालिक, विशेषकर घर का महिला वर्ग जब विशेष रूप से उसे बुलाकर उसका आदर-मान करने लगा, तब एक दिन किसी से बिना कुछ कहे वह भटककर कहाँ चला गया, इसका फिर कोई पता न चल सका।

तारापद संगीत-प्रेमी था। यात्रा के संगीत ने ही उसे पहले घर से विरक्त किया था। संगीत का स्वर उसकी समस्त धमनियों में कंपन पैदा कर देता और संगीत की ताल पर उसके सर्वांग में आंदोलन पैदा जाता। जब वह बिलकुल बच्चा था तब भी वह संगीत-सभाओं में जिस प्रकार संयत-गंभीर प्रौढ़ भाव से आत्मविस्मृत होकर बैठा-बैठा झूमने लगता। उसे देखकर प्रवीण लोगों के लिए हँसी संवरण करना कठिन हो जाता। केवल संगीत ही क्यों, वृक्षों के घने पत्तों के ऊपर जब श्रावण की वृष्टि-धारा पड़ती, आकाश में मेघ गरजते, पवन अरण्य में मातृहीन दैत्य-शिशु की भाँति क्रंदन करता रहता तब उसका चित्त मानो उच्छृंखल हो उठता निस्तब्ध दोपहरी में, आकाश से बड़ी दूर से आती चील की पुकार, वर्षा ऋतु की संध्या में मेढ़कों का कलरव, गहन रात में श्रृगालों की चीत्कार-ध्वनि–सभी उसको अधीर कर देते। संगीत के इस मोह से आकृष्ट होकर वह शीघ्र ही एक पांचाली जल (लोकगीत गायकों का दल) में भर्ती हो गया।

मंडली का अध्यक्ष उसे बड़े यत्न से गाना सिखाने और पांचाली कंठस्थ कराने में प्रवृत्त हुआ और उसे अपने वृक्ष-पिंजर के पक्षी की भाँति प्रिय समझकर स्नेह करने लगा। पक्षी ने थोड़ा-बहुत गाना सीखा और एक दिन तड़के उड़कर चला गया। अंतिम बार वह कलाबाजी दिखाने वालों के दल में शामिल हुआ। ज्येष्ठ के अंतिम दिनों से लेकर आषाढ़ के समाप्त होने तक इस अंचल में जगह-जगह क्रमानुसार समवेत रूप से अनुष्ठित मेले लगते। उनके उपलक्ष्य में यात्रा वालों के दो-तीन दल पांचाली गायक, कवि नर्तकियाँ एवं अनेक प्रकार की दुकाने छोटी-छोटी नदियों, उपनदियों के रास्ते नौकाओं द्वारा एक मेले के समाप्त होने पर दूसरे मेले में घूमती रहतीं। पिछले वर्ष से कलकत्ता की एक छोटी कलाबाज-मंडली इस पर्यटनशील मेले के मनोरंजन में योग दे रही थी। तारापद ने पहले तो नौकारूढ़ दुकानदारों के साथ मिलकर पान की गिलौरियाँ बेचने का भार लिया, बाद में अपने स्वाभाविक कौतूहल के कारण इस कारण कलाबाज-दल के अद्भुत व्यायाम-नैपुण्य से आकृष्ट होकर उसमें प्रवेश किया।

तारापद ने स्वयं अभ्यास करके अच्छी तरह बाँसुरी बजाना सीख लिया था–करतब दिखाने के समय वह द्रुत ताल पर लखनवी ठुमरी के सुर में बाँसुरी बजाता–यही उसका एकमात्र काम था। उसका आखिरी पलायन इसी दल से हुआ था। उसने सुना था कि नंदीग्राम के जमींदार बाबू बड़ी धूमधाम से एक शौकिया यात्रा-दल बना रहे हैं–अतः वह अपनी छोटी सी पोटली लेकर नंदीग्राम की यात्रा की तैयारी कर रहा था, इसी समय उसकी भेंट मति बाबू से हो गई। एक के बाद एक नाना दलों में शामिल होकर भी तारापद ने अपनी स्वाभाविक कल्पना-प्रवण प्रकृति के कारण किसी भी दल की विशेषता प्राप्त नहीं की थी। वह अंतःकरण से बिलकुल निर्लिप्त और मुक्त था। संसार में उसने हमेशा से कई बेहूदी बातें सुनीं और अनेक अशोभन दृश्य देखे, किंतु उन्हें उसके मन में संचित होने का रत्ती-भर अवकाश न मिला। उस लड़के का ध्यान किसी ओर था ही नहीं। अन्य बंधनों की भाँति किसी प्रकार का अभ्यास-बंधन भी उसके मन को बाध्य न कर सका। वह उस संसार में पंकिल जल के ऊपर शुभपक्ष राजहंस की भाँति तैरता फिरता।

कौतूहलवश भी वह जितनी बार डुबकी लगाता, उसके पंख न तो भीग पाते थे, न मलिन हो पाते थे। इसी कारण इस गृह-त्यागी लड़के के मुख पर एक शुभ स्वाभाविक तारुण्य भाव से झलकता रहता। उसकी यही मुखश्री देखकर प्रवीण, दुनियादार मतिलाल बाबू ने बिना कुछ पूछे, बिना संदेह किए बड़े प्यार से उसका आह्वान किया था। भोजन समाप्त होने पर नौका चल पड़ी। अन्नपूर्णा बड़े स्नेह से ब्राह्मण-बालक से उसके घर की बातें, उसके स्वजन-कुटुंबियों का समाचार पूछने लगीं। तारापद ने अत्यंत संक्षेप में उनका उत्तर दिया। तारापद ने नौका की छत पर पाल की छाया में जाकर आश्रय लिया। ढालू हरा मैदान, पानी से भरे पाट के खेत, गहन श्याम लहराते हुए आमन हेमंतकालीन धान।) धान, घाट से गाँव की ओर जाने वाले सँकरे रास्ते, सघन वन-वेष्टित छायामय गाँव–एक के बाद एक उसकी आँखों के सामने से निकलने लगे। जल, स्थल, आकाश, चारों ओर की यह गतिशीलता, सजीवता, मुखरता, आकाश-पृथ्वी की यह व्यापकता और वैचित्र्य एवं निर्लिप्त सुदूरता, यह अत्यंत विस्तृत, चिरस्थायी, निर्निमेष, नीरव, वाक्य-विहीन विश्व तरुण बालक के परमात्मीय थे; पर फिर भी वह इस चंचल मानव को क्षण-भर के लिए भी स्नेह-बाहुओं में बाँध रखने की कोशिश नहीं करता था। नदी के

किनारे बछड़े पूँछ उठाए दौड़ रहे थे, गाँव का टट्टू-घोड़ा रस्सी से बँधे अपने अगले पैरों के बल कूदता हुआ घास चरता फिर रहा था, मछरंग पक्षी मछुआरों के जाल बाँधने के बाँस के डंडे से बड़े वेग से पानी में झप से कूदकर मछली पकड़ रहा था, लड़के पानी में खेल रहे थे, लड़कियाँ उच्च स्वर से हँसती हुई बातें करती हुई छाती तक गहरे पानी में अपना वस्त्रांचल फैलाकर दोनों हाथों से उसे धो रही थीं, आँचल कमर में खोंसे मछुआरिनें डलिया लेकर मछुआरों से मछली खरीद रही थीं, इस सबको वह चिरनूतन अश्रांत कौतूहल से बैठा देखता था। उसकी दृष्टि की पिपासा किसी भी तरह निवृत्त नहीं होती थी। नौका की छत पर जाकर तारापद ने धीरे-धीरे खिबैया-माँझियों से बातचीत छेड़ दी। बीच-बीच में आवश्यकतानुसार वह मल्लाहों के हाथ से लग्गी लेकर खुद ही ठेलने लग जाता; माँझियों को जब तमाखू पीने की जरूरत पड़ती तब वह स्वयं जाकर हाल सँभाल लेता। जब जिधर हाल मोड़ना आवश्यक होता, वह दक्षतापूर्वक संपन्न कर देता।

संध्या होने के कुछ पूर्व अन्नपूर्णा ने तारापद को बुलाकर पूछा, "रात में तुम क्या खाते हो" तारापद बोला, "जो मिल जाता है वही खा लेता हूँ; रोज खाता भी नहीं।" इस सुंदर ब्राह्मण-बालक की आतिथ्य-ग्रहण करने की उदासीनता अन्नपूर्णा को थोड़ी कष्टकर प्रतीत हुई। उस की बड़ी इच्छा थी कि खिला-पिलाकर, पहना-ओढ़ाकर इस घर आए यात्री बालक को संतुष्ट करें। किंतु किससे वह संतुष्ट होगा, यह वे नहीं जान सकीं। अन्नपूर्णा ने नौकरों को बुलाकर गाँव से दूध-मिठाई आदि खरीद कर मँगवाए। तारापद ने पेट-भर भोजन तो किया, किंतु दूध नहीं पिया। मौन स्वभाव मतिलाल बाबू तक ने उससे दूध पीने का अनुरोध किया। उसने संक्षेप में कहा, "मुझे अच्छा नहीं लगता।" नदी पर दो-तीन दिन बीत गए। तारापद ने भोजन बनाने, सौदा खरीदने से लेकर नौका चलाने तक सब कामों में स्वेच्छा और तप्परता से योग दिया।

जो भी दृश्य उसकी आँखों के सामने आता, उसी ओर तारापद की कौतूहलपूर्ण दृष्टि दौड़ जाती; जो भी काम उसके हाथ लग जाता, उसी की ओर वह अपने आप आकर्षित हो जाता। उसकी दृष्टि, उसके हाथ, उसका मन सर्वदा ही गतिशील बने रहते, इसी कारण वह इस नित्य चलायमान प्रकृति के समान सर्वदा निश्चिंत, उदासीन रहता; किंतु सर्वदा क्रियासक्त भी। यों तो हर मनुष्य की अपनी एक स्वतंत्र अधिष्ठान भूमि होती है, किंतु तारापद इस अनंत नीलांबरवाही विश्व-प्रवाह की एक आनंदोज्वल तरंग था–भूत-भविष्यत् के साथ उसका कोई संबंध न था। आगे बढ़ते जाना ही उसका एकमात्र काम था।

इधर बहुत दिन तक नाना संप्रदायों के साथ योग देने के कारण अनेक प्रकार की मनोरंजनी विद्याओं पर उसका अधिकार हो गया था। किसी भी प्रकार की चिंता से आच्छन्न न रहने के कारण उसके निर्मल स्मृति-पटल पर सारी बातें अद्भुत सहज ढंग से अंकित हो जातीं। मतिलाल बाबू अपनी नित्य-प्रति की प्रथा के अनुसार एक दिन संध्या समय अपनी पत्नी और कन्या को रामायण पढ़कर सुना रहे थे, लव-कुश की कथा की भूमिका चल रही थी, तभी तारापद अपना उत्साह संवरण न कर पाने के कारण नौका की छत से उतर आया और बोला, "किताब रहने दें। मैं लव-कुश का गीत सुनाता हूँ, आप सुनते चलिए!" यह कहकर उसने लव-कुश की पांचाली शुरू कर दी। उस नदी-नीर के संध्याकाश में हास्य, करुणा एवं संगीत का एक अपूर्व रस-स्रोत प्रवाहित होने लगा।

दोनों निस्तब्ध किनारे कौतूहलपूर्ण हो उठे, पास से जो सारी नौकाएँ गुजर रही थीं उनमें बैठे लोग क्षण-भर के लिए उत्कंठित होकर उसी ओर कान लगाए रहे। जब गीत समाप्त हो गया तो सभी ने व्यथित चित्त से लंबी साँस लेकर सोचा, इतनी जल्दी यह क्यों समाप्त हो गया? सजल नयना अन्नपूर्णा की इच्छा हुई कि उस लड़के को गोद में बिठाकर छाती से लगाकर उसका माथा चूँम ले। मतिलाल बाबू सोचने लगे, यदि इस लड़के को किसी प्रकार अपने पास रख सकूँ तो पुत्र का अभाव पूरा हो जाए। केवल छोटी बालिका चारुशशि का अंतःकरण ईर्ष्या और विद्वेष से परिपूर्ण हो उठा। चारुशशि अपने माता-पिता की इकलौती संतान और उनके स्नेह की एकमात्र अधिकारिणी थी। उसकी धुन और हठ की कोई सीमा न थी। खाने, पहनने, बाल बनाने के संबंध में उसका स्वतंत्र मत था; किंतु उसके मन में तनिक भी स्थिरता नहीं थी। जिस दिन कहीं निमंत्रण होता उस दिन उसकी माँ को भय रहता कि कहीं लड़की साज-सिंगार को लेकर कोई असंभव जिद न कर बैठे। यदि कभी केश-बंधन उसके मन के अनुकूल न हुआ तो फिर उस दिन चाहे जितनी बार बाल खोलकर चाहे जितने प्रकार से बाँधे जाते, वह किसी तरह संतुष्ट न होती।

और अंत में रोना-धोना मच जाता। यह बालिका अपने दुर्बोध्य हृदय के पूरे वेग का प्रयोग करके मन-ही-मन विषम ईर्ष्या से तारापद का निरादर करने लगी। माता-पिता को भी पूरी तरह से उद्विग्न कर डाला। भोजन के समय रोदनोन्मुखी होकर भोजन के पात्र को ठेलकर फेंक देती, खाना उसको रुचिकर नहीं लगता; नौकरानी को मारती, सभी बातों में अकारण शिकायत करती रहती। जैसे-जैसे तारापद की विद्याएँ उसका एवं अन्य सबका मनोरंजन करने लगीं, वैसे-ही-वैसे मानो उसका क्रोध बढ़ने लगा। तारापद में कोई गुण है, इसे उसका मन स्वीकार करने से विमुख रहता और उसका प्रमाण जब प्रबल होने लगा तो उसके असंतोष की मात्रा भी बढ़ गई। तारापद ने जिस दिन लव-कुश का गीत सुनाया उस दिन अन्नपूर्णा ने सोचा, संगीत से वन के पशु तक वश में आ जाते हैं, आज शायद मेरी लड़की का मन पिघल गया है। उससे

पूछा, "चारु, कैसा लगा?" उसने कोई उत्तर दिए बिना बड़े जोर से सिर हिला दिया। भाषा में इस मुद्रा का तरजुमा करने पर यह प्रतीत हुआ कि जरा भी अच्छा नहीं लगा और न कभी अच्छा लगेगा।

चारु के मन में ईर्ष्या का उदय हुआ है, यह समझकर उसकी माँ ने चारु के सामने तारापद के प्रति स्नेह प्रकट करना कम कर दिया। संध्या के बाद जब चारु जल्दी-जल्दी खाकर सो जाती तब अन्नपूर्णा नौका-कक्ष के दरवाजे के पास आकर बैठतीं और मति बाबू और तारापद बाहर बैठते। अन्नपूर्णा के अनुरोध पर तारापद गाना शुरू करता। उसके गाने से जब नदी के किनारे की विश्रामनिरता ग्राम-श्री संध्या के विपुल अंधकार में मुग्ध निस्तब्ध हो जाती और अन्नपूर्णा का कोमल हृदय स्नेह और सौंदर्य-रस से छलकने लग जाता तब सहसा चारु बिछौने से उठकर तेजी से आकर सरोष रोती हुई कहती, "माँ, तुमने यह क्या शोर मचा रखा है! मुझे नींद नहीं आती।" माता-पिता उसको अकेला सुलाकर तारापद को घेरकर संगीत का आनंद ले रहे हैं, यह उसे एकदम असह्य हो उठता। इस दीप्त कृष्णनयना बालिका की स्वाभाविक उग्रता तारापद को बड़ी मनोरंजक प्रतीत होती। उसने इसे कहानी सुनाकर, गाना गाकर, बाँसुरी बजाकर वश में करने की बहुत चेष्टा की किंतु किसी भी प्रकार सफल नहीं हुआ।

केवल जब मध्याह्न में तारापद नदी में स्नाने करने उतरता, परिपूर्ण जलराशि में अपनी गौरवर्ण सरल कमनीय देह को तैरने की अनेक प्रकार की क्रीड़ाओं में संचालित करता, तरुण जल-देवता के समान शोभा पाता, तब बालिका का कौतूबल आकर्षित हुए बिना न रहता। वह इसी समय की प्रतीक्षा करती रहती; किंतु आंतरिक इच्छा का किसी को भी पता न चलने देती और यह अशिक्षापटु, अभिनेत्री ध्यानपूर्वक ऊनी गुलूबंद बुनने का अभ्यास करती हुई बीच-बीच में मानो अत्यंत उपेक्षा-भरी दृष्टि से तारापद की संतरण-लीला देखा करती। चार नंदीग्राम कब छूट गया, तारापद को पता न चला। विशाल नौका अत्यंत मृदु-मंद गति से कभी पाल तानकर, कभी रस्सी खींचकर अनेक नदियों की शाखा-प्रशाखाओं में होकर चलने लगी, नौकारोहियों के दिन भी इन सब नदी-उपनदियों के समान, शांति-सौंदर्यपूर्ण वैचित्र्य के बीच सहज सौम्य गति से मृदुमिष्ट कल-स्वर में प्रवाहित होने लगे। किसी को किसी प्रकार की जल्दी नहीं थी।

इस प्रकार दस दिन में नौका काँठालिया पहुँची।जमींदार के आगमन से घर से पालकी और टट्टू-घोड़ों का समागम हुआ, और हाथ में बाँस की लाठी धारण किए सिपाही-चौकीदारों के दल ने बार-बार बंदूक की खाली आवाज से गाँव के उत्कंठित काक समाज को 'यत्परोनास्ति' मुखर कर दिया। इस सारे समारोह में समय लगा, इस बीच में तारापद ने तेजी से नौका से उतरकर एक बार सारे गाँव का चक्कर लगा डाला। किसी को दादा, किसी को काका, किसी को दीदी, किसी को मौसी कहकर दो-तीन घंटे में सारे गाँव के साथ सौहार्द् बंधन स्थापित कर लिया। कहीं भी उसके लिए स्वभावतः कोई बंधन नहीं था, इससे तारापद ने देखते-देखते थोड़े दिनों में ही गाँव के समस्त हृदयों पर अधिकार कर लिया। इतनी आसानी से हृदय-हरण करने का कारण यह था कि तारापद हरेक के साथ उसका अपना बनकर स्वाभाविक रूप से सहयोग दे सकता था। वह किसी भी प्रकार के विशेष संस्कारों के द्वारा बँधा हुआ नहीं था, अतएव सभी अवस्थाओं में और सभी कामों में उसमें एक प्रकार की सहज प्रवीणता थी। बालकों के लिए वह बिलकुल स्वाभाविक बालक था और उनसे श्रेष्ठ और स्वतंत्र, वृद्धों के लिए वह बालक न रहता, किंतु पुरखा भी नहीं, चरवाहों के साथ चरवाहा था, फिर भी ब्राह्मण। हरेक के हर काम में वह चिरकाल के सहयोगी के समान अभ्यस्त भाव से हस्तक्षेप करता। हलवाई की दुकान पर बैठकर साल के पत्ते से संदेश पर बैठी मक्खियाँ उड़ाने लग जाता। मिठाइयाँ बनाने में भी पक्का था, करघे का मर्म भी उसे थोड़ा-बहुत मालूम था, कुम्हार का चाक चलाना भी उसके लिए बिलकुल नया नहीं था।

तारापद ने सारे गाँव को वश में कर लिया, बस केवल ग्रामवासिनी बालिका की ईर्ष्या वह अभी तक नहीं जीत पाया था। यह बालिका उग्रभाव से उसके बहुत दूर निर्वासन की कामना करती थी, यही जानकर शायद तारापद इस गाँव में इतने दिन आबद्ध बना रहा किंतु बालिकावस्था में भी नारी के अंतर रहस्य का भेद जानना बहुत कठिन है, चारुशशि ने इसका प्रमाण दिया। ब्राह्मण पुरोहिताइन की कन्या सोनामणि पाँच वर्ष की अवस्था में विधवा हो गई थी; वह चारु की समवयस्का सहेली थी। अस्वस्थ होने के कारण वह घर लौटी सहेली से कुछ दिनों तक भेंट न कर सकी। स्वस्थ होकर जिस दिन भेंट करने आई उस दिन प्रायः अकारण ही दोनों सहेलियों में कुछ चर्चा हुई। चारु ने अत्यंत विस्तार से बात आरंभ की थी। उसने सोचा था कि तारापद नामक अपने नवार्जित परम रत्न को जुटाने की बात का विस्तारपूर्वक वर्णन करके वह अपनी सहेली के कौतूहल एवं विस्मय को सप्तम पर चढ़ा देगी किंतु जब उसने सुना कि तारापद सोनामणि उसको 'भाई' कहकर पुकारती है, जब उसने सुना कि तारापद ने केवल बाँसुरी पर कीर्तन का सुर बजाकर माता और पुत्री का मनोरंजन ही नहीं किया है, सोनामणि के अनुरोध से उसके लिए अपने हाथों से बाँस की एक बाँसुरी भी बना दी है, न जाने कितने दिनों से वह उसे ऊँची डाल से फल और कंटक-शाखा से फूल तोड़कर देता रहा है तब चारु के अंतःकरण को मानो तप्तशूल बेधने लगा। चारु समझती थी कि तारापद विशेष रूप से उन्हीं का तारापद था–अत्यंत गुप्त रूप में संरक्षणीय; अन्य साधारणजन केवल

उसका थोड़ा-बहुत आभास-मात्र पाएँगे, फिर भी किसी भी तरह उसका सामीप्य न पा सकेंगे, दूर से ही उसके रूप-गुण पर मुग्ध होंगे और चारुशशि को धन्यवाद देते रहेंगे। यही अद्भुत दुर्लभ, दैवलब्ध ब्राह्मण-बालक सोनामणि के लिए सहज क्यों हुआ? हम यदि उसे इतना यत्न करके न लाते, इतने यत्न से न रखते तो सोनामणि आदि उसका दर्शन कहाँ से पातीं? सोनामणि का 'भैया' शब्द सुनते ही उसके शरीर में आग लग गई। चारु जिस तारापद को मन ही मन विद्वेष-बाणों से जर्जर करने की चेष्टा करती रही है, उसी के एकाधिकार को लेकर इतना प्रबल उद्वेग क्यों?–किसकी सामर्थ्य है जो यह समझे! उसी दिन किसी अन्य तुच्छ बात के सहारे सोनामणि के साथ चारु की गहरी कुट्टी हो गई और वह तारापद के कमरे में जाकर उसकी प्रिय बाँसुरी लेकर उस पर कूद-कूदकर उसे कुचलती हुई निर्दयतापूर्वक तोड़ने लगी। चारु जब प्रचंड रोष में इस बाँसुरी-ध्वंस कार्य में व्यस्त थी तभी तारापद ने कमरे में प्रवेश किया। बालिका की यह प्रलय-मूर्ति देखकर उसे आश्चर्य हुआ। बोला, ''चारु, मेरी बाँसुरी क्यों तोड़ रही हो?'' चारु रक्त नेत्रों और लाल मुख से ''ठीक कर रही हूँ, अच्छा कर रही हूँ'' कहकर टूटी हुई बाँसुरी को और दो-चार अनावश्यक लातें मारकर उच्छ्वसित कंठ से रोती हुई कमरे से बाहर चली गई। तारापद ने बाँसुरी उठाकर उलट-पलटकर देखी, उसमें अब कोई दम नहीं था। अकारण ही अपनी पुरानी बाँसुरी की यह आकस्मिक दुर्गति देखकर वह अपनी हँसी न रोक सका।

चारुशशि दिनों दिन उसके परम कौतूहल का विषय बनती जा रही थी। उसके कौतूहल का एक और क्षेत्र था, मतिलाल बाबू की लाइब्रेरी में तस्वीरों वाली अंग्रेजी की किताबें। बाहरी जगत् से उसका यथेष्ट परिचय हो गया था, किंतु तस्वीरों के इस जगत् में वह किसी प्रकार भी अच्छी तरह प्रवेश नहीं कर पाता था। कल्पना द्वारा वह अपने मन में बहुत कुछ जमा लेता, किंतु उससे उसका मन किसी प्रकार तृप्त न होता। तस्वीरों की पुस्तकों के प्रति तारापद का यह आग्रह देखकर एक दिन मतिलाल बाबू बोले, ''अंग्रेजी सीखोगे? तब तुम इन सारी तस्वीरों का अर्थ समझ लोगे!'' तारापद ने तुरंत कहा, ''सीखूँगा।''

मति बाबू बड़े खुश हुए। उन्होंने गाँव के एंट्रेंस स्कूल के हेडमास्टर रामरतन बाबू की प्रतिदिन संध्या-समय इस लड़के को अंग्रेजी पढ़ाने के लिए नियुक्त कर दिया। तारापद अपनी प्रखर स्मरण-शक्ति एवं अखंड मनोयोग के साथ अंग्रेजी शिक्षा में प्रवृत्त हुआ। मानो वह किसी नवीन दुर्गम राज्य में भ्रमण करने निकला हो, उसने पुराने जगत् के साथ कोई संपर्क न रखा; मुहल्ले के लोग अब उसे न देख पाते, जब वह संध्या के पहले निर्जन नदी-तट पर तेजी से टहलते-पाठ कंठस्थ करता, तब उसका उपासक बालक-संप्रदाय दूर से खिन्नचित्त होकर संभ्रमपूर्णक उसका निरीक्षण करता, उसके पाठ में बाधा डालने का साहस न कर पाता। चारु भी आजकल उसे बहुत नहीं देख पाती थी। पहले तारापद अंतःपुर में जाकर अन्नपूर्णा की स्नेह-दृष्टि के सामने बैठकर भोजन करता था किंतु इसके कारण कभी-कभी देर हो जाती थी। इसीलिए उसने मति बाबू से अनुरोध करके अपने भोजन की व्यवस्था बाहर ही करा ली थी। अन्नपूर्णा ने व्यथित होकर इस पर आपत्ति प्रकट की थी, किंतु अध्ययन के प्रति बालक का उत्साह देखकर अत्यंत संतुष्ट होकर उन्होंने इस नई व्यवस्था का अनुमोदन कर दिया। तभी सहसा चारु भी जिद कर बैठी, ''मैं भी अंग्रेजी सीखूँगी।'' उसके माता-पिता ने अपनी कन्या के इस प्रस्ताव को पहले तो परिहास का विषय समझकर स्नेह-मिश्रित हँसी उड़ाई किंतु कन्या ने इस प्रस्ताव के परिहास्य अंश को प्रचुर अश्रु जलधारा से तुरंत पूर्ण रूप से धो डाला। अंत में इन स्नेह-दुर्बल निरुपाय अभिभावकों ने बालिका के प्रस्ताव को गंभीरता से स्वीकार कर लिया। तारापद के साथ-साथ चारु भी मास्टर से पढ़ने लग गई। किंतु पढ़ना-लिखना इस अस्थिर चित्त बालिका के स्वभाव के विपरीत था। वह स्वयं तो कुछ न सीख पाई, बस तारापद की पढाई में विघ्न डालने लगी। वह पिछड़ जाती, पाठ कंठस्थ न करती किंतु फिर भी वह किसी प्रकार तारापद से पीछे रहना न चाहती। तारापद के उससे आगे निकलकर नया पाठ लेने पर वह बहुत रुष्ट होती, यहाँ तक कि रोने-धोने से भी बाज न आती थी। तारापद के पुरानी पुस्तक समाप्त कर नई पुस्तक खरीदने पर उसके लिए भी नई पुस्तक खरीदनी पड़ती।

तारापद छुट्टी के समय स्वयं कमरे में बैठकर लिखता और पाठ कंठस्थ करता, यह उस ईर्ष्या-परायण बालिका से सहन न होता। वह छिपकर उसके लिखने की कॉपी में स्याही उड़ेल देती, कलम चुराकर रख देती, यहाँ तक कि किताब में जिसका अभ्यास करना होता उस अंश को फाड़ आती। तारापद बालिका की यह सारी धृष्टता आमोदपूर्वक सहता, असह्य होने पर मारता किंतु किसी प्रकार भी उसका नियंत्रण नहीं कर सका। इसका एक उपाय निकल आया। एक दिन बहुत खीझकर निरुपाय तारापद स्याही से रँगी अपनी लिखने की कॉपी फाड़-फेंककर गंभीर खिन्न मुद्रा में बैठा था, दरवाजे के समीप खड़ी चारु ने सोचा, आज मार पड़ेगी। किंतु उसकी प्रत्याशा पूर्ण नहीं हुई। तारापद बिना कुछ कहे चुपचाप बैठा रहा। बालिका कमरे के भीतर-बाहर चक्कर काटने लगी। बारंबार उसके इतने समीप से निकलती कि तारापद चाहता तो अनायास ही उसकी पीठ पर थप्पड़ जमा सकता था किंतु वह वैसा न करके गंभीर ही बना रहा। बालिका बड़ी मुश्किल में पड़ गई। किस प्रकार क्षमा-प्रार्थना करनी होती है, उस विद्या का उसने कभी अभ्यास न किया था, अतएव उसका हृदय अपने सहपाठी से क्षमा-याचना करने के लिए अत्यंत कातर हो उठा।

अंत में कोई उपाय न देखकर फटी हुई लेख-पुस्तिका का टुकड़ा लेकर तारापद के पास बैठकर खूब बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा, 'मैं फिर कभी किताब पर स्याही नहीं फैलाऊँगी।' लिखना समाप्त करके वह उस लेख की ओर तारापद का ध्यान आकर्षित करने के लिए अनेक प्रकार की चंचलता प्रदर्शित करने लगी। यह देखकर तारापद हँसी न रोक सका–वह हँस पड़ा। इस पर बालिका लज्जा और क्रोध से अधीर होकर कमरे में भाग गई। जिस कागज के टुकड़े पर उसने अपने हाथ से दीनता प्रकट की थी उसको अनंतकाल के लिए अनंत जगत से बिलकुल लोप कर पाती तो उसके हृदय का गहरा क्षोभ मिट सकता। उधर संकुचित चित्त सोनामणि एक-दो-दिन अध्ययनशाला के बाहर घूम-फिरकर झाँककर चली गई। सहेली चारु शशि के साथ सब बातों में उसका विशेष बंधुत्व था, किंतु तारापद के संबंध में वह चारु को अत्यंत भय और संदेह से देखती। चारु जिस समय अंतःपुर में होती, उसी समय का पता लगाकर सोनामणि संकोच करती हुई तारापद के द्वार के पास आ खड़ी होती। तारापद किताब से मुँह उठाकर सस्नेह कहता, "क्यों सोना! क्या समाचार है? मौसी कैसी है?" सोनामणि कहती, "बहुत दिन से आए नहीं, माँ ने तुमको एक बार चलने के लिए कहा है। कमर में दर्द होने के कारण वे तुम्हें देखने नहीं आ सकतीं।" इसी बीच शायद सहसा चारु आ उपस्थित होती। सोनामणि घबरा जाती, वह मानो छिपकर अपनी सहेली की संपत्ति चुराने आई हो। चारु भौंह चढ़ाकर, मुँह बनाकर कहती, "ये सोना, तू पढ़ने के समय हल्ला मचाने आती है, मैं अभी जाकर पिताजी से कह दूँगी।"

मानो वह स्वयं तारापद की एक प्रवीण अभिभाविका हो, उसके पढ़ने-लिखने में लेश-मात्र भी बाधा न पड़े और मानो दिन-रात बस इसी पर उसकी दृष्टि रहती हो। किंतु वह स्वयं किस अभिप्राय से असमय ही तारापद के पढ़ने के कमरे में आकर उपस्थित हुई थी, यह अंतर्यामी से छिपा नहीं था और तारापद भी उसे अच्छी तरह जानता था। किंतु बेचारी सोनामणि डरकर उसी क्षण हजारों झूठी कैफियतें देतीं; अंत में जब चारु घृणापूर्वक उसको 'मिथ्यावादिनी' कहकर संबोधित करती तो वह लज्जित-शंकित-पराजित होकर व्यथित चित्त से लौट जाती। तारापद उसको बुलाकर कहता, "सोना, आज संध्या समय, मैं तेरे घर आऊँगा, अच्छा!" चारु सर्पिणी के समान फुफकारती हुई उठकर कहती, "हाँ, जाओगे! तुम्हें पाठ तैयार नहीं करना है? मैं मास्टर साहब से कह दूँगी!" चारु की इस धमकी से न डरकर तारापद एक-दो दिन संध्या के समय पुरोहित जी के घर गया था। तीसरी या चौथी बार चारु ने कोरी धमकी न देकर धीरे-धीरे एक बार बाहर से तारापद के कमरे के दरवाजे की साँकल चढ़ाकर माँ के मसाले के बक्स का ताला लाकर लगा दिया। सारी संध्या तारापद को इसी बंदी अवस्था में रखकर भोजन के समय द्वार खोला। गुस्से के कारण तारापद कुछ बोला नहीं और बिना खाए चले जाने की तैयारी करने लगा। उस समय अनुतप्त व्याकुल बालिका हाथ जोड़कर विनयपूर्वक बारंबार कहने लगी, "तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ, फिर ऐसा नहीं करूँगी। तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ, तुम खाकर जाना!" उससे भी जब तारापद वश में न आया तो वह अधीर होकर रोने लगी; संकट में पड़कर तारापद लौटकर भोजन करने बैठ गया। चारु ने कितनी बार अकेले में प्रतिज्ञा की कि वह तारापद के साथ सद्व्यवहार करेगी, फिर कभी उसे एक क्षण के लिए भी परेशान न करेगी किंतु सोनामणि आदि अन्य पाँच जनों के बीच आ पड़ते ही न जाने कब, कैसे उसका मिजाज बिगड़ जाता और वह किसी भी प्रकार आत्म-नियंत्रण न कर पाती। कुछ दिन जब ऊपर-ऊपर से वह भलमनसाहत बरतती तब किसी आगामी उत्कट-विप्लव के लिए तारापद सतर्कतापूर्वक प्रस्तुत हो जाता।

इस तरह लगभग दो वर्ष बीत गए। इतने लंबे समय तक तारापद कभी किसी के पास बँधकर नहीं रहा। शायद पढ़ने-लिखने में उसका मन एक अपूर्व आकर्षण में बँध गया था; लगता है, वयोवृद्धि के साथ उसकी प्रकृति में भी परिवर्तन आरंभ हो गया था और स्थिर बैठे रहकर संसार के सुख-स्वच्छंदता का भोग करने की ओर उसका मन लग रहा था; कदाचित् उसकी सहपाठिनी बालिका का स्वाभाविक दौरात्म्य, चंचल सौंदर्य अलक्षित भाव से उसके हृदय पर बंधन फैला रहा था। इधर चारु की अवस्था ग्यारह पार कर गई। मति बाबू ने खोजकर अपनी पुत्री के विवाह के लिए दो-तीन अच्छे रिश्ते जुटाए। कन्या की अवस्था विवाह के योग्य हुई जानकर मति बाबू ने उसका अंग्रेजी पढ़ना और बाहर निकलना बंद कर दिया। इस आकस्मिक अवरोध पर घर के भीतर चारु ने भारी आंदोलन कर दिया। तब अन्नपूर्णा ने एक दिन मति बाबू को बुलाकर कहा, "पात्र के लिए तुम इतनी खोज क्यों करते फिर रहे हो? तारापद लड़का तो अच्छा है और तुम्हारी लड़की भी उसको पसंद है।" सुनकर मति बाबू ने बड़ा विस्मय प्रकट किया। कहा, "भला यह कभी हो सकता है!

तारापद का कुल-शील कुछ भी तो ज्ञात नहीं है। मैं अपनी इकलौती लड़की को किसी अच्छे घर में देना चाहता हूँ।" एक दिन रायडाँगा के बाबुओं के घर से लोग लड़की देखने आए। वस्त्राभूषण पहनाकर चारु को बाहर लाने की चेष्टा की गई। वह सोने के कमरे का द्वार बंद करके बैठ गई–किसी प्रकार भी बाहर न निकली। मति बाबू ने कमरे के बाहर से बहुत अनुनय-विनय की, बहुत फटकारा, किसी प्रकार भी कोई परिणाम न निकला। अंत में बाहर आकर रायडाँगा के दूतों से बहाना बनाकर कहना पड़ा कि एकाएक कन्या बहुत बीमार हो गई है, आज दिखाई की रस्म नहीं हो सकेगी। उन्होंने सोचा लड़की में शायद कोई दोष है, इसी से इस चतुराई का सहारा

लिया गया है। तब मति बाबू विचार करने लगे, तारापद लड़का देखने-सुनने में सब तरह से अच्छा है; उसको मैं घर ही में रख सकूँगा, ऐसा होने से अपनी एकमात्र लड़की को पराए घर नहीं भेजना पड़ेगा। यह भी सोचा कि उनकी लड़की का अशांत-अबाध्य, उनकी स्नेहपूर्ण आँखों को कितना ही क्षम्य प्रतीत हो, ससुराल वाले सहन नहीं करेंगे। फिर पति-पत्नी ने सोच-विचारकर तारापद के घर उसके कुल का हाल-चाल जानने के लिए आदमी भेजा। समाचार आया कि वंश तो अच्छा है किंतु दरिद्र है। तब मति बाबू ने लड़के की माँ एवं भाई के पास विवाह का प्रस्ताव भेजा। उन्होंने आनंद से उच्छ्वासित होकर सम्मति देने में मुहूर्त-भर की भी देर न की।

काँठालिया के मति बाबू और अन्नपूर्णा विवाह के मुहूर्त के बारे में विचार करने लगे किंतु मति बाबू ने बात को गोपनीय रखा। चारु को बंद न रखा जा सका। वह बीच-बीच में तारापद के पढ़ने के कमरे में जा पहुँचती। कभी रोष, कभी प्रेम, कभी विराग के द्वारा उसके अध्ययन-क्रम की निभृत शांति को अकस्मात् तरंगित कर देती। उससे आजकल इस निर्लिप्त मुक्त स्वभाव से ब्राह्मण के मन में बीच-बीच में कुछ समय के लिए अपूर्व चांचल्य का संचार हो जाता। वह प्रायः पढ़ना-लिखना छोड़कर मति बाबू की लाइब्रेरी में प्रवेश करके तस्वीरों वाली पुस्तकों के पन्ने पलटता रहता, उन तस्वीरों के मिश्रण से जिस कल्पना-लोक की रचना होती वह पहले की अपेक्षा बहुत स्वतंत्र और अधिक रंगीन था। चारु का विचित्र आचरण देखकर वह अब पहले के समान परिहास न कर पाता, ऊधम करने पर उसको मारने की बात मन में उदय भी न होती। अपने में यह गूढ़ परिवर्तन, यह आबद्ध-आसक्त भाव से अपने निकट एक नूतन स्वप्न के समान लगने लगा। श्रावण में विवाह का शुभ दिन निश्चित करके मति बाबू ने तारापद की माँ और भाइयों को बुलावा भेजा।

दूसरे दिन तारापद की माता और भाई काँठालिया में आए, उसी दिन कलकत्ता से विविध सामग्री से भरी तीन बड़ी नौकाएँ काँठालिया के जमींदार की कचहरी के घाट पर आकर लगीं एवं उसी दिन बहुत सवेरे सोनामणि कागज में थोड़ा अमावट एवं पत्ते के दोने में कुछ अचार लेकर डरती-डरती तारापद के पढ़ने के कमरे के द्वार पर चुपचाप आ खड़ी हुई– किंतु उस दिन तारापद दिखाई नहीं दिया। स्नेह-प्रेम-बंधुत्व के षड्यंत्र-बंधन उसको चारों ओर से पूरी तरह से घेरे, इसके पहले ही वह ब्राह्मण-बालक समस्त ग्राम का हृदय चुराकर एकाएक वर्षा की मेधांधकारणपूर्ण रात्रि में आसाक्तिविहीन उदासीन जननी विश्वपृथिवी के पास चला गया।

– रूपम भट्टाचार्य
कार्यकारी अधीक्षक/ ईएमयू
(एक बंगला कहानी का हिंदी अनुवाद)

रिश्ता दुनिया में बहुत ही अनमोल है

रिश्ता इस दुनिया में बहुत ही अनमोल है,
जीवन में इसका विशेष रूप से मोल है।

संबंधों में स्वार्थ का होना निषेध है,
परस्पर सहयोग और भाव का ही मोल है।

रिश्तों की डोरी बहुत नाजुक होती है,
इन डोरों को थामे रखने का भी मोल है।

रिश्तों में खुशियों का संसार बसा है,
खुशियों का ही जीवन में असली मोल है।

रिश्तों में सुनना और कहना होता है,
इस सुनने और कहने में प्रेम का मोल है।

रिश्तों को सजा-संवार कर रखना है,
तभी तो रिश्तों में रब का मोल है।

रिश्ता बिना जीवन बेजार है,
इसलिए रिश्तों का मानव जीवन में मोल है।

रिश्ता प्यार और सद्भाव का प्रतीक है,
प्यार और सद्भाव से ही स्वर्ग का मोल है।

रिश्तों में संदीप शक्ति का आधार है,
शक्ति का जीवन में सच्चा मोल है।

– रमेश वसंत केंबावी
तकनीशियन-विद्युत

भारतीय कला का पारंपरिक रूप
मिथिला पेंटिंग

मधुबनी कला, जिसे मिथिला पेंटिंग के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय कला का एक महत्वपूर्ण और पारंपरिक रूप है जो बिहार राज्य के मिथिला क्षेत्र और नेपाल के कुछ हिस्सों से उत्पन्न हुआ है। यह कला शैली मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा बनाई जाती है और अपनी विशिष्टता के कारण पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। मधुबनी कला अपने जीवंत रंगों, जटिल पैटर्न और प्रतीकात्मक चित्रण के लिए जानी जाती है। यह भारतीय संस्कृति, धार्मिक प्रतीकों और प्रकृति के विविध रूपों को चित्रित करने के लिए प्रसिद्ध है।

प्रमुख विशेषताएँ

1. विषय-वस्तु: मधुबनी कला में चित्रित विषय बेहद विविध होते हैं। इसमें पौराणिक कथाएँ, धार्मिक प्रतीक, प्रकृति के दृश्य और सांस्कृतिक परंपराओं का चित्रण प्रमुख होता है। इस कला के अधिकांश चित्रण हिंदू देवताओं जैसे कृष्ण, राम, शिव, लक्ष्मी और दुर्गा के चित्र होते हैं। इसके अलावा, इस कला में प्राकृतिक दृश्यों का भी समावेश होता है, जैसे कि पेड़-पौधे, फूल, पशु-पक्षी, और अन्य वन्यजीवों के चित्र। इन पेंटिंग्स में त्योहारों, विवाह, और अन्य सांस्कृतिक आयोजनों को भी दर्शाया जाता है, जो इस कला को जीवन की विविधता और समृद्धता से जोड़ता है।

2. शैली: मधुबनी कला की शैली अत्यधिक विशिष्ट और आकर्षक होती है। इसमें ज्यामितीय पैटर्न और सममित डिजाइन का प्रमुख स्थान होता है। हर पेंटिंग में जटिल विवरण होते हैं, जिसमें हर खाली स्थान को फूलों, रेखाओं, बिंदुओं या अन्य सजावटी तत्वों से भरा जाता है। इस कला का कोई खाली स्थान नहीं होता, जिससे यह कला पूरी तरह से सजीव और समृद्ध दिखती है। हर चित्र को सजाने के लिए रंगों और रेखाओं का विशेष ध्यान रखा जाता है, जो कला को एक अलग ही रूप में प्रस्तुत करता है।

3. रंगों का उपयोग: मधुबनी कला में रंगों का विशेष महत्व है। पारंपरिक रूप से इसमें प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता था, जैसे कि इन्द्रधनुषी रंग, मिट्टी के रंग, और काले रंग की स्याही। इन रंगों का उपयोग कला को जीवंत और आकर्षक बनाने के लिए किया जाता है। पहले यह रंग फूलों, पत्तियों और अन्य प्राकृतिक तत्वों से तैयार किए जाते थे। हालांकि, अब आधुनिक रंगों का भी उपयोग किया जाता है, जिससे इन पेंटिंग्स में और भी चमक और आकर्षण आता है। रंगों का चयन और उनका उपयोग कला के विभिन्न तत्वों को प्रमुख बनाने में मदद करता है।

4. तकनीकी विधियाँ: मधुबनी कला में विभिन्न तकनीकों का उपयोग किया जाता है। इसमें फ्रीहैंड ड्राइंग, लाइन ड्राइंग और रंग भरने की विशेष तकनीकें शामिल हैं। प्राचीन समय में यह कला दीवारों, बांस के झाड़ों, और मिट्टी की दीवारों पर बनाई जाती थी, लेकिन अब इसे कागज, कपड़ा, कैनवास और लकड़ी पर भी बनाया जाता है। यह कला कभी मिट्टी के रंगों से शुरू होती थी लेकिन आजकल इसके समकालीन रूप में आधुनिक रंगों का भी उपयोग किया जाता है।

5. आधुनिक प्रभाव और समकालीन बदलाव: मधुबनी कला ने प्राचीन तकनीकों को समकालीन अनुप्रयोगों के साथ जोड़ते हुए अपनी पहचान बनाई है। अब इसे केवल पारंपरिक कला के रूप में नहीं, बल्कि आधुनिक कला की दुनिया में भी स्थान प्राप्त हुआ है। यह कला शैली समय के साथ विकसित हुई है और आजकल विभिन्न प्रकार के कला रूपों, जैसे कि फैशन डिजाइन, वस्त्र निर्माण और आर्किटेक्चर में भी इसका प्रभाव देखने को मिलता है।

मधुबनी कला अब न केवल भारतीय कला की धरोहर बन चुकी है बल्कि यह दुनिया भर में प्रसिद्ध हो चुकी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इसे सराहा जाता है और इसके कलाकारों को विश्वभर में पहचान मिल रही है। यह कला अब भारत की सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संरक्षित की जा रही है और इसके माध्यम से भारतीय संस्कृति को दुनिया भर में प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस प्रकार, मधुबनी कला भारतीय संस्कृति और परंपराओं का एक अभिन्न हिस्सा बन चुकी है जो न केवल पुराने समय की बातों को जीवित रखती है बल्कि आधुनिक समय में भी कला के नए रूपों को जन्म देती है।

(एक बंगला कहानी का हिंदी अनुवाद)

– प्रभा श्रीनिवासन
मुख्य कार्यालय अधीक्षक (सामान्य)

स्वस्थ जीवनशैली

स्वस्थ जीवनशैली एक खुशहाल और संतुलित जीवन जीने की कुंजी है। इसमें शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य का एक सामंजस्यपूर्ण संतुलन होता है। यह न केवल शरीर को ताकतवर बनाती है बल्कि दिमाग और आत्मा को भी शांति और संतुलन प्रदान करती है। आज की तेज़-तर्रार और व्यस्त जिंदगी में स्वस्थ जीवनशैली अपनाना एक आवश्यकता बन गई है। सही विकल्पों को अपनाकर हम न सिर्फ अपनी जीवनशैली में सुधार कर सकते हैं, बल्कि अपनी स्वास्थ्य समस्याओं को भी दूर कर सकते हैं।

स्वस्थ जीवनशैली को बनाए रखने के लिए सबसे पहले जरूरी है सही और पौष्टिक आहार। फल, सब्जियाँ, साबुत अनाज, लीन प्रोटीन और स्वस्थ वसा से भरपूर संतुलित आहार शरीर को ज़रूरी पोषक तत्व प्रदान करता है जो शरीर की कार्यप्रणाली को सुचारु रूप से चलाने में मदद करता है। इस प्रकार का आहार न केवल शरीर को तंदुरुस्त रखता है बल्कि इसमें मौजूद फाइबर और विटामिन्स मेटाबॉलिज़्म को बढ़ाते हैं जिससे शरीर में ऊर्जा बनी रहती है। वहीं, प्रोसेस्ड और अत्यधिक शर्करा वाले खाद्य पदार्थों से दूर रहना महत्वपूर्ण है क्योंकि ये मोटापा, मधुमेह और हृदय रोग जैसी बीमारियों का कारण बन सकते हैं।

इसके अलावा, नियमित शारीरिक गतिविधियाँ भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यह शरीर को फिट और सक्रिय रखने के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाती हैं। चलना, दौड़ना, योग, जिम या शक्ति प्रशिक्षण जैसी गतिविधियाँ शरीर के लिए अत्यंत लाभकारी होती हैं। शारीरिक व्यायाम से रक्त संचार में सुधार होता है, हृदय स्वस्थ रहता है और मानसिक तनाव कम होता है। व्यायाम से शरीर में एंडोर्फिन्स नामक हार्मोन रिलीज होते हैं, जो हमें खुश और संतुलित महसूस कराते हैं।

लड़खड़ाना अक्सर गिरना नहीं होता है बल्कि संभलना भी होता है।

मानसिक स्वास्थ्य भी किसी भी स्वस्थ जीवनशैली का अहम हिस्सा है। मानसिक तनाव और चिंता से बचने के लिए माइंडफुलनेस, ध्यान और शांति के कुछ क्षणों की आवश्यकता होती है। प्रियजनों के साथ समय बिताना, अपने शौकों का पालन करना और खुद के लिए समय निकालना मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं। इसके अलावा, डिजिटल डिवाइस से स्क्रीन टाइम को सीमित करना और बाहरी गतिविधियों में शामिल होना मानसिक शांति और संतुलन को बढ़ावा देता है। यह सुनिश्चित करता है कि हम अपनी मानसिक स्थिति को नियंत्रित कर पाएँ और तनावपूर्ण परिस्थितियों का सामना सही तरीके से कर सकें।

इसके अलावा, पर्याप्त नींद भी स्वस्थ जीवनशैली का एक महत्वपूर्ण पहलू है। नींद शरीर और दिमाग को पुनः ऊर्जा प्रदान करती है और उन्हें अगले दिन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करती है। वयस्कों को रोज़ाना 7-9 घंटे की गहरी नींद लेने की आवश्यकता होती है ताकि शरीर पूरी तरह से पुनर्जीवित हो सके और मानसिक स्पष्टता बनी रहे। जब शरीर और मस्तिष्क अच्छे से आराम करते हैं तो हम बेहतर निर्णय लेने, काम में अधिक फोकस करने और अधिक उत्पादकता प्राप्त करने में सक्षम होते हैं।

अंत में, स्वस्थ जीवनशैली का पालन करना केवल शारीरिक रूप से ही नहीं बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी हमें बेहतर बनाता है। यदि हम अपने आहार, व्यायाम, नींद और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान दें तो हम न सिर्फ अपने जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बना सकते हैं बल्कि अपनी पुरानी बीमारियों को भी रोक सकते हैं। छोटे-छोटे कदम, जैसे सही आहार का चुनाव, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना, लंबे समय में हमारे जीवन पर बड़ा सकारात्मक असर डालते हैं।

निष्कर्षत: स्वस्थ जीवनशैली का पालन करना हमें शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से संतुलित जीवन जीने में मदद करता है। सही आदतों और अनुशासन के साथ हम न केवल एक तंदुरुस्त जीवन जी सकते हैं बल्कि खुश और मानसिक रूप से संतुलित भी रह सकते हैं।

– हिमाली राहुल आगासकर
कार्यकारी सहायक

जेम (GeM) के माध्यम से खरीदारी की प्रक्रिया

जेम का संक्षिप्त परिचय

सचिवों के समूह की सिफारिशों के आधार पर, माननीय प्रधानमंत्री ने सरकार द्वारा खरीदी जाने वाली विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के लिए एक समर्पित ईबाजार स्थापित करने के आदेश दिए थे। यह पहल 09 अगस्त 2016 को वाणिज्य मंत्रालय द्वारा शुरू की गई थी। जिसका उद्देश्य सरकारी खरीदारों के लिए एक पारदर्शी ऑनलाइन खरीद मंच उपलब्ध कराना था। इस ईबाजार को,आपूर्ति और निपटान महानिदेशालय को डिजिटल रूप में बदलने के रूप में स्थापित किया गया था, जहां माल और सेवाओं की खरीद-बिक्री की प्रक्रिया ईकॉमर्स पोर्टल के माध्यम से हो सके।

जेम का उद्देश्य सरकारी विभागों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को एक विश्वसनीय, पारदर्शी और आसान ऑनलाइन प्लेटफार्म प्रदान करना है। इसी उद्देश्य पर आधारित सभी सरकारी खरीदारों के लिए सामान और सेवाओं की ऑनलाइन खरीद को प्रोत्साहित किया गया है और इसे वित्त मंत्रालय द्वारा 2017 में सामान्य वित्तीय नियमों के अंतर्गत अनिवार्य कर दिया गया है।

जेम पोर्टल पर पंजीकरण प्रक्रिया:

जेम पर कार्य करने के लिए पंजीकरण करना अनिवार्य है और यह आधार कार्ड से जुड़ा होता है। पंजीकरण प्रक्रिया बहुत सरल है और तुरंत पूर्ण होती है। पंजीकरण के लिए निम्नलिखित जानकारियों की आवश्यकता होती है: (1) आधार नंबर (2) आधार से जुड़ा मोबाइल नंबर (3) NIC मेल (4) डिजिटल साइन सर्टिफिकेट (DSC)।

जेम पर अधिकारी के पंजीकरण के बाद, उसे निम्नलिखित भूमिकाएँ सौंपी जा सकती हैं:

1) खरीदार
2) परेषिती
3) तकनीकी मूल्यांकनकर्ता
4) भुगतान प्राधिकरण
5) खरीदार और परेषिती

जेम की विशेषताएँ-

(1) श्रेणी और कैटलॉग-आधारित खरीद पोर्टल।
(2) एमएसई और एमआईआई प्रावधानों के लिए स्वचालित नियम-आधारित प्रणाली।
(3) बोलीदाताओं के लिए अद्वितीय चुनौती अस्वीकृति खिड़की।
(4) निर्णय समर्थन प्रणाली और धोखाधड़ी और विसंगति का पता लगाने के लिए अग्रिम विश्लेषण।
(5) खरीद प्रक्रिया पारदर्शी और फेसलेस है जहां विक्रेता की पहचान एल1 तक नहीं दिखती।
(6) जेम पर पंजीकरण और उत्पाद/सेवा की पेशकश पूरी तरह से ऑनलाइन और मुफ्त है।
(7) जेम एमएसई, स्टार्टअप और महिला उद्यमियों को प्राथमिकता देता है।

जेम पर खरीदारी के विभिन्न तरीके-

1. प्रत्यक्ष खरीद:

खरीदारों को 50,000/- तक की वस्तुएं सीधे विक्रेताओं से खरीदने की अनुमति होती है। क्रेता उपलब्ध मदों में से अपनी पसंद की वस्तु का चयन कर सकता है, चाहे वह न्यूनतम या उच्चतम दर की हो और जेम कान्ट्रैक्ट को क्रीऐट कर सकता है। विशेष: इसमें ऑटोमोबाइल की खरीद पर कोई सीमा नहीं है।

2. एल1 के साथ प्रत्यक्ष खरीद:

कम से कम तीन विक्रेताओं से कीमतों की तुलना करके, खरीदारों को रु.50,000/- से अधिक और रु. 10 लाख तक, मूल्य निर्धारण वस्तुओं को खरीदने की अनुमति देता है। इस मूल्य स्लैब में जब आइटम को खोजा जाता है तब GeM प्रणांली, सभी उपलब्ध विभिन्न ओईएम/ विक्रेताओं की ऑफर से L1 ऑफ़र का चयन करती है, इस तरह से GeM चयनित L1 ऑफर को कम से कम अन्य दो ऑफ़र से तुलना करनी होती है। सिस्टम द्वारा चुने गए ऐसे L1 ऑफर की तुलना उसी ओईएम

या विक्रेता की अनुमति नहीं देता है। तुलना केवल भिन्न ओईएम/विक्रेताओं के साथ की जा सकती है । यदि जेम चयनित L1 स्वीकार्य नहीं है तो खरीदार को जेम पर बोली लगाने के लिए जाना चाहिए।

3. **ई-बोली/आरए:**

10 लाख रुपये से अधिक मूल्य की सभी मदों को बोली के माध्यम से किया जाना आवश्यक है। खरीदार के पास दो पैकेट बोली या एकल पैकेट बोली लगाने का विकल्प चुनने का विकल्प है। दोनों मामलों में अगर किसी बोली को अयोग्य ठहराया जाता है तो बोली दाताओं को उनकी बोली अयोग्यता के खिलाफ चुनौती करने के लिए न्यूनतम दो दिन का समय दिया जाता है। खरीदार जवाब दिए बिना आगे की प्रक्रिया के लिए नहीं बढ़ सकता है। रेलवे बोर्ड के दिशानिर्देशों के अनुसार 10 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की माल खरीद के लिए और 50 करोड़ रुपये की क्रय सेवाओं के लिए आरए अनिवार्य है। बोली के दौरान क्रेता को अग्रिम रूप से घोषित करना होगा कि क्या बोलीआरए के अनुसार होगी। इसे बोली प्रकाशन/खोलने के बाद बदला नहीं जाएगा। वित्तीय बोली खोलने के बाद, यदि खरीदार ने "आरए के लिए बोली" चयनित किया है तो "आरए के लिए आगे बढ़ें" अनिवार्य है। यदि शुरू में नहीं चुना गया है तो बोली बनाते समय, इसे बाद में किसी भी स्तर पर सक्षम नहीं किया जा सकता है। एकल पैकेट बोली का चयन करने पर आरए के लिए बोली लागू नहीं है लेकिन मल्टी एल 1 के मामले में, उत्पाद बोलियों के मामले में सिस्टम आरए के लिए तत्पर होगा।

रिवर्स नीलामी

एक खरीद विधि है जिसमें एक खरीदार किसी विशिष्ट वस्तु या सेवा के लिए अनुरोध पोस्ट करके प्रक्रिया शुरू करता है। इस अनोखे नीलामी प्रारूप में, संभावित आपूर्तिकर्ता, उत्तरोत्तर कम कीमतों के साथ बोलियां प्रस्तुत करके प्रतिस्पर्धा करते हैं।

4. **पुश बटन खरीद (पीबीपी)-**

पीबीपी कार्यप्रणाली का उपयोग खरीदार द्वारा उस समय किया जाता है जब कुल खरीद मूल्य विशिष्ट मामले सभी करों सहित पांच लाख रुपये तक हो। इस पद्धति के तहत खरीद के लिए आवश्यकता का कोई विभाजन अपेक्षित नहीं है । यह विधि जेम द्वारा केवल उन चुनिंदा श्रेणियों के लिए सक्षम की जाएगी जहां कम से कम दस स्रोत सूचीबद्ध हैं। एक बार जब पीबीपी बोली जीईएम पर आमंत्रित की जाती है तो अनुबंध सीधे जीईएम सिस्टम द्वारा बिना किसी भी मानवीय हस्तक्षेप के प्रदान किया जाएगा। जैसे: खरीदार द्वारा बोलियों का कोई मूल्यांकन या अस्वीकृति और कीमत की तर्कसंगतता को प्रमाणित करने के लिए खरीदार की किसी भी आवश्यकता के बिना। जेम प्रणाली स्वयं जांच करेगी कि न्यूनतम दो विभिन्न ब्रांड के साथ, कम से कम पांच बोलियां प्राप्त हुई हों। व्यक्तिगत बोलीदाता पीबीपी के संदर्भ मूल्य से अधिक बोली लगा सकते हैं। जीईएम प्रणाली सुनिश्चित करेगी कि ऑर्डर केवल तभी दिया जाए जब पीबीपी के बाद प्राप्त न्यूनतम मूल्य जीईएम बाजार की कीमत से कम हो।

पोस्ट अनुबंध क्रियाएँ

जीईएम पर अनुबंध देने के बाद, विक्रेता को निर्धारित वितरण अवधि के भीतर सामग्री की आपूर्ति करनी होगी। हालांकि, विक्रेता या खरीदार डिलीवरी अवधि विस्तार/पुनर्निर्धारण अनुरोध शुरू कर सकते हैं। सामग्री प्राप्त होने के बाद, परेषिती को परेषिती की रसीद और स्वीकृति प्रमाणपत्र (सीआरएसी) GeM पर बनाना होता है। माल प्राप्त करने के 10 दिनों के भीतर एक सीआरएसी उत्पन्न किया जाना चाहिए। परेषिती को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि माल अच्छी स्थिति में है और सीआरएसी उत्पन्न करने से पहले आवश्यक विनिर्देशों को पूरा करता है। यदि परेषिती ने सक्रिय वितरण तिथि के भीतर विक्रेता द्वारा प्रस्तुत डिलीवरी के प्रमाण (पीओडी) के अनुसार डिलीवरी की तारीख से सिस्टम परिभाषित समयरेखा (डिफ़ॉल्ट 10 दिन) के भीतर सीआरएसी उत्पन्न नहीं किया है तो सिस्टम एक ऑटो सीआरएसी उत्पन्न करेगा जो सभी पीआरसी मात्राओं को सीआरएसी के रूप में चिह्नित करेगा। ऐसी स्थिति में, परेषिती के पास कोई भी संशोधन करने के लिए 3 और दिन होंगे। यदि इन 3 दिनों के भीतर परेषिती द्वारा अभी भी कोई कार्रवाई नहीं की जाती है तो सिस्टम द्वारा उत्पन्न ऑटो सीआरएसी को अंतिम सीआरएसी माना जाएगा जिसे अब संशोधित नहीं किया जा सकता है। सीआरएसी के सृजन के परिणामस्वरूप विक्रेता को 10 दिनों के भीतर भुगतान किया जाना है।

निष्कर्ष: जेम प्लेटफार्म सरकारी खरीदी प्रक्रिया को सरल, पारदर्शी और कुशल बनाता है। यह विभागों और उपक्रमों के लिए एक सुगम और भरोसेमंद माध्यम प्रदान करता है।

विशेष: उपरोक्त लेख जीईएम पर खरीद प्रवाह की केवल एक बुनियादी रूपरेखा है।

– राजीव महाजन
मुख्य कार्यालय अधीक्षक/भंडार

भारतीय रेल देश के परिवहन तंत्र का अहम हिस्सा है। यह एक ऐसी सेवा है जो न केवल करोड़ों भारतीयों की यात्रा का साधन बनती है बल्कि राष्ट्र की आर्थिक धारा को भी बल देती है। भारतीय रेल का नेटवर्क विश्व के सबसे बड़े रेल नेटवर्कों में से एक है। यह न केवल यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुँचाने का कार्य करता है बल्कि माल परिवहन के जरिए देश के विभिन्न उद्योगों और व्यापार को भी सहयोग प्रदान करता है। भारतीय रेलवे का योगदान न केवल परिवहन क्षेत्र में है बल्कि इसके प्रभाव और महत्त्व का विस्तार सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों तक भी है।

भारतीय रेलवे का इतिहास

भारतीय रेल का इतिहास लगभग दो सदी पुराना है। 1853 में मुंबई और थाणे के बीच पहली रेल लाइन स्थापित की गई जो भारतीय रेलवे के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ। भारत में रेलवे का विकास मुख्य रूप से ब्रिटिश साम्राज्य के तहत हुआ क्योंकि यह भारत के सामरिक और व्यापारिक नेटवर्क का हिस्सा था। वर्ष 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय रेलवे का राष्ट्रीयकरण किया गया और इसके बाद इसके विकास और विस्तार पर ध्यान दिया गया।

आधुनिक भारतीय रेलवे

भारत सरकार ने भारतीय रेलवे के नेटवर्क को आधुनिक बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। 2017 में रेलवे सुरक्षा निधि की स्थापना की गई जिसमें 100,000 करोड़ रुपये का कोष 5 वर्षों के लिए रखा गया। इसके तहत विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर लिफ्ट और एस्केलेटर की सुविधा प्रदान की जा रही है। इसके साथ ही तीर्थयात्रा और पर्यटन के लिए समर्पित गाड़ियों का संचालन भी बढ़ाया जा रहा है। 2019 तक भारतीय रेलवे के सभी कोचों में जैव-शौचालय की व्यवस्था की गई थी जो यात्रियों के सुविधा और स्वच्छता के लिहाज से महत्वपूर्ण कदम है। साथ ही, भारतीय रेलवे में निजी निवेश को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें की गई हैं जिससे रेलवे क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा और विकास को बढ़ावा मिला है। रेल प्रौद्योगिकी में भी सुधार किए गए हैं जैसे कि उच्च गति वाली रेलगाड़ियाँ, स्वचालित सिग्नलिंग सिस्टम और आधुनिक ट्रैक निर्माण तकनीकों का प्रयोग।

रेलवे सेवा के विभिन्न प्रकार

भारतीय रेलवे की सेवा दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित की जा सकती है। पहली यात्री सेवा और दूसरी माल सेवा। यात्री सेवा

भारतीय रेल: भारत का परिवहन तंत्र

भारतीय रेलवे का नेटवर्क

आज भारतीय रेलवे का नेटवर्क लगभग 115,000 किलोमीटर लंबा है जो पूरी दुनिया में चौथे स्थान पर है। भारतीय रेलवे प्रति दिन 33 लाख टन माल और 2 करोड़ 31 लाख यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाता है। इसमें 12,147 लोकोमोटिव, 74,003 यात्री कोच, और 289,185 वैगन शामिल हैं। कुल 13,523 ट्रेनें प्रतिदिन भारतीय रेलवे के नेटवर्क पर चलती हैं। भारतीय रेलवे के पास 300 रेलवे यार्ड, 2300 माल ढुलाई स्टेशन और 700 मरम्मत केंद्र हैं। भारतीय रेलवे में कार्यरत कर्मचारियों की संख्या 12.27 लाख है जो इसे दुनिया की आठवीं सबसे बड़ी व्यावसायिक इकाई है। रेलवे बोर्ड भारतीय रेलवे की योजना और इसके विकास को लेकर नीतियाँ बनाता है जबकि इसकी देखरेख भारत सरकार के रेलवे मंत्रालय द्वारा की जाती है।

के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की ट्रेनें चलाई जाती हैं जो यात्रियों के लिए विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करती हैं। इन ट्रेनों में प्रमुख हैं-

1. राजधानी एक्सप्रेस

यह ट्रेन भारतीय रेलवे की प्रमुख और तेज़ ट्रेन है जो दिल्ली को विभिन्न प्रमुख शहरों से जोड़ती है। इसकी गति लगभग 130-140 किमी प्रति घंटे तक रहती है।

2. शताब्दी एक्सप्रेस

यह एक वातानुकूलित इंटरसिटी ट्रेन है जो मुख्य रूप से दिन में चलती है और 150 किमी प्रति घंटे की गति से चलती है।

3. गतिमान एक्सप्रेस

यह ट्रेन दिल्ली से झांसी के बीच 160 किमी प्रति घंटे की गति से चलती है।

4. तेजस एक्सप्रेस

यह ट्रेन शताब्दी एक्सप्रेस की तरह वातानुकूलित है लेकिन इसमें स्लीपर कोच भी हैं जो लंबी दूरी के यात्रियों के लिए उपयुक्त है।

5. महामना एक्सप्रेस

यह ट्रेन अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस है और भारतीय रेलवे की एक प्रमुख सेवा है।

6. दुरंतो एक्सप्रेस

भारतीय रेल द्वारा संचालित लंबी दूरी की तेज़ ट्रेनों का एक वर्ग है। शुरू में मूल और गंतव्य स्टेशनों के बीच बिना रुके चलने के लिए बनाई गई, जनवरी 2016 से, इन ट्रेनों को अतिरिक्त वाणिज्यिक स्टॉप बनाने और तकनीकी हॉल्ट से टिकट बुकिंग स्वीकार करने की अनुमति दी गई है। दुरंतो एक्सप्रेस प्रमुख महानगरीय क्षेत्रों, राज्य की राजधानियों और राष्ट्रीय राजधानी को जोड़ती है

7. गरीब रथ एक्सप्रेस

यह एक सस्ती और आरामदायक ट्रेन है जो अधिकतम 130 किमी प्रति घंटे की गति से चलती है।

8. उपनगरीय रेल प्रणाली

शहरी इलाकों जैसे मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, हैदराबाद, अहमदाबाद, पुणे आदि में चलने वाली रेलगाड़ियां, जो हर स्टेशन पर रुकती हैं और इनमें अनारक्षित सीटें होती हैं।

9. वंदे भारत एक्सप्रेस

यह अर्ध-हाई स्पीड ट्रेन है। यह ट्रेन 160 किमी प्रति घंटे की गति से चलती है। यह पूरी तरह से भारत में डिजाइन और निर्मित होने वाली पहली ट्रेन है। ट्रेन का डिज़ाइन भारतीय संस्कृति और आधुनिकता का बेहतरीन संगम है। इसके आंतरिक सजावट और सुविधाएँ एक प्रीमियम अनुभव प्रदान करती हैं। ट्रेन में नवीनतम ट्रैक्शन और ब्रेकिंग तकनीक का उपयोग किया गया है जो इसकी गति और प्रदर्शन को बेहतर बनाता है। वर्तमान में, भारतीय रेलवे द्वारा 41 वंदे भारत ट्रेनें चलाई जा रही हैं। फरवरी 2025 के बजट में 200 वंदे भारत और 100 अमृत भारत ट्रेनों को मंजूरी दी गई है।

इसके अलावा, अन्य विशेष रेलगाड़ियाँ भी चलती हैं जैसे- पैलेस ऑन व्हील्स, महाराजा एक्सप्रेस और डेकन ओडिसी, जो पर्यटकों के लिए शानदार यात्रा अनुभव प्रदान करती हैं।

सहायक संस्थाएं

भारतीय रेल के कार्य संचालन के विभिन्न पहलुओं की देखभाल करने के लिए भारतीय रेल के निम्नलिखित उपक्रम भी सहयोग करते हैं- रेल इंडिया तकनीकी एवं आर्थिक सेवाएँ लिमिटेड, इंडियन रेलवे कंस्ट्रक्शन, अंतरराष्ट्रीय लिमिटेड इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड,कंटेनर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज़्म कॉर्पोरेशन लिमिटेड, रेलटेल कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड,मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन लिमिटेड,रेल विकास निगम लिमिटेड,राष्ट्रीय उच्च गति रेल कार्पोरेशन लिमिटेड,अनुसंधान, डिज़ाइन और मानक संगठन आदि।

माल सेवा

भारतीय रेलवे का माल सेवा विभाग देश के विभिन्न उद्योगों और उपभोक्ताओं तक वस्तुओं की आपूर्ति करता है। भारतीय रेलवे का माल खंड लगभग 95% राजस्व कोयले से प्राप्त करता है। भारतीय रेलवे ने समय के साथ माल ढुलाई के क्षेत्र में कई सुधार किए हैं, जिनमें बहु-वस्तु मल्टी-मोडल लॉजिस्टिक्स टर्मिनलों का निर्माण और नई मालवाहन गाड़ियों का परिचालन शामिल है। इसके अतिरिक्त, नए समर्पित फ्रेट कॉरिडोर भी बनाए जा रहे हैं जो माल ढुलाई की गति और क्षमता को बढ़ाएँगे।

भारतीय रेलवे की संरचना और संगठन

भारतीय रेलवे का प्रशासन 17 अंचलों में बाँटा गया है जिनमें प्रत्येक अंचल का संचालन एक महाप्रबंधक के तहत होता है। इन अंचलों के अंतर्गत विभिन्न मंडल होते हैं जो स्थानीय स्तर पर ट्रेन संचालन और रख-रखाव का काम करते हैं। रेल मंत्रालय के तहत विभिन्न सहायक कंपनियाँ भी कार्यरत हैं जो रेल संचालन और विकास की विभिन्न प्रक्रियाओं को संभालती हैं।

प्रशासनिक सुविधा और रेलों के परिचालन की सुगमता के दृष्टिकोण से भारतीय रेलवे के 17 अंचल और उनके सेवित क्षेत्र निम्नलिखित हैं-

1. **उत्तर रेलवे**
   14 अप्रैल, 1952 | दिल्ली | अंबाला, फिरोजपुर, लखनऊ, मुरादाबाद, जम्मू।

2. **पूर्वोत्तर रेलवे**
   1952 | गोरखपुर | इज्जत नगर, लखनऊ, वाराणसी।

3. **पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे**
   1958 | गुवाहाटी | अलीपुरद्वार, कटिहार, लामडिंग, रंगिया, तिनसुकिया।

4. **पूर्व रेलवे**
   अप्रैल, 1952 | कोलकाता | हावड़ा, सियालदह, आसनसोल, मालदा।

5. **दक्षिणपूर्व रेलवे**
   1955 | कोलकाता | आद्रा, चक्रधरपुर, खड़गपुर, राँची।

6. **दक्षिण मध्य रेलवे**
   2 अक्टूबर, 1966 | सिकंदराबाद| सिकंदराबाद, हैदराबाद, गुंटकल, गुंटूर, नांदेड़, विजयवाड़ा।

7. **दक्षिण रेलवे**
   14 अप्रैल, 1951 | चेन्नई | चेन्नई, मदुरै, पालघाट, तिरुचुरापल्ली, त्रिवेंद्रम, सलेम (कोयंबटूर)।

8. **मध्य रेलवे**
   5 नवंबर, 1951 | मुंबई | मुंबई, भुसावल, पुणे, सोलापूर, नागपुर।

9. **पश्चिम रेलवे**
   5 नवंबर, 1951 | मुंबई | मुंबई सेंट्रल, वडोदरा, रतलाम, अहमदाबाद, राजकोट, भावनगर।

10. **दक्षिण पश्चिम रेलवे**
    1 अप्रैल, 2003 | हुबली | हुबली, बैंगलोर, मैसूर।

11. **उत्तर पश्चिम रेलवे**
    1 अक्टूबर, 2002 | जयपुर | जयपुर, अजमेर, बीकानेर, जोधपुर।

12. **पश्चिम मध्य रेलवे**
    1 अप्रैल, 2003 | जबलपुर | जबलपुर, भोपाल, कोटा।

13. **उत्तर मध्य रेलवे**
    1 अप्रैल, 2003 | इलाहाबाद | इलाहाबाद, आगरा, झांसी।

14. **दक्षिणपूर्व मध्य रेलवे**
    1 अप्रैल, 2003 | बिलासपुर | बिलासपुर, रायपुर, नागपुर।

15. **पूर्व तटीय रेलवे**
    1 अप्रैल, 2003 | भुवनेश्वर | खुर्दा रोड, संबलपुर, विशाखापत्तनम।

16. **पूर्वमध्य रेलवे**
    1 अक्टूबर, 2002 | हाजीपुर | दानापुर, धनबाद, मुगलसराय, सोनपुर, समस्तीपुर।

17. **कोंकण रेलवे**
    26 जनवरी, 1998 | नवी मुंबई |

कोंकण रेलवे भारतीय रेल के तहत स्वायत्त रूप से परिचालित होती है और इसका मुख्यालय नवी मुंबई के बेलापुर में स्थित है। यह सीधे रेलवे बोर्ड और केंद्रीय रेल मंत्री की निगरानी में कार्य करती है। हालांकि कोलकाता मेट्रो भारतीय रेल द्वारा संचालित होती है, इसे किसी अंचल में शामिल नहीं किया गया है और प्रशासनिक रूप से इसे एक क्षेत्रीय रेलवे के रूप में देखा जाता है। हर अंचल में कुछ रेल मंडल होते हैं और वर्तमान में भारत में कुल 67 रेल मंडल हैं जो उपरोक्त रेलवे के अंचलों के अंतर्गत कार्य करते हैं।

निष्कर्ष

भारतीय रेलवे न केवल देश की प्रमुख परिवहन प्रणाली है बल्कि यह भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था का अहम हिस्सा भी है। इसके नेटवर्क का विस्तार, आधुनिकता, और प्रभावशीलता निरंतर बढ़ रही है। भारतीय रेलवे ने समय के साथ कई बदलाव किए हैं और नए प्रौद्योगिकियों को अपनाया है ताकि यात्रियों को बेहतर सुविधाएँ मिल सकें और माल ढुलाई का कार्य सुगम हो सके। इसके द्वारा किए जा रहे सुधारों से यह उम्मीद जताई जा रही है कि आने वाले समय में भारतीय रेलवे और भी अधिक प्रभावशाली और आधुनिक हो जाएगा जो न केवल भारत बल्कि दुनिया भर में एक आदर्श रेल नेटवर्क बनेगा।

– विनोद राणे
आंकड़ा प्रचालक

ज़िंदगी

ज़िंदगी जब समझ में आई,
ज़िंदगी तो बची ही नहीं।

भागते रहे यूं ही ज़िंदगी भर,
कहाँ रुकना है, समझे ही नहीं।

निकलते गए साल दर साल,
हम यूं ही दर-दर भटकते रहे।

करते रहे गिला-शिकवा,
खुशियों को यूं ही ढूंढ़ते रहे।

बढ़ती ही गई खुदगर्जी,
इंसानियत तो बची ही नहीं।

ख्वाबों-ख्यालों में ही जीते रहे,
हकीकत से दूर होते गए।

सिद्धांतों को मरोड़ते गए,
रिश्ते-नातों को तोड़ते गए।

महत्वकांक्षाएं इतनी बढ़ी,
नैतिकता कुछ बची ही नहीं।

आगे इतने बढ़े कि अपने थे वो पीछे छूट गए।
जब होश में आए तो ख्वाब थे वो सारे टूट गए।

सेहत का तो पता नहीं,
उम्र भी अब बची नहीं।

ऐ नादान परिंदे,
पल दो पल तो ठहर जरा।

मरने से पहले कुछ पल
सुकून से जी ले जरा।

ये जिंदगी पलभर की है,
बेसब्री भी इतनी अच्छी नहीं।।

– विनोद राणे
आंकड़ा प्रचालक

फूलों की सुगंध हवा की दिशा में फैलती है परंतु मनुष्य की अच्छाई हर दिशा में फैलती है।

एक **डोली** चली, एक ***अर्थी*** चली!

एक डोली चली, एक अर्थी चली
एक डोली चली, एक अर्थी चली...
दोनों की राहें अलग थीं,
पर बात कुछ इस तरह चली,
डोली बोली, "तुझे किसने धोखा दिया,
कहाँ जा रही हो, बता मेरी सखी?"
अर्थी बोली,
"चार कंधे तुझ में लगे, चार कंधे मुझ में लगे,
तेरे सिर पे फूल, मेरे सिर पे फूल,
फर्क इतना ही है, सुन ले मेरी सखी,
तू अपने प्रिय के पास जा रही है,
मैं अपने प्रभु के पास जा रही हूं।
तेरी मांग सजी, मेरी मांग सजी,
तेरी चूड़ियाँ हरी, मेरी चूड़ियाँ हरी,
फर्क इतना ही है, सुन ले मेरी सखी,
तू इस जहाँ में चली, मैं उस जहाँ से चली।
एक सजन तेरा खुश होगा,
एक सजन मेरा रोयेगा,
फर्क इतना ही है, सुन ले मेरी सखी,
तू विदा हो चली, मैं अलविदा हो चली।"

– पूनम दांडगे
आंकड़ा प्रचालक

इन्कार का भाव

बरसात के दिन आने वाले थे, एक चिड़िया अपने बच्चों के साथ आश्रय बनाने के लिए नदी के किनारे गई। वहाँ दो पेड़ खड़े थे। चिड़ीया ने एक पेड़ से कहा, "बरसात से बचने के लिए मैं और मेरे बच्चे तुम्हारी डाल पर अपना घोंसला बना लें?" पेड़ हमेशा किसी को भी आश्रय देने के लिए तैयार रहते हैं, लेकिन इस पेड़ ने बड़े बेरुखे तरीके से चिड़ीया को मना कर दिया।

चिड़िया फिर दूसरे पेड़ के पास गई, और उसने उस पेड़ से घोंसला बनाने की अनुमति प्राप्त कर ली।बरसात के दिन भारी वर्षा आई। पहला पेड़ तेज बारिश को सहन नहीं कर पाया और उखड़कर नदी में बह गया। पेड़ को बहते देख, चिड़िया बोली, "ऐ पेड़, एक दिन जब मैंने तुमसे आश्रय माँगा था तो तुमने मुझे बेरूखी से मना कर दिया था। तुम्हारी इसी बेरूखी की सजा आज भगवान ने दी है और तुम नदी में बहते जा रहे हो।"

पेड़ ने शांति से उत्तर दिया, "मैं जानता था कि मेरी जड़ें कमजोर हैं और इस बारिश में मैं टिक नहीं पाऊँगा। मैं तुम्हारी और तुम्हारे बच्चों की जान खतरे में नहीं डालना चाहता था। इसलिए मुझे तुम्हें मना करना पड़ा। मुझे माफ कर दो।" यह कहकर पेड़ बह गया।

कभी भी किसी के इन्कार को उसकी कठोरता के रूप में न देखें। शायद उस इन्कार में आपका भला छिपा हो और हमें उनकी स्थिति का सही आकलन नहीं हो पाता हो। इसलिए, किसी के व्यवहार और चरित्र को केवल उसके वर्तमान स्थिति से नहीं आंकना चाहिए।

– पूनम दांडगे
आंकड़ा प्रचालक

मोबाइल

फ्री होकर भी सबको व्यस्त कर दे,
वो है मोबाइल।
कुछ न जानते हुए भी सब सिखा दे,
वो है मोबाइल।
अपनों से दूर होकर भी पास का एहसास दे,
वो है मोबाइल।
समय बताता हुआ भी, समय का पता न चलने दे,
वो है मोबाइल।।

पिता

जो कमीज के बीच फटी बनियान छुपा देता है,
वो पिता होता है।

जो अपने आंसुओं को आँखों से बाहर नहीं आने देता,
वो पिता होता है।

जो अपने बच्चों की हर जिद को पूरा करता है,
वो पिता होता है।

जो जीवन भर कर्ज़ का बोझ लिए फिरता है,
वो पिता होता है।

जो अपनी बीमारी भी किसी को नहीं बता पाता,
वो पिता होता है।

जो अपनी ख्वाहिशों को पूरा नहीं कर पाता,
वो पिता होता है।

जो चाहकर भी खुलकर नहीं रो सकता,
वो पिता होता है।

जो पत्थर रूपी दिल लेकर जीता है,
वो पिता होता है।

जो एक-एक पसीने की बूँद से घर बनाता है,
वो पिता होता है।

जिनकी हम पसीने की एक बूँद की भी कीमत चुका नहीं सकते,
वो पिता होता है।।

– प्राजकता पाटिल
आंकड़ा प्रचालक

क्षणिक व्यंग्य

दो महिलाएं बस में सफर कर रही थीं।
एक ने कहा, "सीता, क्या तुम जानती हो,
इंडिया ने भारत पर हमला कर दिया है?"
तब सीता बोली, "तुम क्यों परेशान हो रही हो?
हमें इस से क्या लेना-देना?
हम तो हिन्दुस्तान में रहते हैं न!"

क्षणिक व्यंग्य

डॉक्टर: "आपके तीन दांत कैसे टूट गए?"
मरीज: "पत्नी ने कड़क रोटी बनाई थी।"
डॉक्टर: "तो खाने से इंकार क्यों नहीं कर दिया?"
मरीज: "जी, वही तो किया था!"

वैश्विक अर्थव्यवस्था

वैश्विक अर्थव्यवस्था से तात्पर्य सभी देशों के बीच आपसी जुड़ी हुई आर्थिक गतिविधियों और लेन-देन से है। यह एक संयुक्त प्रणाली है जिसमें एक देश का आर्थिक स्वास्थ्य दूसरे देशों की आर्थिक स्थिति से प्रभावित होता है। यह प्रणाली व्यापार, वित्त, निवेश, संसाधन आदान-प्रदान और श्रम प्रवास को अपने भीतर समेटे हुए है। वैश्विक अर्थव्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह देशों की आर्थिक नीतियों, वित्तीय गतिविधियों, उत्पादन की श्रृंखलाओं और प्रौद्योगिकी से गहरे रूप से जुड़ी हुई है। जब एक देश में आर्थिक संकट आता है तो यह अन्य देशों में भी फैल सकता है जिससे वैश्विक आर्थिक संकट पैदा हो सकता है।

1. वैश्विक अर्थव्यवस्था के प्रमुख घटक

वैश्वीकरण: वैश्वीकरण के कारण दुनिया भर के देश एक-दूसरे से जुड़ते जा रहे हैं। इसे हम आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से समझ सकते हैं। तकनीकी उन्नति और संचार माध्यमों ने देशों के बीच भौतिक दूरी को कम कर दिया है। वैश्वीकरण का एक परिणाम यह हुआ कि देशों की घरेलू नीतियाँ अब एक दूसरे पर प्रभाव डालने लगी हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई देश अपनी मुद्रा का अवमूल्यन करता है तो यह अन्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर प्रभाव डाल सकता है।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार: अंतरराष्ट्रीय व्यापार ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को गति दी है। यह देशों को विभिन्न प्रकार के उत्पादों के व्यापार में सक्षम बनाता है जिनकी स्थानीय रूप से उपलब्धता नहीं होती है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि देश अपनी विशिष्टता वाले उत्पादों में दक्षता प्राप्त कर सकते हैं और अन्य देशों से सामान का आयात कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, चीन को हल्की मैन्युफैक्चरिंग में दक्षता हासिल है जबकि अमेरिका सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अधिक विकसित है।

अंतरराष्ट्रीय वित्त: वैश्विक अर्थव्यवस्था में मुद्रा विनिमय, अंतरराष्ट्रीय निवेश और वित्तीय बाजारों का बड़ा योगदान है। जब कोई देश अपने उत्पादों को विदेशों में बेचता है या विदेशी निवेश आकर्षित करता है तो उसे मुद्रा विनिमय की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि मुद्रा विनिमय दर वैश्विक व्यापार और निवेश पर प्रभाव डालता है। इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय वित्त के तहत, देशों को अपने वित्तीय संस्थानों जैसे कि विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष और अन्य निजी और सार्वजनिक वित्तीय संस्थानों के साथ संबंध बनाए रखने की आवश्यकता होती है।

वैश्विक निवेश: वैश्विक निवेश का तात्पर्य ऐसे निवेश से है जो राष्ट्रीय सीमाओं से परे होते हैं। जब कंपनियां और निवेशक एक देश में निवेश करते हैं तो वह निवेश अक्सर अन्य देशों में भी फैलता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इसका प्रमुख उदाहरण है। यह निवेश किसी विशेष देश के विकास को गति देता है और नई नौकरियों का सृजन करता है।

सूक्ष्म और वृहद स्तर पर आर्थिक महत्व: दुनिया की आबादी में वृद्धि के कारण उभरते बाजार आर्थिक रूप से बढ़ रहे हैं जिससे बाजार, विश्व आर्थिक विकास के प्राथमिक इंजनों में से एक बन गए हैं। उभरते बाजारों द्वारा दिखाया गया, विकास और लचीलापन विश्व अर्थव्यवस्था के लिए एक अच्छा संकेत है। अगले बिंदु पर जाने से पहले आपको सूक्ष्म अर्थशास्त्र की अवधारणा को समझना होगा। यह संसाधनों के आवंटन और निर्णय लेने के संबंध में घरों, व्यक्तियों और फर्मों के व्यवहार के अध्ययन को संदर्भित करता है। सरल शब्दों में, अर्थशास्त्र की यह शाखा अध्ययन करती है कि लोग कैसे निर्णय लेते हैं कौन- से कारक उनके निर्णयों को प्रभावित करते हैं और ये निर्णय बाजार में वस्तुओं की कीमत, मांग और आपूर्ति को कैसे प्रभावित करते हैं। इसलिए, सूक्ष्म अर्थशास्त्र के दृष्टिकोण से, उच्च बाजार मूल्य वाली कुछ सबसे बड़ी फर्में और दुनिया के कुछ सबसे अमीर व्यक्ति इन उभरते बाजारों से आते हैं जिसने

इन देशों में आय के उच्च वितरण में मदद की है। हालाँकि, इनमें से कई उभरते देश अभी भी गरीबी से ग्रस्त हैं और इसे मिटाने की दिशा में काम करने की अभी भी ज़रूरत है।

2. वैश्विक अर्थव्यवस्था के लाभ

मुक्त व्यापार:वैश्विक अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा लाभ मुक्त व्यापार है जिसमें देश बिना किसी बड़े प्रतिबंध के अपने उत्पादों का आयात और निर्यात कर सकते हैं। इससे देशों के बीच संसाधनों का प्रभावी तरीके से आवंटन होता है और उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार होता है। उदाहरण के लिए, जापान का ऑटोमोबाइल उद्योग बहुत सफल है जबकि भारत में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में श्रेष्ठता है। मुक्त व्यापार के माध्यम से दोनों देश एक-दूसरे के उत्पादों का लाभ उठा सकते हैं।

श्रम का आवागमन: वैश्विक अर्थव्यवस्था के कारण श्रमिक अब एक देश से दूसरे देश में रोजगार की तलाश में जा सकते हैं। यह प्रवृत्ति विकसित देशों के लिए लाभकारी होती है क्योंकि यहां श्रमिकों की मांग अधिक होती है। साथ ही, विकासशील देशों में श्रमिक अपनी योग्यता और कौशल के अनुसार उच्च वेतन वाली नौकरियां प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार, श्रम का प्रवास दोनों देशों के लिए लाभकारी है और वैश्विक असमानता को कम करने में मदद करता है।

पैमाने की अर्थव्यवस्था: पैमाने की अर्थव्यवस्था तब होती है जब उत्पादन की मात्रा बढ़ने पर लागत में कमी आती है। वैश्विक अर्थव्यवस्था के कारण देश अब केवल अपनी घरेलू मांग के लिए उत्पाद नहीं बनाते बल्कि वैश्विक स्तर पर अपने उत्पादों का व्यापार करते हैं। इससे उत्पादन की मात्रा बढ़ती है और औसत लागत घटती है जो उपभोक्ताओं के लिए सस्ता सामान उपलब्ध कराता है। उदाहरण के लिए, जब एक कार निर्माता बड़ी संख्या में कारों का उत्पादन करता है तो उसे उत्पादन लागत कम करने का अवसर मिलता है।

निवेश में वृद्धि: वैश्विक अर्थव्यवस्था के कारण देशों में निवेश के अवसर बढ़े हैं। विकासशील देशों को विदेशी निवेश आकर्षित करने में मदद मिलती है जो उनके आधारभूत ढांचे, उद्योग, और तकनीकी उन्नति में योगदान करता है। इससे उनकी अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है और वे वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपनी स्थिति को मजबूत कर पाते हैं।

3. वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव डालने वाले कारक

प्राकृतिक संसाधन: जैसे तेल, कोयला, गैस, और खनिज, वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए अहम हैं। जिन देशों के पास इन संसाधनों का भंडार है वे अंतरराष्ट्रीय व्यापार में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के तौर पर, मध्य-पूर्व के देशों की अर्थव्यवस्था तेल पर आधारित है जो वैश्विक बाजार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आधारभूत संरचना: जैसे सड़कें, रेलमार्ग, बंदरगाह और हवाई अड्डे, देशों के व्यापार और निवेश की दक्षता को प्रभावित करती हैं। मजबूत आधारभूत संरचना वाले देशों को आसानी से वैश्विक बाजार से जोड़ने में मदद मिलती है।

जनसंख्या और श्रम: एक बड़ा और युवा श्रमबल किसी देश के आर्थिक विकास के लिए काफी लाभकारी होता है। भारत और चीन जैसे देशों में बड़ी जनसंख्या और श्रमबल के कारण उनकी अर्थव्यवस्था में तेजी से वृद्धि हो रही है।

मानव पूंजी और तकनीकी: मानव पूंजी अर्थात शिक्षित और प्रशिक्षित श्रमिक, एक महत्वपूर्ण कारक है जो वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। साथ ही, तकनीकी नवाचार और सुधार वैश्विक उत्पादन प्रक्रियाओं को सुधारने में सहायक होते हैं।

कानूनी और वित्तीय नीतियाँ: कानूनी सुरक्षा और स्थिर वित्तीय नीतियां निवेशकों को आकर्षित करती हैं। मजबूत कानूनी ढांचा और पारदर्शी वित्तीय प्रणाली देशों को वैश्विक व्यापार में सफलता दिलाने में मदद करती हैं।

4. वैश्विक अर्थव्यवस्था के प्रभाव

अंतरराष्ट्रीय व्यापार के फायदे और नुकसान: अंतरराष्ट्रीय व्यापार से देशों को अपने उत्पादों और सेवाओं का वैश्विक बाजार में विक्रय करने का अवसर मिलता है। हालांकि, कुछ देशों के लिए यह चुनौतीपूर्ण हो सकता है क्योंकि व्यापार में प्रतिस्पर्धा बढ़ती है और कभी-कभी देश अपने घरेलू उद्योगों की सुरक्षा के लिए प्रतिबंध लगा सकते हैं।

संकटों का फैलाव: वैश्विक अर्थव्यवस्था में कोई भी संकट बहुत तेजी से फैल सकता है। उदाहरण के लिए, 2008 का वैश्विक वित्तीय संकट जो अमेरिका से शुरू हुआ था बाद में इसने दुनिया भर के देशों की अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित किया।

निष्कर्ष- वैश्विक अर्थव्यवस्था का प्रभाव दिन-प्रतिदिन के जीवन पर बढ़ता जा रहा है। इसका समझना और सही दिशा में काम करना आवश्यक है ताकि सभी देशों को इसके लाभ मिल सकें और वे इसके प्रभाव से अपने देश को सुरक्षित और समृद्ध बना सकें।

– प्रीति भगत
आंकड़ा प्रचालक

अप्रत्याशित शत्रु

वर्मा जी केंद्रीय लोक विभाग से सेवानिवृत्त एक साधारण क्लर्क थे। सरकारी दफ्तरों में वर्षों तक काम करने के बाद जब उन्होंने रिटायरमेंट लिया तो उनका जीवन कुछ शांत हो गया था। नौकरी के दिनों में वे हमेशा फाइलों और दस्तावेजों के बीच उलझे रहते थे लेकिन रिटायरमेंट के बाद उनका दिन अपने घर और पत्नी के साथ व्यतीत करने की आदत बन गई थी। वर्मा जी का जीवन बहुत ही नियमित था, उनकी दिनचर्या में कोई खास बदलाव नहीं आता था, सिवाय इसके कि अब उन्हें किसी दबाव या जिम्मेदारी का सामना नहीं करना पड़ता था। उनका और उनकी पत्नी सुनीता जी का मुंबई के एक छोटे से फ्लैट में जीवन आरामदायक था। फ्लैट का माहौल अच्छा था लेकिन एक बात थी जो हमेशा वर्मा जी को परेशान करती थी, उनके अपार्टमेंट टावर में बढ़ती चोरियों की घटनाएं।

वर्मा जी जैसे सजग और जिम्मेदार व्यक्ति के लिए यह चिंता का कारण बन गया था। विशेष रूप से तब, जब वह और उनकी पत्नी मुन्नार घूमने जाने का विचार कर रहे थे। मुन्नार के खूबसूरत पहाड़ों और हरियाली में छुट्टियां बिताने का उनका सपना था लेकिन इस योजना के साथ एक नया डर भी जुड़ गया। वह डर था, घर की सुरक्षा।

वर्मा जी का मानना था कि जब तक वे घर में रहते हैं तब तक घर की सुरक्षा का ख्याल रखना संभव होता है लेकिन जब वह और सुनीता जी मुन्नार जाएंगे तो उनका घर पूरी तरह से बिना देखरेख के छोड़ देना एक जोखिम बन सकता था। उनके मन में यह सवाल बार-बार उठ रहा था, “अगर चोर घर में घुस आए, तो वह क्या-क्या नुकसान कर सकते हैं? घर में नकद नहीं होगा लेकिन जो भी सामान होगा, उसका क्या होगा?”

इस सोच के साथ ही वर्मा जी के दिमाग में एक अजीब विचार आया। उन्होंने सोचा, “क्यों न कुछ ऐसा किया जाए जिससे चोर को थोड़ा राहत मिले और मेरा सामान भी सुरक्षित रहे?” यह विचार आते ही वर्मा जी ने एक ऐसी योजना बनाई, जो चोर के लिए सहानुभूति का संदेश और घर की सुरक्षा दोनों को सुनिश्चित करती थी। वर्मा जी ने अपने घर के टेबल पर दो हजार रुपये का एक नोट रखा और उसके साथ एक पत्र भी छोड़ा। पत्र में उन्होंने चोर को न सिर्फ सहानुभूति का संदेश दिया बल्कि उसे एक मार्गदर्शन भी प्रस्तुत किया ताकि वह घर को नुकसान न पहुंचाए।

उन्होंने लिखा:-“हे परम आदरणीय अनचाहे अतिथि जी, मेरे घर में प्रवेश करने के लिए आपने कड़ी मेहनत की है, इसके लिए आपको हार्दिक बधाई। मुझे यह बताने में खेद है कि हमारा परिवार बहुत साधारण है और हमारी सारी संपत्ति हमारी पेंशन के मामूली पैसों से चलती है। हमारे पास कोई अतिरिक्त नकदी नहीं है और आपकी मेहनत के बावजूद यहां बहुत ज्यादा कुछ नहीं मिलेगा। इसलिए मैंने आपको इस छोटे से नोट को छोड़ा है जो इस समय मेरी सामर्थ्य के अनुसार है। कृपया इसे श्रद्धा और सम्मान के साथ स्वीकार करें।"

इसके बाद, वर्मा जी ने पत्र में एक और दिलचस्प सलाह दी:-"अगर आप भविष्य में अपनी व्यापारिक गतिविधियों में विस्तार करना चाहते हैं तो मैं आपको कुछ विशेष सुझाव दे रहा हूं। मेरे फ्लैट के ठीक सामने सातवीं मंजिल पर एक प्रभावशाली मंत्री जी रहते हैं, आठवीं मंजिल पर एक प्रॉपर्टी डीलर है, छठी मंजिल पर सहकारी बैंक का अध्यक्ष रहता है, पांचवीं मंजिल पर एक उद्योगपति है, चौथी मंजिल पर ठेकेदार रहते हैं, और तीसरी मंजिल पर एक भ्रष्ट इंजीनियर। इन सबके घरों में नकदी और गहनों से भरा हुआ है।

आपको वहां सफलता मिलेगी।" वर्मा जी ने पत्र का समापन इस तरह किया: "आपका शुभचिंतक, वर्मा जी" वर्मा जी का यह विश्वास था कि अगर घर में चोर घुसता भी है तो वह इस पत्र को पढ़ेगा और शायद चोरी करने के बजाय वर्मा जी के द्वारा दिए गए सुझावों को लागू करेगा। उनका यह मानना था कि कभी-कभी कुछ अप्रत्याशित कदम सही दिशा में ले जा सकते हैं। सुनीता जी इस अजीब योजना पर थोड़ी हंसी भी जता रही थीं लेकिन वर्मा जी का मानना था कि यह चोर को सकारात्मक दिशा दिखाने का एक अनूठा तरीका है। मुन्नार यात्रा से लौटते समय वर्मा जी और सुनीता जी दोनों की मन में यह उम्मीद थी कि उनका घर सुरक्षित रहेगा लेकिन जब वे घर लौटे तो उन्होंने जो देखा, वह उनके लिए एक बड़ा आश्चर्य था। घर में उनके टेबल पर रखा बैग और उसमें पांच लाख रुपये नकद थे। यह दृश्य वर्मा जी के लिए चौंकाने वाला था।

उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह सच है। वर्मा जी ने बैग को खोला और उस पर रखा पत्र पढ़ा। पत्र में लिखा था: "आदरणीय गुरुदेव, आपके द्वारा दिए गए मार्गदर्शन और शुभ सलाह के लिए मैं सच्चे दिल से आपका आभारी हूं। मुझे खेद है कि मैं पहले आपके पास नहीं आ सका लेकिन अब मैंने आपकी सलाह पर अमल किया और अपना मिशन सफलतापूर्वक पूरा किया। आपके सहयोग के लिए मैं आपको अपनी छोटी सी गुरुदक्षिणा भेज रहा हूं जो इस समय मेरी क्षमता के अनुसार है। मुझे आशा है कि भविष्य में भी मुझे आपका आशीर्वाद और मार्गदर्शन मिलता रहेगा।

आपका आज्ञाकारी चोर।" वर्मा जी और सुनीता जी दोनों इस पत्र को पढ़कर हैरान रह गए। वर्मा जी के चेहरे पर हल्की- सी मुस्कान थी जबकि सुनीता जी की आंखों में आश्चर्य का मिश्रण था। सुनीता जी ने पूछा, "वर्मा जी, यह क्या हो गया? हम सच में चोरी के शिकार हो गए हैं या फिर यह कुछ और है?" वर्मा जी मुस्कराते हुए बोले, "आपको क्या लगता है, सुनीता जी? क्या यह चोर अब हमारा दोस्त बन गया है या फिर हम उसके गुरु?" यह पूरा घटनाक्रम वर्मा जी के लिए एक अजीब लेकिन हास्यपूर्ण स्थिति बन गया था। जो चोर कभी उनके घर को लूटने आया था, वही अब उनका 'आज्ञाकारी शिष्य' बन गया था। यह घटना वर्मा जी के लिए एक मजेदार और सोचने पर मजबूर करने वाली स्थिति बन गई थी।

वर्मा जी ने हल्की-सी हंसी के साथ कहा, "देखो सुनीता जी, जीवन में कभी-कभी ऐसा होता है जब हम किसी को सही दिशा दिखाते हैं तो वह हमें किसी न किसी रूप में धन्यवाद देता है। इस चोर ने मेरी सलाह का पालन किया और अब वह अपनी तरह से मुझे आभार व्यक्त कर रहा है।

"सुनीता जी मुस्कराईं और बोलीं, "सच कह रहे हैं आप वर्मा जी, यह उदाहरण है कि हमें कभी भी किसी को कम नहीं आंकना चाहिए। कभी-कभी हमारी मदद से ही वह सही रास्ते पर चल पड़ते हैं।" वर्मा जी ने एक गहरी सांस ली और कहा, "यह घटना मेरे लिए एक जीवनभर का पाठ बन गई है। हमें कभी भी किसी को कम नहीं आंकना चाहिए, चाहे वह चोर ही क्यों न हो।" यह अनुभव वर्मा जी और सुनीता जी के लिए एक जीवनभर का सीखने का अवसर बन गया।

उन्होंने इस पूरे घटनाक्रम को अपने जीवन के एक बेहतरीन किस्से के रूप में संजो लिया। यह घटना हमें यह सिखाती है कि कभी भी किसी को कम नहीं आंकना चाहिए। जीवन में अप्रत्याशित शत्रु भी हमें महत्वपूर्ण जीवन के पाठ सिखा सकते हैं।

इस कहानी से यह भी पता चलता है कि कभी-कभी हमारे सबसे अप्रत्याशित शत्रु हमारे लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शक बन सकते हैं। हमें अपनी पूरी उम्मीदों और धैर्य के साथ जीवन में किसी भी चुनौती का सामना करना चाहिए। जीवन में छोटे-छोटे अनुभव हमें बड़े जीवन के पाठ देते हैं, और यही असल में जीवन का उद्देश्य है – हमें सीखना और आगे बढ़ना।

– पी सी रघुवंशी
परामर्शदाता/शिष्टाचार

महाराष्ट्र का शनिशिंगणापुर मंदिर एक प्राचीन और चमत्कारिक पीठ

शनिशिंगणापुर मंदिर भारत के महाराष्ट्र राज्य के अहमदनगर जिले में स्थित एक अद्वितीय और चमत्कारी धार्मिक स्थल है जो अपने विशेष शनि देवता के मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। यह स्थान धार्मिक रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता है और यहाँ प्रतिदिन हजारों लोग अपने श्रद्धा भाव से शनि देव के दर्शन करने आते हैं। इस गांव की पहचान शनि देव के मंदिर और उस मंदिर में स्थित भगवान शनि की स्वयंभू मूर्ति से है। यह स्थान न केवल धार्मिक आस्था का केन्द्र है बल्कि यहाँ की चमत्कारी घटनाएँ और प्राचीन कथाएँ भी लोगों को काफी आकर्षित करती हैं।

शनिशिंगणापुर का विशेष स्थान

शनिशिंगणापुर गांव की जनसंख्या लगभग तीन हजार है। यह गांव अपने रहन-सहन और अद्भुत आस्था के कारण चर्चित है। यहाँ के लोग अपनी जीवनशैली में एक विशेष प्रकार की श्रद्धा और विश्वास रखते हैं। इस गांव की सबसे खास बात यह है कि यहाँ के किसी भी घर में दरवाजा नहीं है। यहां के लोग अपने घरों में कुंडी या ताला नहीं लगाते। घरों में रखे गए सभी सामान जैसे गहने, पैसे, और कीमती वस्तुएं खुले में रखी जाती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि यहाँ चोरी की कोई घटना नहीं होती। लोग अपनी सारी कीमती वस्तुएं बिना किसी डर के खुले में रखते हैं और इसके बावजूद कोई चोरी नहीं होती। ऐसा माना जाता है कि शनि देव की विशेष कृपा के कारण यहाँ चोरी की घटनाएँ नहीं घटतीं हैं।

यहां तक कि लोग अपने वाहनों को बिना ताले के छोड़कर चलते हैं और यहां कभी किसी वाहन की चोरी नहीं हुई। इस स्थान पर एक अद्भुत सुरक्षा का अनुभव किया जाता है जो अन्य स्थानों से बिल्कुल भिन्न है। लोगों की मान्यता है कि शनि देव की उपस्थिति और आशीर्वाद से यहाँ सुरक्षा का अनूठा रूप देखने को मिलता है।

शनिशिंगणापुर मंदिर और उसकी मूर्ति

शनिशिंगणापुर मंदिर की शनि देवता की मूर्ति काले रंग की है। यह मूर्ति करीब 5 फुट 9 इंच ऊँची और 1 फुट 6 इंच चौड़ी

कोई भी महान व्यक्ति, अवसरों की कमी के बारे में शिकायत नहीं करता है।

है। यह मूर्ति एक संगमरमर के चबूतरे पर स्थापित है और यह चबूतरा खुले आकाश के नीचे स्थित है। यहाँ शनि देव की मूर्ति पर कोई छत या छत्र नहीं है और शनि देव बिना छत्र के दिन-रात खड़े रहते हैं। यह स्थिति भी इस मंदिर को एक विशेष धार्मिक महत्व प्रदान करती है।

मूर्ति के आसपास की पूजा और आराधना का विशेष महत्व है। यहाँ के भक्त शनि देव की मूर्ति के दर्शन करने के बाद अपनी समस्याओं के समाधान के लिए पूजा अर्चना करते हैं। माना जाता है कि शनि देव की कृपा से व्यक्ति के सभी दुखों का निवारण होता है और वह जीवन में सुख-समृद्धि प्राप्त करता है।

गाँव की जीवनशैली और मान्यताएँ

शनिशिंगणापुर गाँव की जीवनशैली में एक अद्भुत धार्मिक विश्वास समाहित है। यहाँ के लोग अपनी पूरी जिंदगी शनि देव की पूजा और आराधना में समर्पित करते हैं। किसी भी घर में दरवाजा नहीं होता और लोग बिना ताले के अपने घरों में आते-जाते हैं। कहा जाता है कि यहाँ की अनूठी परंपरा और मान्यताएँ शनि देव के आशीर्वाद से जुड़ी हुई हैं।

यहाँ का एक और आश्चर्य है कि लोग शनि देव के दर्शन के बाद कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखते। मान्यता है कि यदि कोई भक्त दर्शन के बाद पीछे मुड़कर देखता है तो शनि देव की कृपा दृष्टि उस पर नहीं रहती। इस प्रकार की परंपराएँ यहाँ के लोगों में गहरे धार्मिक विश्वास को दर्शाती हैं।

शनि देव की कृपा और आशीर्वाद

हिंदू धर्म में यह मान्यता है कि शनि देव की दृष्टि बहुत प्रभावशाली होती है। शनि की अशुभ दृष्टि से जीवन में विपत्तियाँ आ सकती हैं लेकिन जब शनि की शुभ दृष्टि होती है तो जीवन में अपार समृद्धि और सुख आता है। शनि ग्रह को आध्यात्मिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण ग्रहों में से एक माना जाता है। यह व्यक्ति के कर्मों का फल प्रदान करता है और जीवन के हर क्षेत्र में व्यक्ति को उन्नति की दिशा की ओर अग्रसर करता है।

महर्षि पाराशर के अनुसार, शनि जिस अवस्था में होता है उस अवस्था के अनुसार व्यक्ति को फल प्रदान करता है। शनि देव का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए भक्त यहाँ नियमित रूप से पूजा और अभिषेक करते हैं। शनि देव का यह मंदिर एक अद्भुत स्थान है जहाँ लोग अपनी समस्याओं के समाधान के लिए आते हैं और अपनी कष्टों से मुक्ति पाते हैं।

शनिशिंगणापुर मंदिर की कथा

शनिशिंगणापुर मंदिर की स्थापना और उसका इतिहास भी अत्यधिक चमत्कारी है। कहा जाता है कि यह मंदिर एक प्राचीन घटना से जुड़ा हुआ है। एक समय की बात है जब गाँव में एक भयंकर बाढ़ आई थी। उस बाढ़ के दौरान, गाँव के लोगों न पेड़ों की झाड़ियों के पास एक अजीब तरह का पत्थर देखा। यह पत्थर बाद में शनि देवता के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। इस पत्थर को शनि देव ने एक व्यक्ति को स्वप्न में दर्शन दिए और उस पत्थर को मंदिर में स्थापित करने का आदेश दिया।

इसके बाद, उस पत्थर को गाँव के एक स्थान पर स्थापित किया गया और शनिशिंगणापुर मंदिर का निर्माण हुआ। इस प्रकार से यह मंदिर अस्तित्व में आया और आज यह एक प्रमुख तीर्थ स्थल के रूप में प्रसिद्ध है।

विशेष पूजा और अनुष्ठान

शनिशिंगणापुर मंदिर में विशेष पूजा और अनुष्ठान भी आयोजित किए जाते हैं। प्रत्येक शनिवार को और अमावस्या के दिन यहाँ विशेष पूजा होती है। इस दौरान भक्त बड़ी संख्या में मंदिर आते हैं और शनि देवता के दर्शन करते हैं। इसके अलावा शनि जयंती के अवसर पर यहाँ लघु रुद्राभिषेक किया जाता है जो सुबह 7 बजे से लेकर शाम 6 बजे तक चलता है। इस पूजा में विशेष रूप से ब्राह्मणों को आमंत्रित किया जाता है। यहाँ की पूजा पद्धतियाँ अत्यधिक भक्तिपूर्ण और आध्यात्मिक होती हैं जो भक्तों को शांति और समृद्धि की प्राप्ति का मार्ग दिखाती हैं।

चोरी न होने की मान्यता

शनिशिंगणापुर गाँव में चोरी न होने की एक अत्यधिक प्रसिद्ध मान्यता है। कहा जाता है कि यदि कोई व्यक्ति यहाँ चोरी करने की कोशिश करता है तो वह गाँव की सीमा से बाहर नहीं जा पाता। इसके अलावा, उस व्यक्ति को शनि देव के प्रकोप का सामना करना पड़ता है। इस अद्भुत घटना ने इस गांव को और भी चमत्कारी बना दिया है और यह स्थान अपनी विशेष धार्मिक महत्वता के कारण प्रसिद्ध है।

सारांश

शनिशिंगणापुर मंदिर एक अद्भुत और चमत्कारी स्थल है जो शनि देव की उपासना और उनके आशीर्वाद के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की पूजा पद्धतियाँ, मंदिर की मूर्ति और गाँव की जीवनशैली से एक अलग प्रकार की दिव्यता की अनुभूति होती है। यह स्थान न केवल एक धार्मिक स्थल है बल्कि एक ऐसा स्थान है जहाँ विश्वास और श्रद्धा का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

– प्रमोद वाघमारे
आंकड़ा प्रचालक

मुंबई शहर की संरक्षक मुम्बा देवी

मुम्बा देवी मंदिर, मुंबई शहर के प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिरों में से एक है। यह मंदिर हिन्दू देवी मुम्बा को समर्पित है जो कि मुम्बई (मुंबई) शहर की संरक्षक देवी मानी जाती हैं। किंबदन्ती है कि मुंबादेवी, नमक संग्रहकर्ता कृषकों और कोली (मछुआरे) की संरक्षक देवी थीं जो बॉम्बे के सात द्वीपों के मूल निवासी थे। “मुंबा” शब्द दो शब्दों “महा” और “अंबा” से लिया गया था जिसका अर्थ है “महान माँ। मछुआरे उसे अपनी रक्षक और ‘महाशक्ति’ मानते हैं। मुम्बा देवी का नाम ही इस शहर के नाम का आधार है। मुंबई शहर का नाम मुम्बा देवी के नाम पर ही पड़ा है और यह मंदिर शहर के प्राचीन धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है। मुम्बा देवी मंदिर एक ऐतिहासिक एवं बहुत पुराना मंदिर है और यह एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है जहाँ हिन्दू भक्तों की आस्था जुड़ी हुई है। यह मंदिर खासतौर पर समुद्र के किनारे स्थित होने के कारण शहर के अन्य धार्मिक स्थल से अलग है। इस मंदिर का महत्व न केवल धार्मिक दृष्टि से है बल्कि यह मुंबई शहर के विकास और उसके ऐतिहासिक पहलुओं से भी जुड़ा हुआ है।

मुम्बा देवी मंदिर का इतिहास

मुम्बा देवी मंदिर का इतिहास सैकड़ों वर्ष पुराना है। यह मंदिर मुंबई के प्राचीन और ऐतिहासिक स्थल के रूप में जाना जाता है। मंदिर के बारे में यह कहा जाता है कि यह मंदिर पहले एक साधारण साधू के द्वारा स्थापित किया गया था जो यहां ध्यान और साधना करता था। समय के साथ, इस मंदिर ने अपनी धार्मिक महत्ता बढ़ाई और धीरे-धीरे यह एक प्रमुख पूजा स्थल बन गया। मुम्बा देवी का संबंध समुद्र से जुड़ा हुआ माना जाता है। मुम्बा देवी के बारे में यह मान्यता है कि यह देवी समुद्र की देवी है और उन्होंने इस क्षेत्र के लोगों की समय-समय पर रक्षा की। मुंबई के नाम की उत्पत्ति भी मुम्बा देवी से हुई है क्योंकि मुम्बा देवी ही इस नगर की संरक्षक देवी मानी जाती हैं। पहले, मंदिर का आकार काफी छोटा था लेकिन समय के साथ मंदिर का आकार बढ़ता गया और अब यहां पर एक भव्य निर्माण हुआ है।

मुम्बा देवी का महत्व

मुम्बा देवी मंदिर का धार्मिक महत्व बहुत अधिक है। यह मंदिर हिन्दू धर्म के अनुयायियों के लिए एक पवित्र स्थल है जहाँ पर लोग अपने जीवन के विभिन्न समस्याओं का समाधान प्राप्त करने के लिए पूजा और अनुष्ठान करते हैं। यहां पर विशेष रूप से महिला भक्तों की संख्या अधिक रहती है जो देवी मुम्बा से संतान प्राप्ति, सुख-शांति और समृद्धि की कामना करती हैं। मुम्बा देवी का पूजन करने से न केवल धार्मिक लाभ मिलता है बल्कि यह भक्तों के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का भी संचार

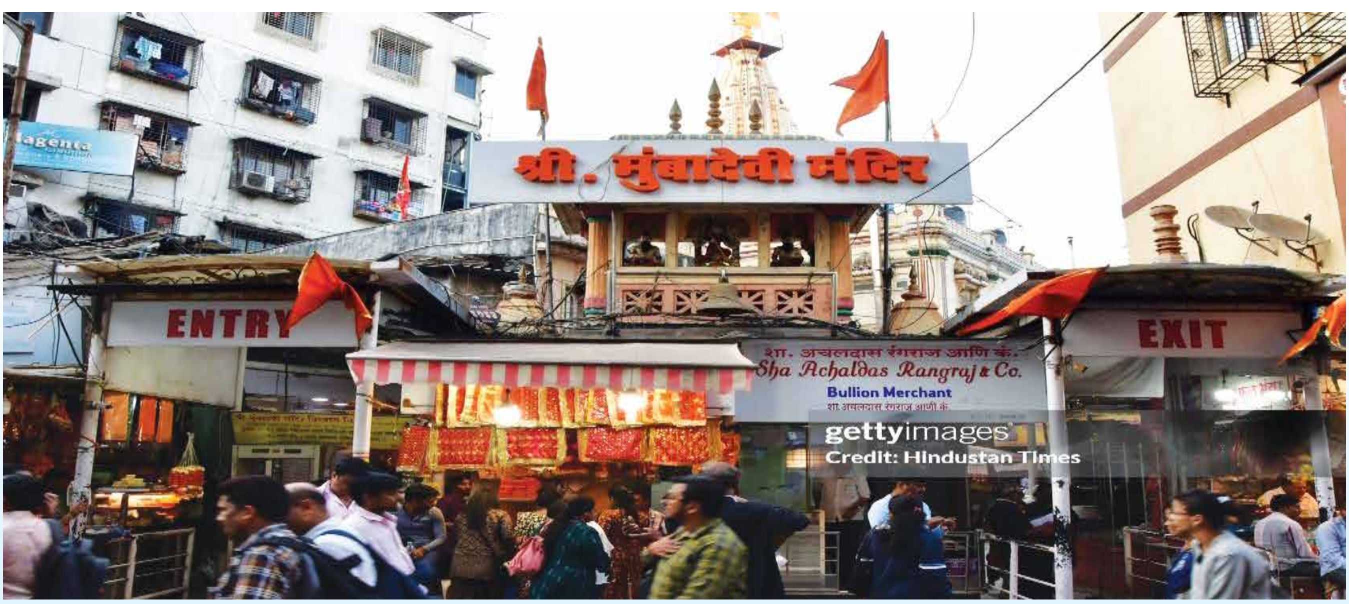

करती है। यह मंदिर मुंबई शहर के विकास के साथ-साथ धार्मिक आस्थाओं का केंद्र बन गया है और यहां पर नियमित रूप से पूजा, हवन और अन्य धार्मिक अनुष्ठान निरंतर किए जाते हैं।

मंदिर का वास्तुकला

मुम्बा देवी मंदिर का वास्तुकला बहुत आकर्षक, कलात्मक और भव्य है। मंदिर का निर्माण पारंपरिक हिन्दू मंदिर वास्तुकला शैली में किया गया है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर सुंदर और उकेरे हुए शिल्प कार्य हैं जो भक्तों को बहुत आकर्षित करते हैं। मंदिर की मुख्य मूर्ति देवी मुम्बा की है जो काले रंग के पत्थर से बनी हुई है। देवी की मूर्ति को स्वर्णिम आभूषणों से सजाया गया है जो भक्तों की श्रद्धा और भक्ति को और अधिक प्रगाढ़ करते हैं। मंदिर के अंदर की सजावट और वास्तुकला बेहद आकर्षक है। इसके अलावा, मंदिर के प्रांगण में विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियां भी स्थापित की गई हैं जो इस स्थल को और भी पवित्र बनाती हैं। मंदिर में पहुंचते ही भक्तों को एक पवित्र और शांतिपूर्ण वातावरण का अनुभव होता है जो आत्मिक शांति प्रदान करता है।

मुम्बा देवी मंदिर की पूजा विधि

मुम्बा देवी मंदिर में पूजा विधि बहुत सरल है लेकिन इसके साथ ही यह बहुत प्रभावशाली भी है। यहां पर रोज़ाना श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है और वे देवी मुम्बा की पूजा- अर्चना करते हैं। पूजा में मुख्य रूप से दीप जलाना, फूल चढ़ाना और विशेष मंत्रों का उच्चारण किया जाता है। यहां पर पूजा करने से भक्तों के जीवन में समृद्धि, सुख और शांति का वास होता है। मंदिर में विशेष रूप से सोमवार और शुक्रवार को भक्तों की अधिक भीड़ होती है। इन दिनों में विशेष पूजा और अनुष्ठान आयोजित किए जाते हैं। इसके अलावा, मंदिर में पूजा- अर्चना करने के लिए भक्तों के लिए अलग-अलग पैकेज उपलब्ध हैं जिन्हें वे अपनी आस्था के अनुसार चुन सकते हैं।

मुम्बा देवी मंदिर की पूजा का महत्व

मुम्बा देवी मंदिर की पूजा का खास महत्व है क्योंकि यह श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक शक्ति, मानसिक शांति और संतुलन प्रदान करती है। यहां पूजा करने से यह माना जाता है कि भक्तों की सभी परेशानियाँ समाप्त हो जाती हैं और उन्हें सुख, शांति, और समृद्धि की प्राप्ति होती है। इसके अलावा, यह भी कहा जाता है कि जो लोग संतान प्राप्ति की कामना करते हैं उन्हें इस मंदिर में पूजा करने से संतान का आशीर्वाद मिलता है। मुम्बा देवी के पूजन में सबसे अहम बात यह है कि यह पूजा, समर्पण और आस्था की प्रतीक मानी जाती है। भक्तों का विश्वास है कि मुम्बा देवी अपने भक्तों की इच्छाओं को पूरा करती हैं और उनके जीवन को सुखमय बनाती हैं। इस मंदिर में पूजा करने से मानसिक तनाव दूर होता है और आत्मिक शांति का अनुभव होता है।

मुम्बा देवी मंदिर की विशेषता

मुम्बा देवी मंदिर की एक विशेषता यह है कि यह मंदिर समुद्र के पास स्थित है और इसके आस-पास का दृश्य बहुत आकर्षक और शांतिपूर्ण है। मंदिर में पूजा करने के बाद, भक्त समुद्र के किनारे बैठकर अपनी आस्था और विश्वास को महसूस कर सकते हैं। इस मंदिर का वातावरण भक्तों को एक अलग ही अनुभव देता है जो उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाता है। मंदिर की एक और विशेष बात यह है कि यह स्थान हमेशा भक्तों के लिए खुला रहता है। यहां पर हर समय पूजा का आयोजन होता है और भक्तों को पूजा के लिए कोई समय सीमा नहीं होती है।

मुम्बा देवी मंदिर का पर्यटन दृष्टिकोण

मुम्बा देवी मंदिर न केवल धार्मिक स्थल है बल्कि यह एक प्रमुख पर्यटन स्थल भी बन चुका है। यहां पर भारत एवं विदेशों से आने वाले पर्यटकों को मंदिर की धार्मिक महत्ता के साथ-साथ मुंबई के अद्भुत दृश्य और सांस्कृतिक धरोहर का भी अनुभव होता है। इस मंदिर का दौरा करने से पर्यटकों को हिन्दू धर्म, भारतीय संस्कृति और वास्तुकला के बारे में एक गहरी जानकारी प्राप्त होती है। यहां पर आने वाले पर्यटक मुंबई के अन्य प्रमुख पर्यटन स्थलों की यात्रा भी कर सकते हैं क्योंकि मंदिर समुद्र के किनारे स्थित है और यहाँ से अन्य प्रमुख पर्यटन स्थल जैसे कि समुद्रतट, गेटवे ऑफ इंडिया, और कोलाबा मार्केट भी नजदीक है।

निष्कर्ष

मुम्बा देवी मंदिर मुंबई शहर का एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र है। यह मंदिर न केवल भक्तों के लिए आस्था और विश्वास का प्रतीक है बल्कि यह मुंबई की सांस्कृतिक धरोहर का भी एक अहम भाग है। मंदिर का धार्मिक महत्व, उसकी पूजा विधि और वास्तुकला सभी भक्तों और पर्यटकों को आकर्षित करती है। मुम्बा देवी मंदिर का दौरा करने से न केवल धार्मिक शांति मिलती है बल्कि यह व्यक्ति को आत्मिक शांति और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। इस मंदिर के बारे में जानना और यहां पूजा करने से, हम न केवल हिन्दू धर्म के बारे में और अधिक समझ सकते हैं बल्कि हमें यह भी पता चलता है कि किस प्रकार धार्मिक स्थलों का इतिहास और संस्कृति हमारे जीवन में एक गहरी छाप छोड़ती है।

– श्रद्धा एन. ईटगी
कनिष्ठ लिपिक

भारत में इंजीनियरिंग दिवस की परंपरा

भारत में हर वर्ष 15 सितंबर को इंजीनियरिंग दिवस मनाया जाता है। यह दिन भारतीय इंजीनियरिंग के क्षेत्र में महान योगदान देने वाले मोक्शगुंडम विश्वेश्वरैया की जयंती के रूप में मनाया जाता है जिन्होंने भारतीय विज्ञान और इंजीनियरिंग में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह दिन भारतीय इंजीनियरों के योगदान को मान्यता देने, उनके प्रयासों की प्रशंसा करने और देश की प्रगति में उनके योगदान को पहचानने का अवसर प्रदान करता है।

मोक्शगुंडम विश्वेश्वरैया: भारतीय इंजीनियरिंग के प्रेरणा स्रोत

मोक्शगुंडम विश्वेश्वरैया का जन्म 15 सितंबर 1860 को हुआ था। वे एक महान इंजीनियर, शासक और योजनाकार थे जिन्होंने भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाएँ बनाई। मोक्शगुंडम विश्वेश्वरैया,विशेष रूप से कर्नाटक राज्य के बेलगाम जिले में कृष्णराजसागर बांध के निर्माण के लिए प्रसिद्ध हैं। इसके अलावा, उन्होंने कई अन्य महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर कार्य किया और भारतीय इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कई मील के पत्थर स्थापित किए।

उनके योगदान के कारण, भारत सरकार ने 1968 में उनके सम्मान में 15 सितंबर को इंजीनियरिंग दिवस घोषित किया। मोक्शगुंडम विश्वेश्वरैया के अनुपम एवं अद्वितीय कार्यों और उनकी दूरदर्शिता ने भारतीय इंजीनियरिंग में एक नया मानक स्थापित किया।

इंजीनियरिंग दिवस का महत्व

इंजीनियरिंग दिवस भारत में इंजीनियरिंग व्यवसाय को सम्मान देने और इंजीनियरों के योगदान को मान्यता देने का दिन है। यह दिन न केवल इंजीनियरों के योगदान को याद करने का दिन है बल्कि यह आगामी पीढ़ी के इंजीनियरों को प्रेरित करने और उन्हें समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझाने का भी अवसर है। इस दिन विभिन्न विश्वविद्यालयों, इंजीनियरिंग कॉलेजों और संस्थानों में विशेष कार्यक्रम, कार्यशालाएँ, और सेमिनार आयोजित किए जाते हैं और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में किए गए महत्वपूर्ण कार्यों और आने वाली चुनौतियों पर चर्चा की जाती है। इसके साथ ही, युवा इंजीनियरों को देश की सेवा के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाता है और उन्हें नई-नई तकनीकों को अपनाने का सुझाव दिया जाता है।

इंजीनियरिंग दिवस के अवसर पर कुछ प्रमुख बातें

1. **इंजीनियरों का सम्मान:** इस दिन इंजीनियरों के योगदान को समाज में और राष्ट्र निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता प्रदान की जाती है।
2. **प्रेरणा का स्रोत:** इंजीनियरिंग दिवस युवा इंजीनियरों के लिए एक प्रेरणा बनता है, जो अपने ज्ञान, कौशल, और मेहनत से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित होते हैं।
3. **विकसित भारत के निर्माण में योगदान:** इंजीनियरिंग दिवस का उद्देश्य यह भी है कि इंजीनियरों के महत्व को समझते हुए, भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए उनके योगदान को बढ़ावा देना।
4. **तकनीकी उन्नति का उत्सव:** इस दिन विभिन्न तकनीकी उन्नति और विकास की उपलब्धियों का समारोह मनाया जाता है। इंजीनियरों के आविष्कार और उनके विचार प्रौद्योगिकी और विज्ञान में नवीनतम प्रगति को आकार देते हैं।

इंजीनियरिंग दिवस और भारतीय समाज

भारत में इंजीनियरिंग एक अत्यधिक सम्मानित व्यवसाय है और इंजीनियरिंग दिवस भारतीय समाज में इस व्यवसाय की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। मोक्शगुंडम विश्वेश्वरैया जैसे महान व्यक्तित्वों के योगदान ने भारतीय इंजीनियरिंग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान दिलाई। उनके कार्यों और दृष्टिकोणों ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र में विकास को गति दी। उनके समर्पण और कर्मठता से प्रेरित होकर, भारत में इंजीनियरों ने न केवल आधारभूत ढांचे के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए बल्कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्योगों में भी कई शिखर प्राप्त किए।

निष्कर्ष

इंजीनियरिंग दिवस एक ऐसा दिन है जब हम न केवल इंजीनियरों के योगदान को सम्मानित करते हैं बल्कि इंजीनियरिंग क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों और अवसरों पर भी विचार-विमर्श करते हैं। मोक्शगुंडम विश्वेश्वरैया जैसे महान व्यक्तित्वों की प्रेरणा से हम अपने देश और समाज के निर्माण में इंजीनियरों की भूमिका को समझ सकते हैं। इस दिन को मनाना न केवल हमारे इंजीनियरों के प्रति सम्मान दिखाता है बल्कि यह युवाओं को अपनी कड़ी मेहनत और समर्पण से समाज में बदलाव लाने की प्रेरणा भी देता है। अंततः इंजीनियरिंग दिवस हमें यह सिखाता है कि इंजीनियरिंग का उद्देश्य सिर्फ तकनीकी विकास नहीं बल्कि मानवता की भलाई और समाज के समग्र विकास के लिए भी काम करना आवश्यक है।

– राकेश वढेर
कंप्यूटर इंजीनियर

आज के परिप्रेक्ष्य में
भारतीय ज्ञान परंपरा

भारतीय ज्ञान परंपरा एक अमूल्य धरोहर है जो अपने भीतर अनेक प्रकार के ज्ञान, पद्धतियाँ और दृष्टिकोणों को समाहित किए हुए है। यह परंपरा न केवल भारत के सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन का अंग रही है बल्कि यह सम्पूर्ण विश्व के ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, कला, साहित्य और समाज के विविध पहलुओं को प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण धारा रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार वेदों, उपनिषदों, भगवद गीता, पुराणों, संस्कृत साहित्य और अन्य प्राचीन ग्रंथों में निहित है जो समग्र जीवन को समझने और मानवता के कल्याण के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में न केवल तात्त्विक और धार्मिक दृष्टिकोणों का विस्तार हुआ बल्कि इसका योगदान गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, समाजशास्त्र और अन्य शास्त्रों में भी रहा है। इस परंपरा के सिद्धांतों और दृष्टिकोणों की प्रासंगिकता आज के आधुनिक युग में भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

1. भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व-भारतीय ज्ञान परंपरा का आरंभ प्राचीन वैदिक काल से हुआ था जब हमारे पूर्वजों ने संसार की उत्पत्ति, उसकी संरचना और मानव जीवन के उद्देश्यों पर गहरा विचार-विमर्श किया था। वेदों में निहित ज्ञान केवल धार्मिक अथवा आस्थाओं से जुड़ा हुआ नहीं था बल्कि यह एक समृद्ध बौद्धिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी जुड़ा था। वेदों में परम सत्य की खोज, संसार के स्रोतों का अध्ययन और मानव जीवन के उद्देश्य के बारे में गहनता से चर्चा की गई है।इसके अतिरिक्त, उपनिषदों में ब्रह्म और आत्मा के अद्वितीय संबंध का विश्लेषण किया गया है जो आज भी वेदांत दर्शन के रूप में महत्वपूर्ण है। भारतीय दर्शन ने विश्व के निर्माण, जीवन के उद्देश्य और व्यक्ति के आंतरिक स्वभाव के विषय में गहन विचार प्रस्तुत किया है। उपनिषदों और भगवद गीता में 'आत्मा' और 'ब्रह्म' के अद्वितीय संबंध पर गहरी चर्चा की गई है। भारतीय वेदांत दर्शन, अद्वैत वेदांत और अन्य तात्त्विक धाराएँ हमें जीवन के शाश्वत सत्य की ओर प्रेरित करती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा ने न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से बल्कि मानसिक और बौद्धिक विकास की दिशा में भी समाज को मार्गदर्शन दिया है। विभिन्न आचार्यों और विचारकों ने भारतीय समाज को विभिन्न सिद्धांतों के माध्यम से यह समझाया कि कैसे आत्मा, परमात्मा, और सृष्टि के बीच एक गहरा संबंध है।भारतीय दर्शन ने जीवन की अच्छाई, सच्चाई, शांति और आंतरिक शांति की खोज में सशक्त योगदान दिया। भारतीय समाज में ज्ञान का प्रसार केवल धार्मिक या साधारण शिक्षा तक सीमित नहीं था बल्कि यह समग्र रूप से एक व्यक्ति और समाज की उन्नति की दिशा में भी था।

2. भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान और तर्कशास्त्र-भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण पहलू उसकी वैज्ञानिक दृष्टि और तर्कशास्त्र है। भारतीय गणितज्ञों ने शून्य का अविष्कार किया जो आज की समस्त गणना की पद्धतियों का आधार है। शून्य का आविष्कार भारतीय गणितज्ञों के गहरे बौद्धिक प्रयासों का परिणाम था जिसने गणित और विज्ञान की दुनिया को एक नई दिशा दी। भारतीय गणितज्ञों ने न केवल शून्य की खोज की बल्कि दशमलव प्रणाली, त्रिकोणमिति और बीजगणित के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। आर्यभट, भास्कराचार्य और वराहमिहिर जैसे महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री भारतीय ज्ञान परंपरा के महान स्तंभ रहे हैं जिनके सिद्धांतों ने वैश्विक विज्ञान को प्रभावित किया। भारतीय खगोलशास्त्रज्ञों ने ब्रह्मांड की संरचना, ग्रहों की गति और आकाशीय पिंडों के बारे में गहन चर्चा की। आर्यभट ने पृथ्वी के घूर्णन, ग्रहों के परिवर्तनों, और खगोलशास्त्र के विभिन्न सिद्धांतों को स्थापित किया। भारतीय खगोलशास्त्रियों ने यह प्रमाणित किया कि पृथ्वी गोलाकार है और सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है। उनके द्वारा किए गए खगोलशास्त्रीय शोध आज भी विज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त, भारतीय चिकित्सा पद्धतियाँ जैसे आयुर्वेद भी एक अद्भुत विज्ञान है जिसमें शरीर और मन के सामंजस्य को समझने की कोशिश की गई है। आयुर्वेद में न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दी जाती है बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। आयुर्वेद का उद्देश्य शरीर के पंचतत्त्वों को संतुलित करना है ताकि व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य बेहतर हो सके। आयुर्वेद के सिद्धांत न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को भी महत्व देते हैं। यही कारण है कि यह प्राचीन पद्धति आज भी कई देशों में प्रचलित है और इसकी उपयोगिता लगातार बढ़ रही है।

3. भारतीय दर्शन:एक गहरी आध्यात्मिक दृष्टि-भारतीय दर्शन का एक विशेष पहलू उसकी गहरी आध्यात्मिकता है। भारतीय दर्शन ने जीवन के उद्देश्यों, उसके भौतिक और आत्मिक पहलुओं की जांच की है। भारतीय दर्शन ने न केवल संसार के बाह्य स्वरूप को समझने की कोशिश की बल्कि भीतर की सच्चाई, आत्मा और ब्रह्म के संबंध को भी स्पष्ट किया है। भारतीय दर्शन में कई विभिन्न प्रवृत्तियाँ हैं जैसे कि अद्वैत वेदांत, भक्ति योग, कर्म योग और ज्ञान योग, जिनका उद्देश्य आत्मा की

शुद्धता और परमात्मा से मिलन है। उपनिषदों और भगवद गीता में 'आत्मा' और 'ब्रह्म' के बीच संबंध पर गहन चर्चा की गई है। भगवान श्री कृष्ण ने भगवद गीता में मानव जीवन के उद्देश्य और कर्मों के महत्व को बताया है। उन्होंने कर्म योग और भक्ति योग के माध्यम से जीवन के सच्चे अर्थ को समझाया है। इसी प्रकार, योग दर्शन, जो मुख्य रूप से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य के समन्वय पर आधारित है आज पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। योग और ध्यान की प्राचीन पद्धतियाँ मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी मानी जाती हैं। वर्तमान समय में जब मानसिक तनाव और मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएँ बढ़ रही हैं, तब भारतीय योग और ध्यान की पद्धतियाँ एक समाधान के रूप में सामने आई हैं।भारतीय तात्त्विक परंपरा ने सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, और तप के सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी है। महात्मा गांधी ने भी इन तात्त्विक सिद्धांतों को अपने जीवन का मूलमंत्र माना और भारतीय समाज को अहिंसा और सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

4. भारतीय साहित्य: ज्ञान और संस्कृति का संगम- भारतीय साहित्य ने हमेशा समाज के विविध पहलुओं को उजागर किया है। संस्कृत, प्राकृत, हिंदी, बंगाली और अन्य भाषाओं में रचित साहित्य ने न केवल सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से समाज को समृद्ध किया, बल्कि उसने ज्ञान की बुनियादी अवधारणाओं को भी अभिव्यक्त किया है। महाकाव्य जैसे रामायण और महाभारत, जिनमें नैतिकता, धर्म, युद्ध, समाज और राजनीति के बारे में महत्वपूर्ण संदेश दिए गए हैं, भारतीय ज्ञान परंपरा के मौलिक ग्रंथों के रूप में जाने जाते हैं। महाकाव्य रामायण और महाभारत में धर्म, कर्तव्य, और नैतिकता के सिद्धांतों को प्रस्तुत किया गया है। इन ग्रंथों में न केवल नायक और खलनायक की पहचान की गई है बल्कि जीवन के संघर्षों और निर्णयों के बारे में भी गहन विचार प्रस्तुत किए गए हैं। इसके अलावा, भारतीय नाटक, काव्य, उपन्यास और अन्य साहित्यिक विधाओं में भी समाज की समस्याओं, मानवीय संबंधों और जीवन के सच्चे उद्देश्यों पर महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए गए हैं। साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज में व्यक्तिगत और सामूहिक जागरूकता का विस्तार हुआ है।

5. आधुनिक संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा-आज के आधुनिक युग में जब वैज्ञानिक प्रगति और तकनीकी विकास की गति अत्यधिक बढ़ गई है तब भी भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व बना हुआ है। भारतीय दर्शन, योग, आयुर्वेद और अन्य पारंपरिक पद्धतियाँ आज के वैश्विक संदर्भ में न केवल भारत के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए प्रासंगिक हैं। वर्तमान में जब हम पर्यावरणीय संकट, मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ और सामाजिक असमानताएँ देख रहे हैं तो भारतीय ज्ञान परंपरा की वह गहरी समझ हमें संतुलन और सामंजस्य की दिशा में मार्गदर्शन दे सकती है। आज के युग में, जब भौतिकवाद और उपभोक्तावाद की प्रवृत्तियाँ समाज में तेजी से फैल रही हैं, भारतीय ज्ञान परंपरा हमें आंतरिक शांति, संतुलन और सामूहिक सुख की ओर हमारा मार्गदर्शन करती है। योग और ध्यान, जिनका ऐतिहासिक महत्व है अब विश्वभर में तनाव और मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं के समाधान के रूप में स्वीकारे जा रहे हैं। योग और ध्यान के अभ्यास से न केवल शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार होता है बल्कि मानसिक और आत्मिक शांति भी प्राप्त होती है। आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस युग में भी भारतीय ज्ञान परंपरा के कई पहलू आज के समय में प्रासंगिक हैं। उदाहरण के लिए भारतीय दर्शन में 'अद्वैत' का सिद्धांत जो दुनिया में एकता और समरसता की बात करता है आज के वैश्वीकरण के संदर्भ में और भी अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि भौतिक संसार के विभिन्न रूप और धर्म, जाति, रंग और राष्ट्र की सीमाओं से परे हम सब एक हैं।

6. भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षा-भारतीय शिक्षा परंपरा ने हमेशा ज्ञान के प्रति सम्मान और उसका निहितार्थ समझने पर बल दिया है। प्राचीन भारत में गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से शिष्य अपने गुरु से न केवल शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करता था, बल्कि जीवन जीने की कला, नैतिकता, समाजिक जिम्मेदारियों और आत्म-संवर्धन की प्रक्रिया को भी समझता था। इस प्रकार, भारतीय शिक्षा परंपरा का मुख्य उद्देश्य शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास था। आज के समय में, जहां शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्ति और आर्थिक उन्नति तक सीमित हो गया है, वहां भारतीय शिक्षा पद्धति का समग्र दृष्टिकोण आज भी अत्यधिक महत्वपूर्ण हो सकता है। भारतीय शिक्षा पद्धति का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का मानसिक, शारीरिक और आत्मिक रूप से समग्र विकास करना है। भारतीय शिक्षा परंपरा हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने और उसे बेहतर बनाने की दिशा में हमारा मार्गदर्शन करती है।

7. निष्कर्ष- निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा ने हमेशा मनुष्य के समग्र विकास, संतुलन और एकता की बात की है। यह परंपरा न केवल प्राचीन काल में महत्वपूर्ण थी बल्कि आज भी आधुनिक संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है। भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों और दृष्टिकोणों को अपनाकर हम एक संतुलित, मानसिक रूप से स्वस्थ और समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं। इसलिए, भारतीय ज्ञान परंपरा को समझना और उसके सिद्धांतों को अपने जीवन में लागू करना न केवल हमारे व्यक्तिगत विकास के लिए बल्कि पूरे समाज और विश्व के लिए अनिवार्य है। भारतीय ज्ञान परंपरा ने हमेशा सत्य, अहिंसा, और ब्रह्मचर्य के सिद्धांतों का पालन करने की प्रेरणा दी है जो हमारे जीवन को न केवल समृद्ध बनाएंगे बल्कि हमारे समाज को भी बेहतर बनाने में सहायता करेंगे।

– मनीषा वैद्य
आंकड़ा प्रचालक

पर्यावरण और संपोषी विकास

पर्यावरण और संपोषी विकास, दोनों ऐसे महत्वपूर्ण और आपस में जुड़े हुए विषय हैं जो हमारे जीवन के प्रत्येक पहलु को प्रभावित करते हैं। संपोषी विकास का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण को क्षति पहुंचाए बिना मानवता की वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह एक ऐसी विकास प्रक्रिया है जो प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करते हुए समृद्धि को बढ़ावा देती है। जब हम विकास की बात करते हैं तो हमें यह ध्यान रखना होता है कि यह विकास पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखे और आने वाली पीढ़ियों के लिए भी जीवन की गुणवत्ताओं को सुरक्षित रखे।

पर्यावरण

पर्यावरण शब्द का अर्थ है वह प्राकृतिक परिवेश जिसमें हम रहते हैं। इसमें जल, वायु, मृदा, वनस्पति, जीव-जंतु, जलवायु आदि सभी प्राकृतिक तत्व शामिल हैं। पर्यावरण हमारी जीवनदायिनी है क्योंकि यह हमें सांस लेने के लिए वायु, पीने के लिए जल, खाने के लिए भूमि और अन्य कई संसाधन प्रदान करता है। यदि हम पर्यावरण का सही तरीके से संरक्षण नहीं करेंगे तो हमारे जीवन का अस्तित्व संकट में पड़ सकता है।

संपोषी विकास

संपोषी विकास एक ऐसा विकास मॉडल है जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाता है ताकि पर्यावरणीय संकट से बचा जा सके और भविष्य में भी यह संसाधन उपलब्ध रहें। इसे "आधुनिक विकास के पर्यावरणीय दृष्टिकोण" के रूप में भी समझा जा सकता है। संपोषी विकास के तीन प्रमुख स्तंभ हैं-

1. **आर्थिक विकास:** यह सुनिश्चित करता है कि सभी लोग आर्थिक रूप से समर्थ हों, रोजगार के अवसर हों और संसाधनों का सदुपयोग हो।
2. **सामाजिक समावेशन:** इसमें समाज के सभी वर्गों का समावेश किया जाता है जिससे गरीबी, भेदभाव और अन्य सामाजिक समस्याओं का समाधान किया जा सके।
3. **पर्यावरणीय संरक्षण:** यह सुनिश्चित करता है कि विकास के दौरान प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन न हो और पर्यावरण का संतुलन बना रहे।

पर्यावरणीय संकट

वर्तमान में पर्यावरण संकट एक गंभीर समस्या बन गई है। जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, वनों की अंधाधुंध कटाई, जल संसाधनों की कमी, वायु प्रदूषण, मृदा की अपरदन, जैव विविधता का नुकसान और प्रदूषण का बढ़ता स्तर यह सभी समस्याएं पर्यावरणीय संकट को जन्म देती हैं। इन समस्याओं का समाधान तभी संभव है जब हम संतुलित और संपोषी विकास की दिशा में कदम बढ़ाएं।

संपोषी विकास के सिद्धांत:

1. **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण:** हमें प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करना चाहिए ताकि वे आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उपलब्ध रह सकें। यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी संसाधन अनावश्यक रूप से खत्म न हो जाए।
2. **समानता और समावेशन:** संपोषी विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह सभी वर्गों, विशेष रूप से गरीब और वंचित वर्गों को समावेश करता है। यह सामाजिक और आर्थिक समानता की दिशा में कार्य करता है।
3. **स्वास्थ्य और शिक्षा:** संपोषी विकास में स्वास्थ्य और शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। स्वस्थ समाज और शिक्षित लोग ही पर्यावरण और विकास के महत्व को समझ सकते हैं।
4. **विकसित और विकासशील देशों के बीच सहयोग:** विकासशील देशों को तकनीकी सहायता और आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए ताकि वे संपोषी विकास के उद्देश्य को प्राप्त कर सकें।

भारत में पर्यावरण और संपोषी विकास

भारत में पर्यावरण और संपोषी विकास की अवधारणा समय के साथ विकसित हुई है। भारत में बड़े स्तर पर प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया गया है जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हुए हैं। जैसे-जैसे शहरीकरण और औद्योगिकीकरण बढ़ा वैसे-वैसे प्रदूषण और पर्यावरणीय संकट भी बढ़े।

भारत सरकार की योजनाएं और नीतियाँ:

1. **राष्ट्रीय पर्यावरण नीति 2006:** यह नीति भारत में पर्यावरणीय सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई थी। इसमें जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, जल संसाधन, और प्रदूषण नियंत्रण से संबंधित उपायों को शामिल किया गया है।
2. **स्वच्छ भारत अभियान:** यह अभियान सार्वजनिक स्थानों और जल स्रोतों को स्वच्छ रखने के लिए चलाया गया है। इसके अंतर्गत कूड़ा-कचरा प्रबंधन, खुले में शौच मुक्त समाज और सफाई के महत्व को बढ़ावा दिया गया है।
3. **नमामि गंगे योजना:** गंगा नदी को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए यह योजना बनाई गई है। यह नदी की स्वच्छता और संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।
4. **सौर ऊर्जा का उपयोग:** भारत में सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। यह एक पर्यावरणीय दृष्टि से सही और संपोषी ऊर्जा स्रोत है।

विकास और पर्यावरणीय संतुलन:

विकास और पर्यावरणीय संतुलन के बीच एक सशक्त संबंध है। यदि हम पर्यावरण की अनदेखी करते हुए तेज़ी से विकास करेंगे तो इससे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन होगा, जिससे मानव जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। दूसरी ओर, यदि हम विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के उपायों को लागू करते हैं तो हम सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

निष्कर्ष:

आज के समय में पर्यावरणीय संकट और संपोषी विकास की आवश्यकता अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गई है। पर्यावरण का संरक्षण और विकास के साथ संतुलन बनाए रखना आवश्यक है ताकि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर और स्थिर भविष्य सुनिश्चित कर सकें। इसके लिए हमें अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। साथ ही, सरकारों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों को भी अपनी नीतियों में पर्यावरणीय दृष्टिकोण को प्राथमिकता देनी चाहिए। केवल इसी तरह से हम एक संपोषी और पर्यावरण-संवेदनशील विकास की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं।

– अनम सिद्दिकी
मानव संसाधन सहायक

...पृष्ठ 28 से जारी

भारत सरकार की प्रमुख हिंदी प्रोत्साहन एवं पुरस्कार योजनाएं

(घ) हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण–

हिंदी शब्द संसाधन/ हिंदी टंकण की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले केंद्र सरकार के अराजपत्रित कर्मचारियों को एक वेतन वृद्धि के बराबर 12 महीने की अवधि के लिए वैयक्तिक वेतन दिया जाता है। इसके अतिरिक्त सहायक, अनुवादक, प्रवर श्रेणी लिपिक तथा प्रवर लेखा परीक्षक, जिनके लिए हिंदी टंकण का प्रशिक्षण अनिवार्य नहीं है पर उपयोगी है को अवर श्रेणी लिपिकों की भांति ही उक्त वित्तीय प्रोत्साहन तथा अन्य सुविधाएँ इस संबंध में जारी की गई विभिन्न शर्तों के अधीन दी जाती हैं।

(ङ) हिंदी आशुलिपि–

(i) अराजपत्रित आशुलिपिकों को 70 प्रतिशत या अधिक अंक लेकर हिंदी आशुलिपि की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर 12 महीने के लिए एक वेतन वृद्धि, जो आगामी वेतन वृद्धि में मिला दी जाती है, के बराबर वैयक्तिक वेतन दिया जाता है।

(ii) राजपत्रित आशुलिपिकों को 75 प्रतिशत या अधिक अंक लेकर हिंदी आशुलिपि परीक्षा उत्तीर्ण करने पर वैयक्तिक वेतन दिया जाता है।

जिन आशुलिपिकों (राजपत्रित एव अराजपत्रित दोनों) की मातृभाषा हिंदी नहीं है, उन्हें हिंदी आशुलिपि की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर दो वेतन वृद्धियों के बराबर वैयक्तिक वेतन दिया जाता है। ये वेतन वृद्धियां

भावी वेतन वृद्धियों में मिलाई जाएँगी। ऐसे कर्मचारी पहले वर्ष दो वेतन वृद्धियों के बराबर और दूसरे वर्ष पहली वेतन वृद्धि को मिला दिए जाने पर केवल एक वेतन वृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन प्राप्त कर सकते हैं।

टिप्पणी:

जिस कर्मचारी को सेवाकालीन हिंदी प्रशिक्षण से छूट मिली हुई हो उस कर्मचारी को संबंधित परीक्षा उत्तीर्ण करने पर किसी प्रकार के वित्तीय लाभ/ प्रोत्साहन नहीं मिलेंगे।

2 नकद पुरस्कार

हिंदी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण और हिंदी आशुलिपि की परीक्षाएँ अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करने पर पात्रता के अनुसार निम्नलिखित नकद पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं, जिनकी वर्तमान दरें निम्नानुसार हैं–

पृष्ठ 84 पर जारी.....

उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर: हमारा गोरखपुर

गोरखपुर उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र का प्रमुख शहर है जो राप्ती नदी के किनारे बसा हुआ है। यह शहर लखनऊ से लगभग 272 किलोमीटर पूर्व और नेपाल की सीमा से करीब 120 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गोरखपुर का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व बहुत पुराना है और यह शहर न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। गोरखपुर का नाम महान योगी और संत गुरु गोरक्षनाथ से जुड़ा हुआ है जिनकी कृपा से यह शहर विशेष पहचान प्राप्त कर चुका है। यह शहर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ऐतिहासिक आंदोलनों, महान संतों, साहित्यकारों और कवियों की भूमि है। महावीर तीर्थंकर,करुणावतार गौतम बुद्ध, संत कबीर दास तथा गोरक्षनाथ आदि उल्लेखनीय हैं। गोरखपुर का समृद्ध इतिहास, धार्मिक स्थल, सांस्कृतिक उत्सव और प्राकृतिक सौंदर्य इसे एक विशेष स्थान प्रदान करते हैं।

गोरखपुर का ऐतिहासिक महत्व: गोरखपुर का इतिहास अत्यंत समृद्ध और विविधताओं से भरा हुआ है। यह शहर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख स्थलों में से एक है। यहां कई ऐतिहासिक घटनाएं घटीं और कई महान स्वतंत्रता सेनानियों का जन्म हुआ। गोरखपुर ने अपने ऐतिहासिक योगदान से भारतीय समाज को दिशा और प्रेरणा दी है।

1. **पं. राम प्रसाद बिस्मिल का योगदान:** गोरखपुर की धरती पर जन्मे पं. राम प्रसाद बिस्मिल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता थे। उनका नाम आज भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अमर है। पं. राम प्रसाद बिस्मिल ने अंग्रेजों के खिलाफ कई आंदोलन किए और अपनी शहादत दी। उनका योगदान भारतीय जनमानस में आज भी सम्मानित है। उनका नाम विशेष रूप से "काकोरी कांड" से जुड़ा है, जिसमें उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा दी।

2. **चौरी-चौरा कांड:** गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा कस्बे में 1922 में हुआ चौरी-चौरा कांड भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अहम मोड़ था। इस कांड में एक पुलिस थाने पर हमला किया गया था जिसमें कई पुलिसकर्मी मारे गए थे। इसके बाद महात्मा गांधी ने असहमति की नीति अपनाई और असहमति आंदोलन को स्थगित कर दिया। चौरी-चौरा कांड ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नया मोड़ दिया और यह घटना भारतीय राजनीति में एक ऐतिहासिक क्षण के रूप में मानी जाती है।

3. **फिराक गोरखपुरी:** गोरखपुर के साहित्यिक गौरव का हिस्सा उर्दू के प्रसिद्ध कवि फिराक गोरखपुरी हैं। उनका जन्म गोरखपुर में हुआ था और उन्होंने भारतीय उर्दू साहित्य में अद्वितीय योगदान दिया। फिराक गोरखपुरी का कविता संग्रह "गुलों में रंगीनी" भारतीय साहित्य का अनमोल रत्न है। उनकी कविता, शायरी और ग़ज़लें आज भी साहित्य प्रेमियों के बीच प्रसिद्ध हैं। फिराक गोरखपुरी का योगदान भारतीय साहित्य के लिए अमूल्य है और उनकी रचनाएँ आज भी जीवित हैं।

गोरखपुर का धार्मिक महत्व: गोरखपुर धार्मिक दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यहाँ पर कई प्रमुख मंदिर, गुरुद्वारे और धार्मिक स्थल स्थित हैं जो न केवल भारत से बल्कि विदेशों से भी पर्यटकों और श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं। गोरखपुर का धार्मिक इतिहास बहुत पुराना है और यह शहर संतों, योगियों और भक्तों की भूमि है।

1. **गोरखनाथ मंदिर:** गोरखपुर का सबसे प्रमुख धार्मिक स्थल है गोरखनाथ मंदिर जो गुरु गोरक्षनाथ से जुड़ा हुआ है। गुरु गोरक्षनाथ एक महान योगी और संत थे जिन्होंने योग और ध्यान की शिक्षा दी। गोरखनाथ मंदिर गोरखपुर के केंद्र में स्थित है और यहाँ पर हर दिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। यह मंदिर योग, साधना और ध्यान का एक प्रमुख केंद्र है और यहाँ पर लोग शांति, आंतरिक शुद्धता और आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए आते हैं। इस मंदिर का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व बहुत अधिक है।

2. **विष्णु मंदिर:** गोरखपुर में स्थित विष्णु मंदिर भी एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। भगवान विष्णु को पूरे विश्व का पालनहार माना जाता है और इस मंदिर में भक्तों की विशाल संख्या प्रतिदिन होती है। यह मंदिर अपनी वास्तुकला, धार्मिक माहौल और आध्यात्मिक ऊर्जा के लिए प्रसिद्ध है। यह स्थान भक्तों के लिए एक शांति और ध्यान का केंद्र है।

3. **गीता प्रेस और गीता वाटिका:** गोरखपुर में स्थित गीता प्रेस हिंदू धर्म के सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रंथ भगवद

गीता का प्रचार-प्रसार करने में अहम भूमिका निभाती है। गीता प्रेस ने न केवल भगवद गीता को प्रकाशित किया बल्कि हिंदू धर्म के अन्य धार्मिक ग्रंथों का भी प्रचार किया। गीता प्रेस के साथ ही गीता वाटिका नामक एक सुंदर पार्क भी स्थित है जो भक्तों और पर्यटकों के लिए एक आदर्श स्थल है। यहाँ पर लोग ध्यान और योगाभ्यास करने के लिए आते हैं।

4. सांस्कृतिक धरोहर: गोरखपुर न केवल धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर भी अत्यंत समृद्ध है। इस शहर में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक उत्सव, कला प्रदर्शनों, संगीत और नृत्य कार्यक्रमों का आयोजन होता है, जो इसे और भी विशेष बनाते हैं। गोरखपुर का सांस्कृतिक जीवन बहुत ही जीवंत और विविधताओं से भरा हुआ है।

5. गोरखपुर महोत्सव: गोरखपुर महोत्सव एक वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव है जो जनवरी के महीने में आयोजित किया जाता है। इस महोत्सव का आयोजन उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग, संस्कृति विभाग और गोरखपुर जिला प्रशासन द्वारा किया जाता है। महोत्सव में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएँ, विज्ञान मेला, शतरंज, निबंध लेखन, गायन, वादन, नृत्य और रंगारंग कार्यक्रम होते हैं। इस महोत्सव में भोजपुरी फिल्म उद्योग के प्रमुख कलाकार भी हिस्सा लेते हैं जो स्थानीय और राष्ट्रीय दर्शकों को आकर्षित करते हैं।

6. संगीत और नृत्य कार्यक्रम: गोरखपुर के सांस्कृतिक जीवन में संगीत और नृत्य का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ पर विभिन्न संगीत कार्यक्रम, नृत्य नाटक और कला प्रदर्शन होते हैं जो भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देते हैं। इन कार्यक्रमों में न केवल लोक कला और पारंपरिक नृत्य होते हैं बल्कि आधुनिक नृत्य और संगीत का भी आयोजन किया जाता है। यहाँ के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में स्थानीय कलाकारों के साथ-साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के कलाकार भी भाग लेते हैं।

7. भोजपुरी कला और साहित्य: गोरखपुर भोजपुरी भाषा और साहित्य का एक प्रमुख केंद्र है। भोजपुरी साहित्यकारों ने भोजपुरी भाषा में साहित्य रचनाओं का योगदान दिया है। भोजपुरी के गीत, ग़ज़लें, कविताएँ और नाटक यहाँ की संस्कृति का अहम हिस्सा हैं। भोजपुरी संगीत और नृत्य भी गोरखपुर के सांस्कृतिक जीवन का हिस्सा हैं और यहाँ के लोग इनकी विशेष प्रशंसा करते हैं।

गोरखपुर के दर्शनीय स्थल:

गोरखपुर में कई ऐतिहासिक, धार्मिक और प्राकृतिक स्थल हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इन स्थलों की सुंदरता और महत्व इसे एक आदर्श पर्यटन स्थल बनाते हैं।

1. रामगढ़ ताल: गोरखपुर का रामगढ़ ताल एक प्रमुख जलाशय है और यह शहर के पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ पर नौका विहार की सुविधा उपलब्ध है और यह स्थल पर्यटकों के लिए एक शांतिपूर्ण वातावरण प्रदान करता है। इसके किनारे पर स्थित पार्क और हरियाली इसे और भी आकर्षक बनाते हैं।

2. पार्क और उद्यान: गोरखपुर में कई सुंदर और मनोरंजक पार्क हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। जैसे कि इंदिरा बाल विहार, प्रेमचंद पार्क, विनोद वन, कुसुम्ही जंगल, पं. दीन दयाल उपाध्याय पार्क आदि। ये सभी पार्क बच्चों और परिवारों के लिए आदर्श स्थल हैं। इन पार्कों में हरियाली और प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ बच्चों के खेलने के लिए खेल उपकरण भी उपलब्ध हैं।

3. प्राचीन मंदिर और स्मारक: गोरखपुर में कई ऐतिहासिक और धार्मिक मंदिर स्थित हैं जो यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाते हैं। आरोग्य मंदिर, इमामबाड़ा, बौद्ध संग्रहालय, नक्षत्रशाला और कई अन्य मंदिर इस शहर की ऐतिहासिकता को उजागर करते हैं। इन स्थलों पर हर वर्ष बड़ी संख्या में श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं।

गोरखपुर में परिवहन:

गोरखपुर में अच्छा परिवहन ढांचा है जो इसे भारत के अन्य प्रमुख शहरों से जोड़ता है। यहाँ का रेलवे स्टेशन और हवाई अड्डा प्रमुख यात्री केंद्र हैं।

1. गोरखपुर रेलवे स्टेशन: गोरखपुर रेलवे स्टेशन भारत के प्रमुख रेलवे केंद्रों में से एक है। यह पूर्वोत्तर रेलवे के अंतर्गत आता है और यहाँ से विभिन्न शहरों के लिए ट्रेन सेवाएं उपलब्ध हैं। गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर आने-जाने वाली ट्रेनों की संख्या अधिक है जिससे यह शहर भारत के विभिन्न हिस्सों से जुड़ा हुआ है।

2. गोरखपुर हवाई अड्डा: गोरखपुर में स्थित हवाई अड्डा भी एक महत्वपूर्ण परिवहन केंद्र है। यह शहर विभिन्न प्रमुख शहरों से हवाई मार्ग से जुड़ा हुआ है। हवाई अड्डे से विभिन्न शहरों के लिए उड़ानें उपलब्ध हैं जो यात्री यातायात को सुविधाजनक बनाती हैं।

उपसंहार:

गोरखपुर न केवल धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि यह सांस्कृतिक, शैक्षिक, और प्राकृतिक दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण शहर है। यहाँ के धार्मिक स्थल, ऐतिहासिक स्मारक, सांस्कृतिक उत्सव और प्राकृतिक सौंदर्य इसे एक आदर्श पर्यटन स्थल बनाते हैं। गोरखपुर की भूमि स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों, कवियों, लेखकों और महान संतों की कर्मभूमि रही है जिसने इसे भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। यहाँ का हर कोना अपनी एक अलग कहानी प्रस्तुत करता है जो इसे अन्य शहरों से अलग और विशेष बनाता है।

– अमरदीप गिरि

बहुउद्देशीय सहायक

कोंकण की यात्रा: एक अद्‌भुत अनुभव

भारत का कोंकण क्षेत्र न केवल प्राकृतिक सौंदर्य से समृद्ध है बल्कि यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर और आध्यात्मिकता भी इसे एक विशिष्ट स्थान प्रदान करती हैं। यह क्षेत्र पश्चिमी घाट की सुरम्य पहाड़ियों, हरे-भरे खेतों, और विस्तृत समुद्र तटों से घिरा हुआ है। कोंकण की यात्रा, यह केवल एक पर्यटन यात्रा नहीं बल्कि एक आत्मीयता और आत्म-शांति का अनुभव है। यदि आप प्रकृति प्रेमी हैं, सांस्कृतिक विविधता में रुचि रखते हैं और अध्यात्मिक शांति की तलाश में हैं तो कोंकण एक आदर्श स्थल है।

कोंकण का प्राकृतिक सौंदर्य

कोंकण, प्रकृति से भरपूर एक अद्भुत स्थल है। यहाँ का हर कोना हरे-भरे जंगलों, खेतों में लहलहाती फसल और ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों से घिरा हुआ है। समुंदर के किनारे, ठंडी हवाएँ, और हरियाली से सजे दृश्य एक अद्भुत अहसास दिलाते हैं। कोंकण की यात्रा का पहला और सबसे आकर्षक पहलू इसका प्राकृतिक सौंदर्य है। यहाँ के समुद्र तटों पर सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य अत्यंत मनमोहक होता है। सूरज की किरणों से ओझल होते वक्त समुद्र की लहरों में एक विशिष्ट चमक होती है जो आपको अपने अस्तित्व से जुड़ने का अहसास कराती है।

कोंकण में कई प्रमुख समुद्र तट हैं जिनमें से कुछ प्रसिद्ध तटों पर कर्नाटक और महाराष्ट्र की सीमा से जुड़े तट भी आते हैं। इन तटों पर आपको साफ नीला पानी, सफेद रेत, और समुंदर की हल्की-सी लहरें मिलती हैं जो इस क्षेत्र को पर्यटकों के लिए एक आदर्श स्थल बनाती हैं। इसके अलावा, कोंकण क्षेत्र में मौजूद नदियाँ जैसे कि सावित्री और वशिष्टि कोंकण की सशक्तता को और भी बढ़ाती हैं। यहाँ की नदियाँ, इनकी शांत धाराएँ, और आसपास के जंगल आपको एक सुखद अनुभव प्रदान करते हैं।

संस्कृति और परंपरा का समागम

कोंकण की यात्रा केवल प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेने तक सीमित नहीं रहती। यह भूमि अपनी सांस्कृतिक विविधता और पारंपरिक त्योहारों के लिए भी प्रसिद्ध है। यहाँ की संस्कृति समृद्ध, प्राचीन और विविधतापूर्ण है। कोंकण में महाराष्ट्र, कर्नाटक और गोवा की सांस्कृतिक विशेषताएँ मिलती हैं।

त्योहारों का आनंद

कोंकण के पारंपरिक त्योहार यहाँ की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं। यहाँ का माहौल हर त्योहार के दौरान एक खास आनंद प्रदान करता है। होली, नारखी पूर्णिमा, दशावतार नाटक, और शिमगा जैसे त्योहार कोंकण के हृदय में बसे हुए हैं। कोंकण में होली के दौरान विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है जिसमें रंगों के साथ-साथ पारंपरिक नृत्य और गीतों का भी आयोजन होता है।

नारखी पूर्णिमा का पर्व भी कोंकण में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन कोकण के तटीय इलाके में लोग समुद्र तटों पर पूजा अर्चना करते हैं और समुद्र के किनारे दीप जलाकर अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति की कामना करते हैं। इसी तरह, कोंकण का दशावतार नाटक एक विशेष सांस्कृतिक धरोहर है जो यहाँ की सांस्कृतिक समृद्धि को उजागर करता है।

धार्मिक स्थल और आध्यात्मिक अनुभव

कोंकण का धार्मिक महत्त्व भी अत्यधिक है। यहाँ के मंदिरों, आश्रमों, और गुफाओं में जाकर व्यक्ति आध्यात्मिक शांति का अनुभव कर सकता है। कोंकण के धार्मिक स्थलों में स्थित शिव मंदिर, गणेश मंदिर और अन्य देवस्थल यात्रा करने वाले भक्तों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र होते हैं। कोंकण के प्रसिद्ध मंदिरों में प्राचीन "परशुराम" सबसे प्रसिद्ध मंदिर है।

इसके अलावा, कोंकण के समुंदर तटों पर स्थित मंदिरों का दर्शन करते हुए व्यक्ति आध्यात्मिक शांति और सुकून का अनुभव करता है। यहाँ की वास्तुकला और प्राचीन धार्मिक परंपराएँ यात्रियों को आकर्षित करती हैं। कोंकण में स्थित किलों और पर्वतों के ऊपर बने छोटे-छोटे मंदिरों में जाकर व्यक्ति को एक अविस्मरणीय अनुभव होता है जो जीवनभर के लिए स्मरणीय बन जाता है।

कोंकण के प्रसिद्ध स्थल

कोंकण की यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा यहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थलों का दौरा करना है। यहाँ कई ऐतिहासिक, धार्मिक, और प्राकृतिक स्थल हैं जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

1. **अलीबाग:**
अलीबाग कोंकण क्षेत्र का एक प्रसिद्ध समुद्र तट है। यह मुंबई से लगभग 100 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और यहाँ का समुद्र तट विशेष रूप से अपने शांत वातावरण और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है।

2. **गणपति पुळे:**
यह कोंकण का एक प्रमुख धार्मिक स्थल है जो भगवान गणेश के प्रसिद्ध मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के मंदिर में भगवान गणेश की मूर्ति के दर्शन करने के लिए भक्त दूर-दूर से आते हैं।

3. **सिंधु दुर्ग और मालवण:**
यहाँ के समुद्र तट और मंदिर विशेष रूप से दर्शनीय हैं।

4. **चिपलून:**
चिपलून कोंकण के एक अन्य महत्वपूर्ण स्थल है जो अपनी प्रकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। यहाँ के पहाड़ी इलाकों और शांत जलप्रपातों को देखना एक अविस्मरणीय अनुभव होता है।

5. **रत्नागिरी:**
रत्नागिरी, कोंकण क्षेत्र का एक प्रमुख शहर है जो अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ का किलों, समुद्र तट, और प्रसिद्ध प्राचीन मालेश्वर मंदिर विशेष रूप से दर्शनीय हैं।

कोंकण की यात्रा का सांस्कृतिक दृष्टिकोण

कोंकण में यात्रा करना, केवल एक पर्यटक के रूप में यात्रा करना नहीं होता बल्कि यह एक सांस्कृतिक यात्रा होती है। यहाँ के लोग अपनी पारंपरिक भाषा, भोजन, और रीति-रिवाजों को जीवित रखते हैं। कोंकण में पारंपरिक कोंकणी खाना विशेष रूप से लोकप्रिय है जिसमें समुद्री भोजन, मसालेदार करी, और ताजे फल शामिल होते हैं।

निष्कर्ष: कोंकण की यात्रा एक अविस्मरणीय अनुभव है जो आपको प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विविधता और आध्यात्मिक शांति का अद्वितीय मिश्रण प्रदान करती है। यहाँ की यात्रा न केवल शांति का अहसास कराती है बल्कि यह आपके जीवन को एक नई दिशा भी देती है। कोंकण एक ऐसी जगह है जहाँ हर व्यक्ति को एक बार जरूर यात्रा करनी चाहिए ताकि वह इस अद्भुत भूमि के साथ अपने आत्मीय संबंध को महसूस कर सके।

– संतोष बलीराम जुवले
बहुउद्देशीय सहायक

राजभाषा अधिनियम-1963 का संक्षिप्त परिचय

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(3) के अनुसार भारतीय संसद द्वारा राजभाषा अधिनियम 1963 पारित किया गया। इसमें कुल 9 धाराएं और 11 उप धाराएं हैं। इस अधिनियम के तहत संविधान के प्रारम्भ से 15 वर्षो की अवधि तक हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयक्त होती रहेगी। राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के तहत निम्नलिखित दस्तावेज हिंदी-अंग्रेजी में जारी करने आवश्यक है तथा नियम-6 इन दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले की जिम्मेदारी है कि दोनों भाषाओं में जारी किए जाएं।

आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्ति, संसद के किसी सदन के समक्ष रखे गए प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन, संविदा, करार, लाइसेंस अनुज्ञा पत्र(परमिट) सूचनाएं, निविदा प्रपत्र तथा अन्य कागजात।

रेखाचित्र और कला

रेखाचित्र, कला के सबसे प्रारंभिक रूपों में से एक है जो कला की उत्पत्ति से जुड़ा हुआ है। इसकी परिभाषा व्यापक और लचीली है जो इसे कला के विभिन्न क्षेत्रों में लागू होने योग्य बनाती है। रेखाचित्र का इतिहास बहुत पुराना है और यह कला की एक बुनियादी विधा के रूप में विकसित हुआ है। इसे कला का प्रारंभिक रूप कहा जा सकता है क्योंकि किसी भी कला रूप की शुरुआत चित्रित रेखाओं से ही होती है। प्रारंभिक मानव सभ्यताओं ने गुफाओं की दीवारों पर चित्रित रेखाओं के माध्यम से अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त किया था जो आज भी जीवित उदाहरण के रूप में पाए जाते हैं।

रेखाचित्र की परिभाषा और स्वरूप को समझने के लिए यह जानना जरूरी है कि यह किसी चित्र का एक रूप है जिसे मुख्य रूप से पेंसिल, चारकोल, या अन्य रचनात्मक माध्यमों से बनाया जाता है। रेखाचित्र में चित्रकार विभिन्न रेखाओं, शेडिंग और चित्रण की विभिन्न तकनीकों का उपयोग करते हैं ताकि दृश्यता और गहराई उत्पन्न हो सके। यह कला विधा, वास्तविकता या कल्पना के रूप में किसी भी दृश्य को प्रस्तुत करने का एक साधन बन सकती है और इसे किसी अन्य कला रूप की तुलना में सरलता से बनाया जा सकता है।

रेखाचित्र का इतिहास लगभग हर संस्कृति में पाया जाता है। मानव सभ्यता के आरंभिक दिनों में जब लोग शब्दों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाते थे तब वे चित्रों के माध्यम से अपने विचारों, अनुभवों और भावनाओं को साझा करते थे। प्राचीन गुफाओं में पाए गए चित्रित चित्रों ने यह सिद्ध कर दिया कि रेखाचित्र कला का प्रारंभिक रूप था जिसका उपयोग लोग अपने समाज, जीवन, और घटनाओं को दर्शाने के लिए करते थे।

मध्यकालीन युग और रेखाचित्र

मध्यकालीन युग में भी रेखाचित्र का उपयोग धार्मिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के रूप में किया गया। यूरोपीय कला में रेखाचित्रों का एक महत्वपूर्ण स्थान था जहां कलाकार अपनी कृतियों के प्रारंभिक रेखाओं और डिजाइनों को दिखाने के लिए रेखाचित्र का उपयोग करते थे। इस समय, रेखाचित्र को कला का एक आवश्यक और महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता था क्योंकि यह चित्रकार के विचारों और दृष्टिकोण को आकार देने का एक प्रभावी तरीका था।

रेखाचित्र के प्रकार

रेखाचित्र के कई प्रकार होते हैं और इन्हें विभिन्न माध्यमों और उद्देश्यों के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। कुछ प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं:

1. **फैशन स्केचिंग**:
   फैशन डिजाइनरों द्वारा रेखाचित्र का उपयोग उनके डिजाइनों को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है। फैशन स्केचिंग में रेखाओं के माध्यम से वस्त्रों, रंगों और डिजाइनों को चित्रित किया जाता है ताकि एक नए संग्रह का दृश्य प्रभाव उत्पन्न हो सके।
2. **औद्योगिक स्केचिंग**:
   औद्योगिक डिजाइन में रेखाचित्र का उपयोग उत्पादों के प्रारंभिक डिजाइनों, संरचनाओं और कार्यात्मकताओं को दर्शाने के लिए किया जाता है। यह रेखाचित्र विभिन्न इंजीनियरिंग और निर्माण कार्यों में सहायक होता है क्योंकि यह किसी वस्तु की रूपरेखा और कार्यप्रणाली को सरल और स्पष्ट रूप में प्रदर्शित करता है।
3. **यात्रा स्केचिंग**:
   यात्रा स्केचिंग में रेखाचित्र का उपयोग किसी विशेष स्थान या दृश्य को दस्तावेजी बनाने के लिए किया जाता है। यात्रा के दौरान चित्रकार अपने परिवेश, स्थलों, और अन्य दृश्य प्रभावों को रेखाचित्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह यात्रा स्केच किसी विशेष स्थान की संस्कृति और जीवनशैली को समझने का एक अद्भुत तरीका हो सकता है।

4. **किचन स्केचिंग**:
   किचन या दैनिक जीवन के दृश्य चित्रित करने के लिए रेखाचित्र का उपयोग किया जाता है। रेखाचित्र के माध्यम से किसी भी व्यक्ति, वस्तु या दृश्य को सरल रूप से दर्शाया जा सकता है। रेखाचित्र का उद्देश्य केवल चित्रण ही नहीं बल्कि यह किसी विचार या संवेदना को व्यक्त करने का एक उपकरण भी है।

रेखाचित्र की रचनात्मक प्रक्रिया

रेखाचित्र बनाने की प्रक्रिया में कई चरण होते हैं जो चित्रकार की कला और समझ पर निर्भर करते हैं। रेखाचित्र की शुरुआत साधारण आकार या आकृति से होती है और धीरे-धीरे चित्रकार विभिन्न रेखाओं और शेडिंग तकनीकों का उपयोग करके इसे अधिक वास्तविक और जटिल बनाता है। यह प्रक्रिया अत्यधिक रचनात्मक होती है जिसमें चित्रकार को अपनी रचनात्मकता को उकेरने का पूरा अवसर मिलता है।

1. **रूपरेखा तैयार करना**:
   रेखाचित्र की शुरुआत सबसे पहले रूपरेखा से होती है जिसमें चित्रकार आकृतियों और डिजाइनों को हलके दबाव से बनाता है। इस प्रारंभिक चरण में रेखाओं को बहुत सटीक नहीं किया जाता ताकि आवश्यकतानुसार परिवर्तनों की संभावना बनी रहे।
2. **विस्तार और शेडिंग**:
   रूपरेखा तैयार हो जाने के बाद, चित्रकार शेडिंग और विवरण जोड़ता है ताकि चित्र को अधिक गहराई और वास्तविकता दी जा सके। शेडिंग की तकनीक को समझना और उसका प्रभावी उपयोग रेखाचित्र की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है।
3. **सभी तत्वों को जोड़ना**:
   अंतिम चरण में चित्रकार विभिन्न तत्वों को जोड़ता है जैसे कि प्रकाश और छाया का सही उपयोग ताकि चित्र में संतुलन और संरचना हो। यह चरण रेखाचित्र को एक जीवंत और परिष्कृत रूप देता है।

रेखाचित्र का कला में योगदान

रेखाचित्र कला में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह न केवल अन्य कला रूपों को प्रारंभिक डिजाइनों और विचारों की रूपरेखा प्रदान करता है बल्कि यह किसी कला कृति के आधारभूत तत्वों को भी उकेरता है। चित्रकला और मूर्तिकला जैसे अन्य कला रूपों में रेखाचित्र का उपयोग इन कृतियों की योजना और डिजाइन के रूप में किया जाता है। रेखाचित्र के माध्यम से, कलाकार अपनी कृतियों के प्रारंभिक विचारों को उकेर सकते हैं और उन्हें आगे बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

इसके अलावा, रेखाचित्र एक शक्तिशाली माध्यम है जिसके द्वारा कलाकार अपनी व्यक्तिगत भावनाओं, विचारों और दृष्टिकोणों को व्यक्त कर सकते हैं। यह कला रूप विभिन्न प्रकार के विचारों और संवेदनाओं को सहजता से प्रकट करने का एक प्रभावी तरीका है।

समकालीन रेखाचित्र कला

समकालीन रेखाचित्र कला में कई नई शैलियों और तकनीकों का विकास हुआ है। डिजिटल कला और ग्राफिक्स ने रेखाचित्र की पारंपरिक शैली में नए आयाम जोड़े हैं। अब रेखाचित्र को

केवल पारंपरिक कलात्मक माध्यमों में ही नहीं बल्कि कंप्यूटर और अन्य डिजिटल उपकरणों के माध्यम से भी बनाया जा सकता है। इससे रेखाचित्र के निर्माण और प्रयोग के क्षेत्र में एक नई दिशा प्राप्त हुई है और कलाकार अपनी रचनाओं को अधिक विस्तृत और विविध रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

निष्कर्ष

रेखाचित्र कला का एक अत्यंत महत्वपूर्ण रूप है जो कला की शुरुआत से ही मानव अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण माध्यम रहा है। यह किसी भी दृश्य, विचार, या संवेदना को सरल और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रभावी तरीका है। रेखाचित्र कला के विभिन्न प्रकार और उनकी तकनीकों ने कला के अन्य रूपों के विकास में योगदान दिया है और आज भी यह एक प्रमुख और प्रभावी कला रूप के रूप में मौजूद है। कला की दुनिया में रेखाचित्र की भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता क्योंकि यह न केवल कला के मौलिक रूप को प्रस्तुत करता है बल्कि यह किसी भी रचनात्मक कार्य की नींव भी है।

– अतिश अनिल जाधव
बहुउद्देशीय सहायक

कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले कतिपय हिंदी-अंग्रेजी वाक्य

कोई भी अभियोजन स्वीकृति का मामला तीन महीने से अधिक समय से लंबित नहीं है।
No Prosecution Sanction case has been pending for more than three months.

निगम अपने कर्मचारियों और अधिकारियों के लिए लोक शिकायतों पर कार्यशाला और सेमिनार आयोजित करता है।
The corporation conducts workshops and seminars on Public Grievances for its officers & staff.

ये सभी बड़ी शास्ति की कार्यवाही थी।
All these were major penalty proceedings.

सभी तिमाही निलंबन समीक्षा बैठक समय पर आयोजित की गई हैं।
All the quarterly suspension review meetings were held on time.

वर्ष के दौरान, 30 अनुशासनात्मक कार्यवाहियों को अंतिम रूप दिया गया।
30 Disciplinary Proceedings were finalized during the year.

इन गतिविधियों मे करीब 199 छात्रों ने भाग लिया।
About 199 students participated in these activities.

इंटरनेट आधारित पोर्टल्स पर ऑनलाइन।
Online internet-based portals.

दावे का निपटान होने के पश्चात भी राशि का,सदस्य के बैंक खाते में न जमा होना।
Claim settled but amount not credited in member's bank account.

प्रदर्शन मूल्यांकन में,शिकायतों के निपटान करने की गुणवत्ता भी काफी महत्व रखती है।
Quality of grievance handling also counts substantially towards performance appraisal.

उन्होंने इस बात पर बल दिया कि प्रस्तावित श्रम संहिताऐं निरीक्षक की शक्तियों से कोई समझौता नहीं करती।
He emphasized that the proposed labour codes did not compromise the powers of the inspector.

उनके सुझावों को कार्यालय द्वारा नोट किया गया और तदनुसार परिवर्तनों के प्रारूप में शामिल किया गया।
The suggestion was noted by the office and accordingly changes were incorporated in the form.

कार्य जगत से हिंसा और उत्पीड़न के उन्मूलन से संबंधित संकल्प पर अनुवर्ती कार्रवाई।
Follow-up to the resolution concerning the elimination of violence and harassment in the world of work.

इन दो परिस्थितियों के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए मातृत्व संरक्षण अनिवार्य हो जाता है।
Maternity protection then becomes essential to balance the two aspects.

वृद्ध कामगारों का नियोजन तथा अधिक लंबा कार्य जीवन।
Employment of older workers and longer working life.

प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए सामग्री विकास।
Content development for training programmes.

प्रौढ़ समाज में नौकरी के नए अवसर- दीर्घावधि देखरेख कार्य के भविष्य के लिए।
New job opportunities in ageing societies - for the future of long-term care work.

इसका 997 रोजगार कार्यालयों का नेटवर्क है।
It has a network of 997 Employment Exchanges.

प्रशिक्षण के लिए विकास समन्वय।
Coordination development for training.

सतत सामाजिक सुरक्षा प्रणाली हेतु गुणवत्ता नियोजन को बढ़ावा देना।
Promoting quality employment for a sustainable social security system.

हमारे कार्यबल के कौशल विन्यासों में उपयुक्त रूप से निवेश करके इन पर ध्यान दिया जा सकता है।
These can be addressed by suitably investing in the skills sets of our workforce.

सभी स्कीमों की पूरी तरह से समीक्षा की गई।
All the schemes were reviewed thoroughly.

इस पोर्टल के माध्यम से गैर-कर प्राप्तियां खाते में ली जा रही हैं।
The non-tax receipts are being taken into account through this portal.

अनुदानग्राही संस्थाओं को अनुदान सहायता का भुगतान।
Payment of Grants-in-aid to Grantee Institutions.

चिकित्सा प्रतिपूर्ति बिलों का भुगतान।
Payment of Medical Reimbursement Bills.

निगम के स्टाफ को दीर्घावधि और अल्पावधि अग्रिमों का भुगतान।
Payment of Long term and short-term advances to the staff of the Corporation.

राष्ट्रीय रोजगार नीति तैयार करना।
Formulation of National Employment Policy.

– संपादक मण्डल

...पृष्ठ 84 से जारी

भारत सरकार की प्रमुख हिंदी प्रोत्साहन एवं पुरस्कार योजनाएं

(1) प्रबोध

1.	70 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	1600/-
2.	60 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	800/-
3.	55 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	400/-

(2) प्रवीण

1.	70 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	1800/-
2.	60 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	1200/-
3.	55 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	600/-

(3) प्राज्ञ

1.	70 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	2400/-
2.	60 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	1600/-
3.	55 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	800/-

(4) हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण

1.	97 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	2400/-
2.	95 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 97 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	1600/-
3.	90 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 95 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	800/-

(5) हिंदी आशुलिपि

1.	95 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	2400/-
2.	92 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 95 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	1600/-
3.	88 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 92 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	800/-

(6) निजी प्रयत्नों से हिंदी शिक्षण योजना की हिंदीभाषा, हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने पर एकमुश्त पुरस्कार

1.	हिंदी शिक्षण योजना की प्रबोध परीक्षा	1600/-
2.	हिंदी शिक्षण योजना की प्रवीण परीक्षा	1500/-
3.	हिंदी शिक्षण योजना की प्राज्ञ परीक्षा	2400/-
4.	हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी शब्द संसाधन/ हिंदी टंकण परीक्षा	1600/-
5.	हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी आशुलिपि परीक्षा	3000/-

टिप्पणी:

1. जिन कर्मचारियों को हिंदी के सेवाकालीन प्रशिक्षण से छूट प्राप्त है उन्हें संबंधित स्तर की हिंदी परीक्षा उत्तीर्ण करने पर नकद एवं एकमुश्त पुरस्कार देय नहीं होंगे।
2. एकमुश्त पुरस्कार प्रचालन कर्मचारियों के अतिरिक्त केवल उन्हीं कर्मचारियों को दिया जाएगा जो ऐसे स्थानों पर तैनात हैं जहाँ हिंदी शिक्षण योजना के प्रशिक्षण केंद्र नहीं हैं अथवा जहाँ संबंधित पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं है।
3. जो प्रशिक्षार्थी निजी प्रयत्नों से हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी भाषा, हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि परीक्षाएँ उत्तीर्ण करते हैं उनको एक मुश्त पुरस्कार के अलावा नकद पुरस्कार प्रदान करते समय निर्धारित किए गए प्रतिशत से पाँच प्रतिशत अंक कम प्राप्त करने पर भी नकद पुरस्कार राशि प्रदान की जाएगी।

(2) हिंदी डिक्टेशन पुरस्कार।

(3) मूल हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन पुरस्कार योजना।

(4) राजभाषा गौरव पुरस्कार-

राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मौलिक रूप से हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने हेतु प्रत्येक वर्ष 09 पुरस्कार गृह मंत्रालय द्वारा प्रदान किया जाता है। इस योजना के तहत प्रथम पुरस्कार की राशि 2 लाख रुपए निर्धारित है।

(5) राजभाषा कीर्ति पुरस्कार-

यह पुरस्कार राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु विभागों/ बैंकों और उपक्रमों आदि को प्रदान किया जाता है। इस योजना के तहत विभागों की हिंदी गृह पत्रिकाओं को भी पुरस्कृत किया जाता है। .

(6) पत्रिका में प्रकाशित लेखों आदि के लिए पुरस्कार:

विभागों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं एवं पुस्तिकाओं में प्रकाशित लेखों, निबंध, कहानी एवं रचनाओं के लिए नकद पुरस्कार राशि प्रदान करने के प्रावधान हैं।

(7) रेल यात्रा वृत्तांतों पर पुरस्कार-

आम लोगों और रेल कर्मियों के रेल यात्राओं संबंधी अनुभव के आधार पर प्रत्येक कलेंडर वर्ष में पाए गए सर्वोत्तम यात्रा वृत्तांत के लिए रेलवे बोर्ड द्वारा नकद पुरस्कार राशि प्रदान जाती है।

(8) रेलवे बोर्ड की मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना।

(9) रेलवे बोर्ड की लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना।

(10)रेलवे बोर्ड की प्रेमचन्द पुरस्कार योजना।

-संपादक मण्डल/राजभाषा विभाग

जो व्यक्ति अपने जीवन में जितने अधिक अनुभव प्राप्त करता है वह उतना ही समझदार हो जाता है।

नीति-वचन

भारत के नीतिशास्त्रों में बहुत महत्वपूर्ण उपदेश दिए गए हैं जो आज भी हमारे जीवन में प्रासंगिक हैं। इन उपदेशों में जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझाया गया है जैसे कि सत्य, ज्ञान, पुण्य, और दुष्ट कर्मों के परिणाम। इन उपदेशों से हमें न केवल नैतिकता और धर्म का पालन करने की प्रेरणा मिलती है बल्कि यह भी समझ में आता है कि असत्य, अज्ञान, और बुरे कर्मों के परिणाम किस तरह से हमारे जीवन को नष्ट कर सकते हैं। कुछ निम्नलिखित वाक्य द्रष्टव्य हैं जो मानव जीवन के मूलभूत सिद्धांतों को दर्शाते हैं-

- धर्म में अस्था न रखने वाले और सज्जन या ज्ञानी लोगों का मजाक उड़ाने वाले लोगों का विनाश जल्दी ही हो जाता है।
- झूठ बोलना या झूठ का साथ देना एक ऐसा अज्ञान है जिसमें डूबे हुए लोग कभी भी सच्चे ज्ञान या सफलता को नहीं पा सकते हैं।
- धरती पर अच्छा ज्ञान या शिक्षा ही स्वर्ग है और बुरी आदतें या अज्ञान ही नरक है।
- मोह या लालच से मनुष्य को मृत्यु और सत्य से लंबी आयु और सुखी जीवन मिलता है।
- जिस काम को करने से पुण्य की प्राप्ति हो या दूसरों का भला हो उसे करने में देर नहीं करनी चाहिए। जिस पल वे काम करने का विचार मन में आए, उसी पल उसे शुरू कर देना चाहिए।
- पुण्य कर्म जरूर करना चाहिए लेकिन उनका प्रदर्शन बिल्कुल भी न करें। जो मनुष्य लोगों के बीच प्रशंसा पाने के लिए या प्रदर्शन के उद्देश्य से पुण्य कर्म करता है उसे उसका शुभ फल कभी नहीं मिलता है।
- सभी लोगों के साथ एक समान व्यवहार करने वाला और दूसरे के प्रति मन में दया और प्रेम की भावना रखने वाला मनुष्य जीवन में सभी सुख पाता है।
- अपने मन और इन्द्रियों को वश में रखने वाले मनुष्य को जीवन में किसी भी तरह के कष्ट का सामना नहीं करना पड़ता है। ऐसे मनुष्य के मन में दूसरों का धन देखकर भी जलन जैसी भावनाएं नहीं आती हैं।
- धर्म का पालन करने वाले व्यक्ति के लिए अस्था अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। जब किसी व्यक्ति की आस्था धर्म से हट जाती है तो वह न केवल अपने जीवन के उद्देश्य से भटकता है बल्कि वह समाज और परिवार में भी अव्यवस्था का कारण बनता है।
- धर्म में आस्था रखने वाले व्यक्ति का मार्गदर्शन सज्जन और ज्ञानी लोग करते हैं क्योंकि वे जीवन के सर्वोत्तम मार्ग को समझते हैं और समाज की भलाई के लिए काम करते हैं। लेकिन यदि कोई व्यक्ति ऐसे सज्जन या ज्ञानी लोगों का मजाक उड़ाता है तो वह अपने पथ से भटक जाता है और उसका विनाश निश्चित हो जाता है। ऐसे लोग अंततः अपने कर्मों के फल को भुगतते हैं जो उन्हें दुख और नष्ट होने के मार्ग पर ले जाते हैं।
- झूठ बोलना और झूठ का साथ देना एक गंभीर अपराध है जो किसी भी व्यक्ति के जीवन को नष्ट कर सकता है। जब कोई व्यक्ति झूठ बोलता है तो वह न केवल दूसरों को धोखा देता है बल्कि अपने आत्मविश्वास और आत्मसम्मान को भी नष्ट करता है।
- झूठ के कारण व्यक्ति का मानसिक विकास रुक जाता है क्योंकि वह हमेशा असत्य के जाल में फंसा रहता है। झूठ बोलने से वह अपने आत्मिक विकास में प्रगति नहीं कर पाता और न ही अपने कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकता है।
- ज्ञान और शिक्षा मानव के जीवन की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। अच्छा ज्ञान या शिक्षा वही स्वर्ग है जिससे व्यक्ति का मानसिक और आत्मिक विकास होता है। सही ज्ञान से व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्य को समझ सकता है और अपनी जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से निभा सकता है।
- ज्ञान ही वह मार्ग है जो जीवन को सही दिशा देता है। व्यक्ति को हमेशा ज्ञान की प्राप्ति के प्रयास करने चाहिए ताकि वह अपने जीवन में शांति और सुख पा सके।
- सत्य के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति न केवल अपने लिए बल्कि समाज के लिए भी एक आदर्श बनता है।
- पुण्य कर्मों का उद्देश्य केवल स्वार्थ नहीं होना चाहिए। पुण्य कर्मों को केवल पुण्य की प्राप्ति के लिए और समाज के भले के लिए करना चाहिए। जब किसी व्यक्ति को पुण्य कर्मों का प्रदर्शन करना होता है तो उसका उद्देश्य केवल दूसरों से प्रशंसा प्राप्त करना होता है जो कि उसकी इच्छा को शुद्ध नहीं बनाता है।
- पुण्य कर्मों का फल तभी मिलता है जब वे निःस्वार्थ भाव से किए जाते हैं। अगर कोई व्यक्ति अपने पुण्य कर्मों का प्रदर्शन करता है तो वह अपने कर्मों के वास्तविक फल से वंचित रहता है। इसलिए हमें अपनी अच्छाई और पुण्य कर्मों को किसी को दिखाने के बजाय उन्हें अपनी आत्मा की शांति और समाज की भलाई के लिए करना चाहिए।
- जीवन में सच्चे ज्ञान, सत्य और पुण्य के मार्ग पर चलने से ही हम शांति, सुख और सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

– संपादक मण्डल/राजभाषा विभाग

राजभाषा हिंदी के विकास के विभिन्न चरण

राजभाषा बनाने का निर्णय

14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा बनाने का संविधान सभा द्वारा निर्णय लिया गया।

संविधान में प्रावधान

26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू हुआ। तदनुसार उसमें किए गए भाषाई प्रावधान अनुच्छेद 120, 210 तथा 343 से 351 के तहत लागू हुए। 1952 में तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय के तहत हिंदी शिक्षण योजना प्रारंभ की गई। हिंदी शिक्षण योजना के अतंर्गत जुलाई, 1952 में हिंदी प्रशिक्षण आरंभ हुआ। 1955 में यह योजना गृह मंत्रालय को सौंपी गयी।

हिंदी दिवस

1953 से 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।

विभिन्न आयोग

संविधान के अनुच्छेद 344 (1) के अंतर्गत) 07 जून, 1955 को बी. जी. खेर की अध्यक्षता में राजभाषा आयोग का गठन किया गया। 31 जुलाई 1956 को खेर आयोग ने अपना प्रतिवेदन राष्ट्रपति को प्रस्तुत किया। सितंबर, 1957 को खेर आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए तत्कालीन गृह मंत्री श्री गोविंद वल्लभ पंत की अध्यक्षता में संसदीय समिति का गठन किया गया। संविधान के अनुच्छेद 344 (1) के अन्तर्गत 8 फरवरी, 1959 को संसदीय समिति द्वारा राष्ट्रपति को अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत।

माननीय राष्ट्रपति के आदेश

संसदीय समिति के प्रतिवेदन पर माननीय राष्ट्रपति ने 27 अप्रैल, 1960 को आदेश जारी किए। संसदीय समिति की रिपोर्ट पर राष्ट्रपति के आदेश जारी किए गए,जिनमें हिन्दी शब्दावलियों का निर्माण, संहिताओं व कार्यविधिक साहित्य का हिंदी अनुवाद, कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण, हिंदी प्रचार, विधेयकों की भाषा, उच्चतम न्यायालय व उच्च न्यायालयों की भाषा से संबंधित आदि विषय शामिल थे।

हिंदी प्रशिक्षण

1960 में हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण आरंभ हुआ। 1974 से उपक्रमों के लिए भी हिंदी प्रशिक्षण अनिवार्य किया गया।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय तथा वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन

1960 में शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत केंद्रीय हिंदी निदेशालय का और वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन किया गया।

राजभाषा अधिनियम 1963

10 मई, 1963- संविधान के अनुच्छेद 343 (3) के प्रावधान को ध्यान में रखते हुए राजभाषा अधिनियम, 1963 बनाया गया। इसके अनुसार हिन्दी संघ की राजभाषा व अंग्रेजी सह-राजभाषा के रूप में प्रयोग में लाई गई।

केन्द्रीय हिन्दी समिति का गठन

1967 में प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में केन्द्रीय हिन्दी समिति का गठन किया गया। यह समिति सरकार की राजभाषा नीति के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश देने वाली सर्वोच्च समिति है। इस समिति में प्रधानमंत्री जी के अलावा नामित केन्द्रीय मंत्री, कुछ राज्यों के मुख्यमंत्री, सांसद तथा हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के विद्वान सदस्य के रूप में शामिल किए जाते हैं।

राजभाषा संकल्प

1968 में भारत की संसद के दोनों सदनों द्वारा राजभाषा संकल्प पारित किया गया जिसमें हिन्दी के राजकीय प्रयोजनों हेतु उत्तरोत्तर प्रयोग के लिए अधिक गहन और व्यापक कार्यक्रम

मैदान में हारा हुआ व्यक्ति दोबारा जीत सकता है परंतु मन से हारा हुआ कभी नहीं जीत सकता है।

तैयार करने, प्रगति की समीक्षा के लिए वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार करने, हिन्दी के साथ-साथ 8वीं अनुसूची की अन्य भाषाओं के समन्वित विकास के लिए कार्यक्रम तैयार करने, त्रिभाषा सूत्र अपनाए जाने, संघ सेवाओं के लिए भर्ती के समय हिन्दी व अंग्रेजी में से किसी एक के ज्ञान की आवश्यकता अपेक्षित होने तथा संघ लोक सेवा आयोग द्वारा उचित समय पर परीक्षा के लिए संविधान की 8वीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखने की बात कही गई है। यह संकल्प 18.1.1968 को अधिसूचित हुआ था।

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो

केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों तथा उपक्रमों, बैंकों आदि के मैनुअलों, कोडों, प्रपत्रों तथा अन्य विविध असांविधिक साहित्य के अनुवाद के लिए गृह मंत्रालय के अधीन केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की 01 मार्च, 1971 को स्थापना की गई। तब से केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो लगातार यह कार्य कर रहा है। उपर्युक्त सामग्री के साथ-साथ केंद्र सरकार द्वारा समय-समय पर गठित विविध आयोगों, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति/जनजाति आयोग, वेतन आयोग, जैन आयोग आदि विभिन्न आयोगों की रिपोर्टों का अनुवाद कार्य भी ब्यूरो को सौंपा जाता है।

राजभाषा विभाग की स्थापना

राजभाषा विभाग की 1975 में स्थापना की गई। राजभाषा संबंधी सांविधानिक और कानूनी उपबंधों का अनुपालन सुनिश्चित करने और संघ के सरकारी काम काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत सरकार के विभागों में एवं कार्यालयों में राजभाषा विभाग की स्थापना की जाती है। यह विभाग संघ के सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रगामी प्रयोग बढ़ाने के लिए सदैव तत्पर रहता है। भारत सरकार, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी आदेशों के अनुसार सरकार के किसी विभाग एवं कार्यालय में स्थापित राजभाषा विभाग के लिए निम्नलिखित कार्य करने अपेक्षित हैं-

1. संविधान में राजभाषा से संबंधित उपबंधों तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) के उपबंधों का संबंधित विभाग एवं कार्यालय में कार्यान्वयन।
2. संबंधित विभाग एवं कार्यालय में प्रयुक्त किए जा रहे विभिन्न दस्तावेजों, पत्रों एवं परिपत्रों आदि का अनुवाद का कार्य।
3. केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए हिंदी शिक्षण योजना और पत्र-पत्रिकाओं और उससे संबंधित अन्य साहित्य के प्रकाशन सहित संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित मामलों का उत्तरदायित्व।
4. संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित सभी मामलों में समन्वय, जिनमें प्रशासनिक शब्दावली, पाठ्य विवरण, पाठ्य पुस्तकें, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम और उनके लिए अपेक्षित उपस्कर (मानकीकृत लिपि सहित) शामिल हैं।
5. विभिन्न विभागों/कार्यालयों का राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण और निरीक्षण में पाई गई कमियों को दूर करने के लिए सहयोग प्रदान करना।
6. भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार संबंधित विभाग एवं कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को बढ़ाने के लिए मुख्यालय, गृह मंत्रालय, संसदीय राजभाषा समिति, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो एवं अन्य विभागों से पत्राचार करना।
7. विभिन्न मंत्रालयों/विभागों द्वारा स्थापित हिंदी सलाहकार समितियों से संबंधित कार्य।
8. केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो से संबंधित मामले ।
9. हिंदी शिक्षण योजना सहित केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान से संबंधित मामले।
10. क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों से संबंधित मामले ।
11. संसदीय राजभाषा समिति से संबंधित मामले।

संसदीय राजभाषा समिति का गठन

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4(1) के तहत संसदीय राजभाषा समिति का वर्ष 1976 में गठन किया गया था। इस समिति में लोक सभा के 20 तथा राज्य सभा 10 सदस्य होते हैं। यह एक उच्चाधिकार प्राप्त संसदीय समिति है। माननीय गृह मंत्री जी इस समिति के अध्यक्ष हैं। अधिनियम की धारा-4 के संगत उद्धरण इस प्रकार हैं:-

(1) जिस तिथि को धारा प्रवृत होती है उससे दस वर्ष की समाप्ति के पश्चात् राजभाषा के संबंध में एक समिति इस विषय का संकल्प संसद के किसी भी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी से प्रस्तावित और दोनों सदनों द्वारा पारित किए जाने पर गठित की जाएगी।

(2) इस समिति में तीस सदस्य होंगे जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे तथा दस राज्य सभा के सदस्य होंगे, जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों तथा राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

(3) इस समिति का कर्त्तव्य होगा कि वह यह संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन करे और उस पर सिफारिशें करते हुए राष्ट्रपति को प्रतिवेदन करे और राष्ट्रपति प्रतिवेदन को संसद के हर एक सदन के समक्ष रखवाएगा और सभी राज्य सरकारों को भिजवाएगा।

(4) राष्ट्रपति उप धारा-3 में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर और उस पर राज्य सरकारों ने यदि कोई मत अभिव्यक्त किएहों तो उन पर विचार करने के पश्चात् उस समस्त प्रतिवेदन या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश निकाल सकेगापरन्तु इस प्रकार निकाले गए निदेश धारा-3 के उपबंधों से असंगत नहीं होंगे।

राजभाषा नीति के विभिन्न पहलुओं की विस्तार से समीक्षा की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए समिति ने अपना प्रतिवेदन खण्डों में प्रस्तुत करने का निश्चय किया था। केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में अनुवाद व्यवस्था, हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण तथा उपयोग, अनुवाद कार्य के लिए सक्षम उपयुक्त अधिकारियों की नियुक्ति और उनका प्रशिक्षण तथा पुनश्चर्या पाठ्यक्रम, विकसित देशों की भाषाओं में नित नए उपलब्ध होने वाले अद्यतन ज्ञान-विज्ञान के हिंदी में सीधे अनुवाद की व्यवस्था, भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों और उपक्रमों आदि के कोड, मैनुअलों, फार्मों और प्रक्रिया साहित्य तथा प्रशिक्षण साहित्य के हिंदी अनुवाद के बारे में समिति के प्रतिवेदन का पहला खण्ड राष्ट्रपति जी को जनवरी, 1987 में प्रस्तुत किया गया था। कार्यालयीन कामकाज में यांत्रिक उपकरणों की आवश्यकता और उपयोगिता तथा उनमें देवनागरी लिपि में कार्य करने की व्यवस्था, उन पर कार्यरत कार्मिक शक्ति की उपलब्धता तथा प्रशिक्षण और विभिन्न उपकरणों के सम्बन्ध में उत्पादन एवं संभरण व्यवस्था आदि सम्बन्धी दूसरा खण्ड माननीय राष्ट्रपति जी को जुलाई, 1987 में प्रस्तुत किया गया। समिति के प्रतिवेदन का तीसरा खण्ड, जो कि केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के हिंदी शिक्षण और उनके हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण, हिंदी शिक्षण का कार्य कर रहीं स्वयं सेवी संस्थाओं को दिए जाने वाले अनुदान तथा प्रोत्साहन, हिंदी शिक्षण के लिए पत्राचार पाठ्यक्रम, आकाशवाणी/दूरदर्शन द्वारा हिंदी पाठों का प्रसारण, देश के सभी भागों में शिक्षा संस्थानों में हिंदी पढ़ाने की सुविधाएं, त्रिभाषा सूत्र का कार्यान्वयन, भर्ती के लिए साक्षात्कार में हिंदी का विकल्प, कृषि, इंजीनियरी तथा आयुर्विज्ञान की भर्ती व प्रवेश परीक्षाओं में हिंदी माध्यम का विकल्प आदि विषयों से संबंधित है माननीय राष्ट्रपति जी को फरवरी, 1989 में प्रस्तुत किया गया।

प्रतिवेदन का चौथा खण्ड माननीय राष्ट्रपति जी को नवम्बर, 1989 में प्रस्तुत किया गया जो कि समिति को उपसमितियों द्वारा किए गए निरीक्षण के आधार पर देश के विभिन्न भागों में सरकारी कार्यालयों और उपक्रमों आदि में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की स्थिति से संबंधित है। विधायन की भाषा तथा विभिन्न न्यायालयों और न्यायाधिकरणों में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा से संबंधित प्रतिवेदन का पांचवा खंड माननीय राष्ट्रपति जी को मार्च, 1992 में प्रस्तुत किया गया। प्रतिवेदन का छठा खंड नवम्बर, 1997 में माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत किया गया, जो कि सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग, संघ तथा राज्य सरकारों के बीच और संघ तथा राज्य क्षेत्रों के बीच पत्राचार में हिंदी के प्रयोग और राज्यों व संघराज्य क्षेत्रों के परस्पर पत्र व्यवहार में उनकी राजभाषाओं के प्रयोग व विदेशों में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग से संबंधित है। भारतीय संविधान के अनुसार राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने के लिए संसदीय राजभाषा समिति अब तक 12 खंड माननीय राष्ट्रपति जी को सौंप चुकी है और 09 प्रतिवेदनों पर माननीय राष्ट्रपति अपने आदेश जारी कर चुके हैं ।

राजभाषा नियम 1976

संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग 1976 में राजभाषा नियम, 1976 बनाए गए, बाद में इन नियमों में को 1987, 2007 तथा 2011 में संशोधित किया गया।

संयुक्त राष्ट्र की आम सभा

श्री अटल बिहारी वाजपेयी, तत्कालीन विदेश मंत्री ने पहली बार 1977 में संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित किया।

केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग का गठन

विभिन्न मंत्रालयों/विभागों और संबद्ध कार्यालयों में सृजित हिंदी पदों को एकीकृत संवर्ग में लाने तथा उनके पदाधिकारियों को समान सेवा शर्तें, वेतनमान और पदोन्नति के अवसर प्रदान करने हेतु केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग का वर्ष 1981 में गठन किया।

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

अधिकारियों/ कर्मचारियों को हिन्दी भाषा, हिन्दी टंकण और हिन्दी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध कराने के लिए राजभाषा विभाग के अंतर्गत केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान का 31 अगस्त,1985 में गठन किया गया। 1990 में केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा पत्राचार माध्यम से हिंदी भाषा का प्रशिक्षण आरंभ किया गया। 2015 में केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा हिंदी भाषा पारंगत प्रशिक्षण कार्यक्रम को शुरू किया गया।

अनुवाद टूल कंठस्थ

राजभाषा विभाग द्वारा 2018 में विभिन्न प्रकार के अनुवाद के लिए स्मृति आधारित साफ्टवेयर अनुवाद टूल कंठस्थ 1.0 का लोकार्पण किया गया। 14 सितंबर, 2022 को राजभाषा विभाग द्वारा कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण किया गया और फरवरी, 2023 को राजभाषा विभाग द्वारा कंठस्थ 2.0 के मोबाइल ऐप का लोकार्पण किया। उल्लेखनीय है कि ट्रांसलेशन मेमोरी (टी.एम.) मशीन साधित अनुवाद प्रणाली जिससे अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। ट्रांसलेशन मेमोरी वस्तुतः एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत भाषा के वाक्यों एवं लक्षित भाषा में उन वाक्यों के अनुवादित रूप को एक-साथ रखा जाता है। ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुनः-प्रयोग कर सकता है। यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य टी.एम. के डेटाबेस से पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से मिलता है तो यह सिस्टम उस वाक्य के अनुवाद को टी.एम. से लाता है।

ट्रांसलेशन मेमोरी डेटाबेस बनाने के लिए स्रोत भाषा के वाक्यों एवं लक्षित भाषा में उनके अनुवादित वाक्यों का विश्लेषण किया जाता है। अनुवाद के लिए सिस्टम का निरंतर प्रयोग करते रहने से टी.एम. का डेटाबेस उतरोत्तर बढ़ता रहता है।टी.एम. का डेटाबेस दो प्रकार का होता है, ग्लोबल ट्रांसलेशन में मेमोरी (जी.टी.एम.) तथा लोकल ट्रांसलेशन मेमोरी (एल.टी.एम.)। एल.टी.एम. प्रत्येक अनुवादक के

कम्प्यूटर पर भिन्न होती है जबकि जी.टी.एम. एक सामूहिक डेटाबेस है जोकि राजभाषा विभाग के सर्वर पर उपलब्ध है। परीक्षण के पश्चात् विभिन्न एल.टी.एम. जी.टी.एम. का भाग बन जाती हैं।

ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित यह सिस्टम भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग के लिए विकसित किया गया है।ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम को अन्य मंत्रालयों को भी उपलब्ध कराया जाएगा। इस सिस्टम के माध्यम से अंग्रेजी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद संभव है।

भारत की नई शिक्षा नीति

भारत की नई शिक्षा नीति, 2020 में मातृभाषाओं और हिन्दी को विशेष महत्व देने की अनुसंशा की गई।

आधिकारिक भाषाएं

सितंबर 2020 को संसद ने मौजूदा उर्दू और अंग्रेजी के अलावा, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए एक विधेयक पारित किया।

– संपादक मण्डल

हिंदी बोले जाने और लिखे जाने के आधार पर देश के राज्यों /संघ राज्य क्षेत्रों को 'क', ख' और 'ग' के रूप में निम्नानुसार तीन क्षेत्रों में चिह्नित किया गया है-

क्षेत्र	क्षेत्र में शामिल राज्य/संघ राज्य क्षेत्र
'क'	बिहार, छत्तीसगढ, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र।
'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन व दीव और दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।
'ग'	'क' और 'ख' क्षेत्र में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र।

फ़ाइल पर लिखी जाने वाली कुछ टिप्पणियाँ

	हिंदी	अंग्रेजी
1.	मैं सहमत हूँ।	I agree.
2.	मैं असहमत हूँ।	I disagree.
3.	कृपया मुझसे मिले।	Please see me.
4.	कृपया चर्चा करें।	Please discuss.
5.	स्वीकृत।	Accepted.
6.	मंजूर।	Sanctioned.
7.	छुट्टी स्वीकृत।	Leave granted.
8.	अनुमोदित।	Approved.
9.	शीघ्र कार्रवाई करें।	Expedite action.
10.	सहमति दी जाए।	May be permitted.
11.	सभी संबंधित व्यक्ति नोट करें।	All concerned to note.
12.	समुचित कार्रवाई की जाए।	Appropriate action may be taken.
13.	विलम्ब को माफ नहीं किया जा सकता।	Delay cannot be waived.
14.	विलम्ब न किया जाए।	Delay should be avoided.
15.	विचार आमंत्रित किए जाएं।	Comments may be called for.
16.	की सहमति प्राप्त की जाए।	Concurrence of....may be obtained.
17.	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए।	Action may be taken as proposed.
18.	मामले का सार प्रस्तुत किया जाए।	Summary of the case may be put up.
19.	विभागाध्यक्ष की सहमति के अनुसार मंजूर।	Sanctioned as concurrence by HoD
20.	देखकर वापस किया, धन्यवाद।	Seen and returned, thanks,
21.	उत्तर आज ही/शीघ्र/तत्काल/अविलम्ब भेजें।	Reply today/early/immediately/without delay.
22.	कृपया सभी अधिकारियों को परिपत्रित किया जाए।	Please circulate among all the officers.
23.	पृष्ठ सं.....पर दिए गए तथ्य देखे जाएं।	Facts given at page no... may be seen.
24.	मामले के तथ्य प्रस्तुत किए जाएं/सूचित किए जाएं।	Facts of the case may be put up/intimated..
25.	विलम्ब के कारण बताए जाएं।	Delay may be explained.
26.	उदार दृष्टिकोण अपनाया जाए।	Lenient view may be taken.
27.	कार्यवृत्त तैयार किया जाए।	Minutes may be drawn.
28.	सहमति दी जाए।	May be permitted
29.	उसे/उन्हें तदनुसार सूचित किया जाए।	He/They may be informed accordingly.
30.	अंतरिम उत्तर भेजा जाना चाहिए।	Interim reply should be sent.
31.	आदेशों का अनुपालन किया जाए।	Orders may be complied with.
32.	पर्यवेक्षण को ध्यान में रखते हुए प्रस्ताव का परीक्षण करें।	Examine the proposal in the light of observation.
33.	कार्यालय ध्यानपूर्वक नोट करे।	Office may note carefully.
34.	अनिर्णीत मामले शीघ्र निपटाए जाएं।	Pending cases be disposed of early.

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विभिन्न विभूतियों द्वारा व्यक्त विचार

(1) भारतीय भाषाएं नदियां है और हिंदी महानदी.. **गुरुदेव टैगोर**

(2) हिंदी द्वारा समस्त भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है..**स्वामी दयानंद सरस्वती**

(3) हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है ....**मौलाना हसरत मोहानी**

(4) राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है.....................**महात्मा गांधी**

(5) समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है..**जस्टिस कृष्ण स्वामी अय्यर**

(6) प्रांतीय ईर्ष्या को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती .... **नेताजी सुभाषचंद्र बोस**

(7) हिंदी अब सारे देश की राष्ट्रभाषा हो गई है। उस भाषा का अध्ययन करने और उसकी उन्नति करने में गर्व का अनुभव होना चाहिए। राष्ट्रभाषा किसी व्यक्ति या प्रांत की सम्पत्ति नहीं है इस पर सारे देश का अधिकार है.. **सरदार वल्लभभाई पटेल**

(8) मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि हम अपनी सारी मानसिक शक्ति हिंदी भाषा के अध्ययन में लगाएं ...... **आचार्य विनोबा भावे**

(9) मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि हिंदी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता....................**बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय**

(10) हिंदी भारत की जनता के बहुत बड़े वर्ग की और यदि हम छोटे-मोटे बोलीगत रूप भेदों को छोड़ दें तो बहुमत की भाषा है। वास्तव में यह उसी प्रकार भारत की राष्ट्रीय भाषा होने का दावा कर सकती है जिस प्रकार से हिंदू धर्म भारत का राष्ट्रीय धर्म है................................ **चक्रवर्ती राजगोपालाचारी**

(11) भारत के सभी भागों में सारी शिक्षा का एक उद्देश्य हिंदी का पूर्ण ज्ञान भी होना चाहिए। हिंदी का भारत की राष्ट्रभाषा होना निश्चित है। संचार व्यवस्था और वाणिज्य की प्रगति निश्चय ही यह कार्य संपन्न करेगी .... **चक्रवर्ती राजगोपालाचारी**

(12) हिंदी ही एक भाषा है जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है ....**डॉ. ग्रियर्सन**

(13) हिंदी भारतवर्ष की सामान्य भाषा होनी चाहिए... **नरसिंह चिंतामणी केलकर**

(14) भिन्न प्रदेशों की एक सामान्य भाषा बनने का सम्मान हिंदी को ही मिलना चाहिए..................... **डॉ.रामकृष्ण भंडारकर**

(15) मुझे पूर्ण विश्वास है कि चाहे इस समय, इस संबंध में कैसा ही वाद विवाद या विरोध क्यों न चल रहा हो एक न एक दिन भारतवर्ष में राष्ट्रीयता अपने आप को दृढ़तापूर्वक अभिव्यक्त करेगी और देश के लिए एक राजभाषा की मांग होगी। वह राजभाषा हिंदी के अतिरिक्त कोई और भाषा नहीं हो सकती.....**डॉ. हरेकृष्ण मेहताब**

(16) यदि हिंदी को भारतवर्ष के लिए राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाए तब हमें अंग्रेजी सीखने की आवश्यकता का अनुभव नहीं करना चाहिए .... **महाराज सयाजी राव गायकवाड़**

- संपादक मण्डल

राजभाषा के प्रयोग के लिए 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम

हिंदी में मूल पत्राचार।	**क क्षेत्र**	**ख क्षेत्र**	**ग क्षेत्र**
	क से क क्षेत्र को 100%	**ख से क क्षेत्र को 90%**	**ग से क क्षेत्र को 60%**
	क से ख क्षेत्र को 100%	**ख से ख क्षेत्र को 90%**	**ग से ख क्षेत्र को 60%**
	क से ग क्षेत्र को 70%	**ख से ग क्षेत्र को 60%**	**ग से ग क्षेत्र को 60%**
	क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को 100%	**ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को 90%**	**ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को 60%**
हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में देना।	100%	100%	100%
हिंदी में टिप्पण।	80%	55%	35%
हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण।	75%	65%	35%
हिंदी टंकक एवं आशुलिपिक की भर्ती।	80%	70%	45%
हिंदी में डिक्टेशन।	70%	60%	35%
हिंदी में प्रशिक्षण।	100%	100%	100%
पुस्तकालयों के लिए कुल अनुदान में से हिंदी पुस्तकों पर खर्च करना।	50%	50%	50%
हिंदी में प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना।	100%	100%	100%
कंप्यूटर सहित सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी खरीद।	100%	100%	100%
वेबसाइट की द्विभाषिकता।	100%	100%	100%
नागरिक चार्टर तथा जनसूचना बोर्डों में हिंदी का प्रयोग।	100%	100%	100%
राजभाषा निरीक्षण।	30% न्यूनतम	30% न्यूनतम	30% न्यूनतम
कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद।	100%	100%	100%
कार्यालय के ऐसे अनुभाग जहां सम्पूर्ण कार्य हिंदी में हो।	45% न्यूनतम	35% न्यूनतम	25% न्यूनतम
राजभाषा बैठकें।	(क) हिंदी सलाहकार समिति की बैठकें	वर्ष में दो बैठकें	
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में दो बैठकें	
	(ग) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें	

राजभाषा को लागू करने के प्रमुख बिंदु

1 मूल पत्राचार (ई-मेल, आरेख एवं फैक्स आदि सहित) हिंदी में करना अनिवार्य है।

2. हिंदी में प्राप्त पत्र का उत्तर 100 प्रतिशत हिंदी में दिया जाए।

3. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के तहत सभी सामान्य आदेश, निविदा, सूचना, परिपत्र, करार, प्रशासनिक रिपोर्ट, संसद को प्रस्तुत की जाने वाली रिपोर्ट आदि द्विभाषी जारी किए जाएं।

4. सभी प्रकार की लेखन सामग्री, सूचना, पट्ट प्रपत्र, मोहरें, निमंत्रण पत्र, संकेत बोर्ड, कार्यकाल पट्ट, नाम पट्ट/ सूचना बोर्ड, आदि द्विभाषी/त्रिभाषी (स्थानीय भाषा, हिंदी, अंग्रेजी) क्रमानुसार बनवाए जाएं।

5. कार्यालय/विभाग में प्रयुक्त किए जा रहे सभी कंप्यूटरों में हिंदी का 'यूनिकोड फॉन्ट इनेबल किया जाए।

6. सभी विभागीय एवं पदोन्नति परीक्षाओं में सभी प्रश्न-पत्र द्विभाषी (हिंदी एवं अंग्रेजी) उपलब्ध कराए जाएं।

7. रजिस्टरों तथा फाइलों के विषय हिंदी में भी लिखे जाएं तथा फाइलों पर अधिकाधिक टिप्पणियों और रजिस्टरों में प्रविष्टियाँ हिंदी में लिखी जाएं।

8. सभी प्रकार के निरीक्षणों में राजभाषा कार्यान्वयन प्रगति की चर्चा की जाए और निरीक्षण रपट में उसका उल्लेख किया जाए।

9. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में नियमित रूप से भाग लिया जाए ।

10. अंग्रेजी में लिखे गए पत्र पर यदि हस्ताक्षर हिंदी में हों तो उसका उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में दिया जाए।

11. क और ख: क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों/विभागों से यदि पत्र अंग्रेजी में प्राप्त होता है तो भी उसका उत्तर हिंदी में दिया जाए।

राजभाषा विभाग की साइट:
www.rajbhasha.gov.in

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ॥

चाह नहीं, सम्राटों के शव पर, हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ॥

मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ में देना तुम फेंक॥

मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने।
जिस पथ जावें वीर अनेक॥

– माखन लाल चतुर्वेदी